# ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

॥ हरिः ओम् ॥

# VEDA MANTRA

Collection of Mantras
as taught by

## Shri M K Sivan

[Disciple of Guruji Shri S S Iyer, Arunalaya, Dombivli (East)]

At

Lakshmi Sabha Gruha
GMES High School Stilt
Vile Parle (East)

***********

*Compiled By Shri N K Venkitaraman.*

***********

[ For a free copy of printable PDF file write to nkv.nvr@gmail.com]

(All texts have been carefully proof-read. Every effort has been made to ensure that no errors exist in these texts. If you find an error, please report it so that it can be corrected.)

BOOK –1

UDAGASHANTI & SHANTI JAPAM

| SR NO | DETAILS | PAGE |
|---|---|---|
| 1 | SUDARSHANA MANTRAM | 5 |
| 2 | GANAPATHI PRARTHANA | 5 |
| 3 | SARASWATHI PRARTHANA | 5 |
| 4 | GANPATYATHARVA SHERSHAM | 6 |
| 5 | VARUNA JAPAM | 9 |
| 6 | UDAKASHANTI | 16 |
| 7 | Vedadaya | 17 |
| 8 | Krunushva Paaja | 17 |
| 9 | Raashtrbrutham | 22 |
| 10 | Panchachoda | 25 |
| 11 | Aprathiratham | 26 |
| 12 | Vihavyam | 28 |
| 13 | Mrugaram | 29 |
| 14 | Sarpaahuti | 31 |
| 15 | Gandharvaahuti | 32 |
| 16 | Agyaani | 33 |
| 17 | Atharvashirasam | 34 |
| 18 | Pratyangirasam | 34 |
| 19 | Nakshatravaakyam | 44 |
| 20 | Swahakaram | 53 |
| 21 | Pavamanam | 58 |
| 22 | Prokshana Mantram | 60 |
| 23 | SHANTIJAPAM | 62 |
| 24 | Vedadaya | 63 |
| 25 | Rakshognam | 63 |
| 26 | Aapyaa | 65 |
| 27 | Pavamana Sooktam | 66 |
| 28 | Vaastoshpada Mantram | 68 |
| 29 | Varuna Sooktam | 68 |
| 30 | Brahma Sooktam | 69 |
| 31 | Vishnu Sooktam | 69 |
| 32 | Rudra Sooktam | 70 |
| 33 | Durga Sooktam | 71 |
| 34 | Shree Sooktam | 72 |
| 35 | Bhoo Sooktam | 73 |
| 36 | Bhagya Sooktam | 74 |
| 37 | Mrityu Sooktam | 75 |
| 38 | Aayushya Sooktam | 79 |
| 39 | Navagruha Sooktam | 80 |
| 40 | Dikhpaalaka | 82 |
| | | |

| SR NO | DETAILS | PAGE |
|---|---|---|
| 41 | Nakshatra Vaakyam | 83 |
| 42 | Swahaagaram | 89 |
| 43 | Pancha Shanti | 91 |
| 44 | Namakam | 92 |
| 45 | Chamakam | 99 |
| 46 | Purusha Sooktam | 102 |
| 47 | Uttara Narayanam | 103 |
| 48 | Maha Narayanam | 104 |
| 49 | Nachiketam | 105 |
| 50 | Mruta Sanjeevani Sooktam | 112 |
| 51 | Hrichaam Praachi | 113 |
| 52 | Saptakanta 1st Panchati | 115 |
| 53 | Ashtakatraya 1st Panchati | 118 |
| 54 | Ghosha Shanti | 121 |
| 55 | SOOKTAS ( not part of Shanti Japam) | 126 |
| 56 | Oshadi Sooktam | 126 |
| 57 | Medha Sooktam | 128 |
| 58 | Neela Sooktam | 129 |
| 59 | Eikamatya Sooktam | 130 |
| 60 | Saraswati Sooktam | 131 |
| 61 | Sarpa Sooktam | 132 |
| 62 | Swasthi Sooktam | 133 |
| 63 | Deevi Sooktam | 134 |
| 64 | MANTRAPUSHPAM | 135 |
| 65 | JAYAADI HOMAM | 137 |
| 66 | POORNAHUTI | 143 |
| | | |

# ॥ सुदर्शन मंत्रं ॥

ॐ क्लीम् कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय पराय परम् पुरुषाय परमात्मने। पर कर्म मन्त्र तन्त्र यन्त्रौषधास्त्र शस्त्राणि संहर संहरा मृत्त्योर् मोचय मोचया। ॐ नमो भगवते महा सुदर्शनाय दीप्त्रे ज्ज्वाला परीताय सर्व दिक्क्षोभण कराय हुम्फट् ब्रह्मणे परम् ज्योतिषे स्वाहाः॥

॥ श्री गुरुभ्यो नमः। हरिः ओम्। ॥

# ॥ गणपति ध्यानम् ॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमं।
ज्येष्ठराजं ब्रम्हणां ब्रम्हणस्पत आ नः श्रृण्वन्नूतिभिस्सीद सादनं॥

॥ ॐ श्री महागणपतये नमः॥

# ॥ सरस्वति प्रार्थना ॥

प्र णो देवी सरस्वती वाजेभि-र्वाजिनी-वती। धीनाम-वित्र्य -वतु॥

॥ वाग्देव्यै नमः॥

# ॥ गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत् ॥

ॐ भद्रं धदातु ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । भद्रं पश्येमा क्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैः स्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिः । व्यशेम देवहितं यदायुः । स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः ।
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः ।
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ॐ नमस्ते गणपतये । त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि । त्वमेव केवलं कर्तासि ।
त्वमेव केवलं धर्तासि । त्वमेव केवलं हर्तासि । त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि ।
त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् ॥

ऋतं वच्मि । सत्यं वच्मि ॥

अव त्वं माम् । अव वक्तारम् । अव श्रोतारम् । अव दातारम् । अव धातारम् ।
अवानूचानमव शिष्यम् । अव पश्चात्तात् । अव पुरस्तात् । अवोत्तरात्तात् ।
अव दक्षिणात्तात् । अव चोर्ध्वात्तात् । अवाधरात्तात् ।
सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् ॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः । त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः ।
त्वं सच्चिदानन्दा द्वितीयोऽसि । त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि ॥
सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते । सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति ।
सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति । सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति ।
त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः । त्वं चत्वारि वाक्पदानि ॥

त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं अवस्थात्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः।

त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः।

त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्व-मिन्द्रस्त्व-मग्निस्त्वं

वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं-स्तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्।

तारेण ऋद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्।

अनुस्वार श्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः।

सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः। गणपति-र्देवता।

ॐ गं गणपतये नमः॥

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्॥

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्। रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्।

रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।

भक्तानु कम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।

एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः॥

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदराय एकदन्ताय

विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः॥

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नै र्न बाध्यते।

स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापापात् प्रमुच्यते।

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति।

सायं प्रातः प्रयुञ्जानो पापोऽपापो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति।

इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद् दास्यति। स पापीयान् भवति।

सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते। तं तमनेन साधयेत्॥

अनेन गणपतिमभिषिञ्चति। स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति।

स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यात्।

नबिभेति कदाचनेति॥

यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति। स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति। स यशोवान् भवति।

स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति। स वाञ्छित फलमवाप्नोति।

यः साज्य समिद्भिर्यजति। स सर्वं लभते स सर्वं लभते॥

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा। सूर्यवर्चस्वी भवति।

सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा। सिद्धमन्त्रो भवति।

महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते।

महापापात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति। य एवं वेद। इत्युपनिषत्॥

सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।

तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ भद्रं धदातु॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

## ॥ वरुण जपम् ॥

इमं मे वरुण श्रुधी हव मध्याच मृडय त्वामव स्युराचके

तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमान स्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश॰ समान आयुः प्रमोषीः ॥

अस्मिन् कुंभे वरुणं ध्यायामि वरुणं आवाहयामि । वरुणाय नमः।

रत्न सिंहासनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनियं समर्पयामि। मधु पर्कं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरं आचमनियं समर्पयामि। वस्तोतरियं समर्पयामि।

उपवीतं समर्पयामि। गन्धान् धारयामि। गन्धस्योऽपरि अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि पूजयामि।

ओं वरुणाय नमः। ओं प्रचेतसे नमः। ओं सुरूपिणे नमः।

ओं अपां पत्ये नमः। ओं मकर वाहनाय नमः। ओं जलाधिपतये नमः।

ओं पाशहस्ताय नमः। ओं अनर्कमणि भूषणाय नमः।

ओं वरुणाय नमः। नानाविध परिमळ पुष्पाणि समर्पयामि।

धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि।

धूप दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं -

ओं भूः भुवः स्सुवः । ओं तथ्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

देव सवितः प्रसुव । सत्यं त्वर्तेन परिषिंचामि ।

अमृतोपस्तरणमसि । ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा ।

ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ।

वरुणाय नमः। कदळीफलं महा नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि।

आचमनियं समर्पयामि। ताम्बूलं समर्पयामि। मन्त्र पुष्पम् समर्पयामि।

सुवर्ण पुष्पम् समर्पयामि। समस्तोपचारान् समर्पयामि।

सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । पुण्याहजपकर्म कुरुध्वम् ॥

कुंभं स्पृष्ट्वा ।

| ब्राह्मणान् प्रतिप्रश्नः | ब्राह्मण प्रतिवचनम्ः |
|---|---|
| ओं भवद्भिः अनुज्ञातः पुण्याहं वाचयिष्ये | ओं वाच्यताम् |
| ओं कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु | ओं पुण्याहं कर्मणोऽस्तु |
| ओं कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु | ओं स्वस्ति कर्मणोऽस्तु |
| ओं रुद्रैकादशिनाख्य महाप्रायश्चित्त ) | (ओं रुद्रैकादशिनाख्य |
| कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ) | (महाप्रायश्चित्त कर्मणे स्वस्ति |
| ओं सर्वोपकरण शुद्धि कर्मणे स्वस्ति ) | ओं सर्वोपकरण शुद्धि कर्मणे स्वस्ति |
| भवन्तो ब्रुवन्तु ) | |
| ओं कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु | ओं कर्म ऋद्ध्यतां |
| ओं ऋद्धिः समृद्धिः पुण्याह समृद्धिः शिवं कर्म | अस्तु |
| ओं आदित्यात्मक श्रीरुद्रः प्रियताम् | प्रियताम् भगवान् आदित्यात्मक श्रीरुद्रः |

(ततः कुंबस्य उत्तरतः अन्यस्मिन् पात्रे कूर्चेन कुंभात् उतकं आसिञ्चति )

शान्तिः अस्तु । पुष्टिः असतु। तुष्टिः असतु। ऋद्धिः असतु। अविघ्नमस्तु ।

आयुष्यमस्तु । आरोग्यमस्तु । धनधान्य समृद्धिरस्तु। गोब्राह्मणेभ्यः शुभं भवतु ।

बहिर् देशे अरिष्ट निरसनम् असतु । उत्तरे कर्मणि अविघ्नमस्तु।

उत्तरोत्तराभि वृद्धिः असतु । सर्व शोभनम् असतु । सर्वाः संपदः असतु ।

(पात्रोत्सिक्तं उदकं कुंभे निनीय । कुंभं स्पृष्ट्वा । जपं कुर्यात् । )

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

दधिक्रावृष्णो अकारिषम् । जिष्णोरश्वस्य वाजिनः । सुरभिनो मुखाकरत् ।

प्रणआयूꣳषितारिषत् । आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय

चक्षसे॥ योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः। उशतीरिव मातरः॥

तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥

**पवमान सूक्त जपं कुर्यात् :**

हिरण्यवर्णाः श्शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यास्विन्द्रः।

अग्निं या गर्भम् दधिरे विरूपास्तान आपश्शꣳ स्योना भवन्तु॥

यासाꣳ राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यम् जनानाम्।

मधुश्चुतश्शुचयो याः पावकास्ता न आपश्शꣳ स्योना भवन्तु॥

यासाम् देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति।

याः पृथिवीम् पयसोन्दन्ति शुक्रास्ता न आपश्शꣳ स्योना भवन्तु॥

शिवेन मा चक्षुषा पश्यताप श्शिवया तनुवोप स्पृशत त्वचम् मे।

सर्वाꣳ अग्नीꣳ रप्सुषदो हुवो वो मयि वर्चो बलमोजो निधत्त॥

पवमानस्सुवर्जनः। पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा।

पुनन्तु मा देवजनाः। पुनन्तु मनवो धिया। पुनन्तु विश्व आयवः।

जातवेदः पवित्रवत्। पवित्रेण पुनाहि मा। शुक्रेण देवदीद्यत्।

अग्ने क्रत्वा क्रतूꣳ रनु। यत्ते पवित्रमर्चिषि। अग्ने विततमन्तरा।

ब्रह्म तेन पुनीमहे। उभाभ्यां देवसवितः। पवित्रेण सवेन च।

इदं ब्रह्म पुनीमहे। वैश्वदेवी पुनती देव्यागात्। यस्यै बह्वीस्तनुवो वीतपृष्ठाः।

तया मदन्तः सधमाद्येषु। वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम्।

वैश्वानरो रश्मिभिर्मा पुनातु। वातः प्राणेनेषिरो मयो भूः।

ध्यावापृथिवी पयसा पयोभिः। ऋतावरी यज्ञिये मा पुनीताम्।

बृहद्भिः सवितस्तृभिः। वर्‌षिष्ठैर्देवमन्मभिः। अग्ने दक्षैः पुनाहि मा।

येन देवा अपुनत। येनापो दिव्यंकशः। तेन दिव्येन ब्रह्मणा।

इदं ब्रम्ह पुनीमहे। यः पावमानीरध्येति। ऋषिभिस्सम्भृतꣳ रसम्।

सर्वꣳ स पूतमश्नाति। स्वदितम् मातरश्विना। पावमानीर्यो अध्येति।

ऋषिभिस्सम्भृतꣳ रसम्। तस्मै सरस्वती दुहे। क्षीरꣳ सर्पिर्मधूदकम्।

पावमानीस्स्वस्तयनीः। सुदुघाहि पयस्वतीः। ऋषिभिस्सम्भृतो रसः।

ब्राह्मणेष्वमृतꣳ हितम्। पावमानीर्दिशन्तु नः। इमं लोकमथो अमुम्।

कामान्थ्समर्धयन्तु नः। देवीर्देवैः समाभृताः। पावमानीस्स्वस्त्ययनीः।

सुदुघाहि घृतश्चुतः। ऋषिभिस्संभृतो रसः। ब्राह्मणेष्वमृतꣳ हितम्।

येन देवाः पवित्रेण। आत्मानं पुनते सदा। तेन सहस्रधारेण।

पावमान्यः पुनन्तु मा। प्राजापत्यम् पवित्रम्। शतोध्यामꣳ हिरण्मयम्।

तेन ब्रह्म विदो वयम्। पूतं ब्रह्म पुनीमहे। इन्द्रस्सुनीती सहमा पुनातु।

सोमस्स्वस्त्या वरुण स्समीच्या। यमो रजा प्रमृणाभिः पुनातु मा।

जातवेदा मोर्जयन्त्या पुनातु। भूर्भुवस्सुवः।

तच्छं योरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय। गातुं यज्ञपतये।

दैवीस्स्वस्तिरस्तुनः । स्वस्तिर्मानुषेभ्यः । ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् ।

शन्नो अस्तु द्विपदे । शं चतुष्पदे ।

ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ।

नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः ।

नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते करोमि ॥

ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ।

**वास्तोष्पत मंत्रं जपं कुर्यात् :**

वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः ।

यत्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्न एधि द्विपदे शं चतुष्पदे ।

वास्तोष्पते शग्मया सꣳसदाते सक्षीम-हिरण्वया गतुमत्या ।

आवः , क्षेम उत योगे वरन्नो यूयं पात स्वस्तिभि स्सदानः ।

वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गोभिरश्वे भिरिन्दो ।

अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रतिनो जुषस्व ।

अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्या विशन्न् । सखा सुशेव एधिनः ।

शिवꣳ शिवं भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवः ॥

वरुणाय नमः । सकलाराधनै स्वर्चितं ।

तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमान स्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ समान आयुः प्रमोषीः ॥

अस्मात् कुंभात् वरुणं यथास्थानम् प्रतिष्ठापयामि ।

शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनायच ।

**प्रोक्षण मंत्र जपं कुर्यात् :**

आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥

योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः। उशतीरिव मातरः॥

तस्मा अरंगमाम वो यस्यक्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे। अश्विनोर्बाहुभ्याम्। पूष्णो हस्ताभ्याम्।

अश्विनो भैषज्येन। तेजसे ब्रह्मवर्चसाया भिषिञ्चामि॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे। अश्विनोर्बाहुभ्याम्। पूष्णो हस्ताभ्याम्।

सरस्वत्यै भैषज्येन। वीर्याया न्नाद्याया भिषिञ्चामि॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे। अश्विनोर्बाहुभ्याम्। पूष्णो हस्ताभ्याम्।

इन्द्रस्ये-न्द्रियेण। श्रियै यशसे बलाया भिषिञ्चामि॥

सोमᳲ राजानं वरुण मग्नि मन्वार भामहे।

आदित्यान् विष्णुᳲ सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम्।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याᳲ

सरस्वत्यै वाचो यन्तु र्यन्त्रेणा ग्नेस्त्वा साम्राज्येना भिषिञ्चामी

न्द्रस्यत्वा साम्राज्येना भिषिञ्चामि बृहस्पतेस्त्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चामि॥

आयुराशास्ते। सुप्रजास्त्व माशास्ते। सजात वनस्या माशास्ते।

उत्तरां देव यज्या माशास्ते। भूयो हविष्करण माशास्ते। दिव्यं धामाशास्ते।

विश्वं प्रिय माशास्ते। यदनेन हविषाऽऽशास्ते। तदश्या त्तदृ ध्यात्।

तदस्मै देवारा सन्ताम्। तदग्नि र्देवो देवेभ्यो वनते। वय मग्ने र्मानुषाः।

इष्टं च वीतं च। उभे च नो द्यावा पृथिवी अᳲ हसः स्पाताम्।

इह गति र्वामस्येदं च । नमो देवेभ्यः ॥

द्रुपदा दिवे-न्मु मुचानः । स्विन्नः स्नात्वी मलादिव ।

पूतं पवित्रेणे वाज्यम् । आप श्शुन्धन्तु मैनसः ।

भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवः ॥

आपो वा इद१ँ सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दा१ँस्यापो ज्योती१ँष्यापो यजू१ँष्याप स्सत्य मापस्सर्वा देवता आपो भूर्भुवस्सुवराप ओं ॥

**प्राशनं मंत्र जपं कुर्यात् :**

आप इद्वा उपेषजीः । आपो अमी वचादनीः ।

आप सर्वस्य भेषजीः । तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ।

अकाल मृत्यु हरणम् सर्व व्याधि निवारणम्

सर्व पाप क्षयकरम् वरुण पातोतकम् शुभम् ।

आमयावी चिन्वीत । आपो वै भेषजम् ।

भेषजमे वास्मै करोति । सर्व मायुरेति ।

oooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

# ॥ उदकशान्ति मन्त्राः ॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ता द्विसीमतस्सुरुचो वेन आवः ।
सबुध्निया उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः ॥
आपो वा इद\ सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडाप श्छन्दा\स्यापो
ज्योती\ष्यापो यजू\ष्याप स्सत्यमाप स्सर्वा देवता आपो भूर्भुवस्सुवराप ओं ॥
अपः प्रणयति । श्रद्धावा आपः । श्रद्धां एवारभ्य प्रणीय प्रचरति ।
अपः प्रणयति । यज्ञो वा आपः । यज्ञं एवारभ्य प्रणीय प्रचरति ।
अपः प्रणयति । वज्रो वा आपः । वज्रमेव भ्रातृव्येभ्यः प्रहृत्य प्रणीय प्रचरति ।
अपः प्रणयति । आपो वै रक्षोघ्नीः । रक्षसां अपहत्यै ।
अपः प्रणयति । आपो वै देवानां प्रियंधाम । देवानामेव प्रियंधाम प्रणीय प्रचरति ।
अपः प्रणयति । आपो वै सर्वा देवताः । देवता एवारभ्य प्रणीय प्रचरति ।
आपोवैशान्ताः । शान्ताभिरेवास्य शुच\शमयति ॥

देवो वस्सवितोत्पुना त्वच्छिद्रेण पवित्रेण वसोसूर्यस्य रश्मिभिः ।
स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः । तं भागं चित्रमीमहे ॥

ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥
इषेत्वो र्जेत्वा वायवस्थोपायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे ॥
अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सि बर्हिषि ॥
शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥

कृणुष्व पाजः प्रसितिन्न पृथ्वी याहि राजे वामवाꣳ इभेन ।
तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानो ऽस्ताऽसि विध्य-रक्ष सस्तपिष्ठैः ॥
तव भ्रमास आशुया-पतं त्यनु-स्पृश-धृषता शोशुचानः ।
तपूꣳष्यग्ने जुह्वा-पत ङ्गानसन्दितो विसृज विष्वगुल्काः ॥
प्रति-स्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः ।
यो नो दूरे अघशꣳ सोयो अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिरादधर्षीत् ॥
उदग्ने तिष्ठ प्रत्याऽऽतनुष्व न्यमित्राꣳ ओषता त्तिग्महेते ।
यो नो अरातिꣳ समिधान-चक्रे नीचातं-धक्ष्यत संन्न-शुष्कम् ॥
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्या-ध्यस्मदा विष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ।
अव-स्थिरा तनुहि-यातु जूनां जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून् ॥
स ते जानाति सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुमैरत् ।
विश्वान्यस्मै सुदिना निरायो द्युम्नान्यर्यो विदुरो अभि-द्यौत् ॥
सेदग्ने अस्तु सुभगस्सुदानु-र्यस्त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः ।
पिप्रीषति स्व-आयुषि दुरोणे विश्वेदस्मै सुदिना सासदिष्टिः ॥
अर्चामि ते सुमतिं घोष्यर्वाक्-सन्तेवा वाता जरतामियंगीः ।
स्वश्वास्त्वा सुरथा मर्जये मास्मे क्षत्राणि धारये रनुद्यून् ॥
इहत्वा भूर्या चरेदु पत्मन्तोषा वस्तर्दी दिवाꣳसमनु द्यून् ।
क्रीडन्तस्त्वा सुमनस स्सपेमाभि द्युम्ना तस्थिवाꣳ सो जनानाम् ॥
यस्त्वा स्वश्व स्सुहिरण्यो अग्न उपयाति वसुमता रथेन ।
तस्य-त्राता भवसि तस्य-सखा यस्त आतिथ्य मानुषग् जुजोषत् ॥
महो रुजामि बन्धुता वचोभि स्तन्मा पितु-र्गोतमा दन्वियाय ।

त्वन्नो अस्य वचसश्चिकिद्धि होतर्यविष्ठ सुक्रतो दमूनाः ॥

अस्वप्न जस्तरणय स्सुशेवा अतन्द्रासोऽवृका अश्रमिष्ठाः ।

ते पायव स्सध्रियञ्चो निषद्याऽग्ने तव नः पान्त्वमूर ॥

ये पायवो मामतेयन्ते अग्ने पश्यन्तो अन्धन्दुरितादरक्षन्न् ।

ररक्षतान् त्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः ॥

त्वया वयꣳ सधन्यस्त्वोता स्तव-प्रणीत्य श्याम वाजान् ।

उभा शꣳसासूदय सत्यतातेऽनुष्ठुया कृणुह्य ह्रयाण ॥

अया ते अग्ने समिधा विधेम प्रति स्तोमꣳ शस्यमानं गृभाय ।

दहाशसो रक्षसः पाह्यस्मान् द्रुहो निदो मित्रमहो अवद्यात् ॥

रक्षोहणं वाजिनमाऽऽजिघर्मि मित्रं प्रथिष्ठ मुपयामि शर्म ।

शिशानो अग्निः क्रतुभिस्समिद्ध स्सनो दिवा सरिषः पातु नक्तम् ॥

विज्योतिषा बृहता भात्यग्नि रावि र्विश्वानि कृणुते महित्वा ।

प्रादेवीर्माया स्सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे ॥

उत स्वानासो दिविष-न्त्वग्ने स्तिग्मा युधा रक्षसे हन्त वा उ ।

( मदे चिदस्य प्रुजन्ति भामा न वरन्ते परिबाधो अ-देवीः ॥ )

इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः । अस्माकमस्तु केवलः ।

इन्द्रन्नरो ने मधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।

शूरो नृषाता शवसश्चकान आ गोमति व्रजे भजा त्वन्नः ।

इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु । इन्द्र तानि त आवृणे ।

अनु ते दायि मह इन्द्रियाय सत्रा ते विश्वमनु वृत्र-हत्यै ।

अनु क्षत्र मनु सहो य जत्रेन्द्र देवे भिरनु ते नृषह्ये ।

आ यस्मिन् त्सप्त वा सवा स्तिष्ठन्ति स्वारुहो यथा ।

ऋषिर्ह दीर्घ श्रुत्तम इन्द्रस्य घर्मो अतिथिः ।

आमासु पक्वमैरय आसूर्यꣳ रोहयो दिवि ।

घर्मन्न सामन्त पता सु वृक्ति भिर्जुष्टं गिर्वणसे गिरः ।

इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्र मर्केभिरर्किणः । इन्द्रं वाणीरनूषत ।

गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्च न्त्यर्कमर्किणः ।

ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत वुद्वꣳ शमिव येमिरे ।

अꣳहोमुचे प्रभरेमा मनीषा मोषिष्ठ दावन्ने सुमतिं गृणानाः ।

इदमिन्द्र प्रति हव्यं गृभाय सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ।

विवेष यन्मा धिषणा जजान स्तवै पुरा पार्या दिन्द्रमह्नः ।

अꣳहसो यत्रपी परद्यथानो नावेव यान्त मुभये हवन्ते ।

प्रसम्राजं प्रथम मध्वराणामꣳ होमुचं वृषभं यज्ञियानाम् ।

अपान्नपात मश्विना हयन्त मस्मि न्नर इन्द्रियं धत्तमोजः ।

वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः ।

अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्माꣳ अभिदासति ।

इन्द्र क्षत्र मभि वाममोजोऽजायथा वृषभ चर्षणीनाम् ।

अपानुदो जनममित्र यन्तमुरुं देवेभ्यो अकृणोरु लोकम् ।

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावतः आजगामा परस्याः ।

सृकꣳ सꣳशाय पविमिन्द्र तिग्मं विशत्रून् ताढि विमृधो नुदस्व ।

वि शत्रून् विमृधो नुद वि वृत्रस्य हनू रुज ।

विमन्यु मिन्द्र भामितोऽमित्रस्या भिदासतः ।
त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ।
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ।
मा ते अस्याꣳ सहसावन् परिष्टावधाय भूम हरिवः परादै ।
त्रायस्व नोऽवृकेभि र्वरूथै स्तव प्रियास स्सूरिषु स्याम ।
अनवस्ते रथमश्वाय तक्षन् त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम् ।
ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कैर वर्धयन्न हये हन्त वा उ ।
वृष्णे यत् ते वृषणो अर्कमर्चा निन्द्र ग्रावाणो अदिति स्सजोषाः ।
अनश्वासो ये पवयोऽरथा इन्द्रेषिता अभ्यवर्तं तदस्यून् ।
यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।
मघवन्छग्धि तव तन्न ऊतये विद्विषो विमृधो जहि ।
स्वस्तिदा विशस्पति र्वृत्रहा विमृधो वशी ।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः स्वस्तिदा अभयंकरः ।
महाꣳ इन्द्रो वज्रबाहुः षोडशी शर्म यच्छतु ।
स्वस्ति नो मघवा करोतु हन्तु पाप्मानं योऽस्मान् द्वेष्टि ।
सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भि स्सोमं पिब वृत्रहञ्छूर विद्वान् ।
जहि शत्रूꣳ रपमृधोनुद स्वाथाभयं कृणु हि विश्वतो नः ।

ये देवाः पुरस्सदोऽग्नि नेत्रा रक्षोहणस्तेनः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा
ये देवा दक्षिणसदो यमनेत्रा रक्षोहणस्तेनः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा
ये देवा पश्चात् सदसवितृ नेत्रा रक्षोहणस्तेनः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा
ये देवा उत्तरसदो वरुणनेत्रा रक्षोहणस्तेनः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा

ये देवा उपरिषदो बृहस्पतिनेत्रा रक्षोहणस्तेनः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा
ऽग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा यमाय रक्षोघ्ने स्वाहा सवित्रे रक्षोघ्ने स्वाहा
वरुणाय रक्षोघ्ने स्वाहा बृहस्पतये दुवस्पते रक्षोघ्ने स्वाहा ।

ये देवाः पुर स्सदोऽग्नि नेत्रा दक्षिण सदो यम नेत्रा पश्चात् सद सवितृ नेत्रा उत्तर सदो वरुण नेत्रा उपरिषदो बृहस्पति नेत्रा रक्षोहण स्तेनः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्स्वाहा ऽग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा यमाय सवित्रे वरुणाय बृहस्पतये दुवस्वते रक्षोघ्ने स्वाहा ।

अग्निरायुष्मान्त्स वनस्पतिभिरायुष्मान्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ।
सोम आयुष्मान्त्स ओषधीभिरायुष्मान्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ।
यज्ञ आयुष्मान्त्स दक्षिणाभिरायुष्मान्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ।
ब्रह्मायुष्मत्तद् ब्राह्मणैरायुष्मत्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ।
देवा आयुष्मंतस्तेऽमृतेनायुष्मंत स्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ।

अग्नि रायुष्मान् त्स वनस्पति भिरायुष्मान् तेन त्वाऽऽयुषाऽ ऽयुष्मन्तं करोमि सोम आयुष्मान् त्स ओषधीभि र्यज्ञ आयुष्मान् त्स दक्षिणाभि र्ब्रह्मायुष्म त्तद् ब्राह्मणै-रायुष्म देवा आयुष्मंतस्तेऽ मृते नायुष्मंत स्तेन त्वाऽऽ युषाऽऽ युष्मन्तं करोमि ।

या वामिन्द्रा वरुणा यतव्या तनूस्तयेमम१ँ हसो मुंचतं ।
या वामिन्द्रा वरुणा सहस्या तनूस्तयेमम१ँ हसो मुंचतं ।
या वामिन्द्रा वरुणा रक्षस्या तनूस्तयेमम१ँ हसो मुंचतं ।
या वामिन्द्रा वरुणा तेजस्या तनूस्तयेमम१ँ हसो मुंचतं ।
यो वामिन्द्रा वरुणावग्नौ स्रामस्तं वामेतेनाव यजे

योवामिन्द्रा वरुणा द्विपात्सु पशुषु स्रामस्तं वामेतेनाव यजे
योवामिन्द्रा वरुणा चतुष्पत्सु पशुषु स्रामस्तं वामेतेनाव यजे
योवामिन्द्रा वरुणा गोष्ठे स्रामस्तं वामेतेनाव यजे
योवामिन्द्रा वरुणा गृहेषु स्रामस्तं वामेतेनाव यजे
योवामिन्द्रा वरुणाप्सु स्रामस्तं वामेतेनाव यजे
योवामिन्द्रा वरुणौषधीषु स्रामस्तं वामेतेनाव यजे
योवामिन्द्रा वरुणा वनस्पतिषु स्रामस्तं वामेतेनाव यजे ॥

यावामिन्द्रा वरुणा य तव्या तनूस्तये ममꣳ हसो मुंचतं यावामिन्द्रा वरुणा सहस्या रक्षस्या तेजस्या तनूस्तये ममꣳ हसो मुंचतं यो वामिन्द्रा वरुणा वग्नौ स्रामस्तं वामे तेना व यजे यो वामिन्द्रा वरुणा द्विपात्सु पशुषु चतुष्पत्सु गोष्ठे गृहेष्व-प्सोषधीषु वनस्पतिषु स्रामस्तं वामे तेना व यजे ॥

अग्ने यशस्विन् यशसे ममर्पयेन्द्रावती मपचिती मिहावह। अयं मूर्धा परमेष्ठी सुवर्चा स्समानाना मुत्तम श्लोको अस्तु॥ भद्रं पश्यन्त उपसे दुरग्रे तपो दीक्षा मृषयः सुवर्विदः। ततः, क्षत्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा अभि सन्नमन्तु॥ धाता विधाता परमोत संधृक् प्रजापतिः परमेष्ठी विराजा। स्तोमा श्छंदाꣳसि निविदोम आहुरे तस्मै राष्ट्र मभि सन्नमाम॥ अभ्या वर्तध्व मुपमेत साकमयꣳ शास्ताऽ धिपतिर्वो अस्तु। अस्य विज्ञान मनुसꣳ रभध्व मिमं पश्चा दनु जीवाथ सर्वे॥

॥ राष्ट्रभृतं ॥

ऋताषाडृतधामाग्निर्गन्धर्वस्स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा।
तस्यौषधयोऽप्सरस ऊर्जो नाम ता इदं ब्रह्मक्षत्रं पान्तु ताभ्यः स्वाहा।
सꣳहितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वः स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा।

तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवो नाम ता इदं ब्रह्मक्षत्रं पान्तु ताभ्यः स्वाहा ।

सुषुम्नः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा ।

तस्य नक्षत्राण्यऽप्सरसो बेकुरयो नाम ता इदं ब्रह्मक्षत्रं पान्तु ताभ्यः स्वाहा ।

भुज्युस्सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा ।

तस्य दक्षिणा अप्सरसस्तवा नाम ता इदं ब्रह्मक्षत्रं पान्तु ताभ्यः स्वाहा ।

प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा ।

तस्यर्क्सामान्यप्सरसो वह्नयो नाम ता इदं ब्रह्मक्षत्रं पान्तु ताभ्यः स्वाहा ।

षिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वः स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा ।

तस्यापोऽप्सरसो मुदा नाम ता इदं ब्रह्मक्षत्रं पान्तु ताभ्यः स्वाहा ।

भुवनस्य पते यस्य त उपरि गृहा इह च ।

ऋताषाड् ऋत धामाऽग्नि गन्धवस्त-स्यौषधयोऽप्सरस ऊर्जो नाम स इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु ता इदं ब्रह्म क्षत्रं पान्तु तस्मै स्वाहा ताभ्यः स्वाहा सꣳहितो विश्व सामा सूर्यो गन्धर्वः स्तस्य मरीचयो ऽप्सरस आयुव सुषुम्नः सूर्य रश्मि श्चन्द्रमा गन्धर्वः स्तस्य नक्षत्राण्यऽ प्सरसो बेकुरयो भुज्यु स्सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स्तस्य दक्षिणा अप्सरस स्तवाः प्रजापति र्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स्तस्य ऋक्सामान्य प्सरसो वह्नय इषिरो विश्व व्यचा वातो गन्धर्वः स्तस्या पोऽप्सरसो मुदा भुवनस्य पते यस्य त उपरि गृहा इह च ।

सनोरास्वाज्यानिꣳ रायस्पोषाꣳ सुवीर्यꣳ संवत्सरीणाꣳ स्वस्तिꣳ स्वाहा ।

परमेष्ठ्यधिपतिर्मृत्युर्गन्धर्वः स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा ।

तस्य विश्वमप्सरसो भुवो नाम ता इदं ब्रह्मक्षत्रं पान्तु ताभ्यः स्वाहा ।

सुक्षितिस्सुभूतिर्भद्रकृत्सुवर्वान्पर्जन्यो गन्धर्वः स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा ।

तस्य विद्युतोऽप्सरसो रुचो नाम ता इदं ब्रह्मक्षत्रं पान्तु ताभ्यः स्वाहा।
दूरे हेतिरमृडयो मृत्युर्गन्धर्वः स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा।
तस्य प्रजा अप्सरसो भीरुवो नाम ता इदं ब्रह्मक्षत्रं पान्तु ताभ्यः स्वाहा।
चारुः कृपणकाशी कामो गन्धर्वः स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा।
तस्याधयोऽप्सरस श्शोचयतीर्नाम ता इदं ब्रह्मक्षत्रं पान्तु ताभ्यः स्वाहा।
सनो भुवनस्य पते यस्य त उपरि गृहा इह च।
उरुब्रह्मणेस्मै क्षत्राय महि शर्म यच्छ स्वाहा॥

सनो रास्वा-ज्यानिꣳ रायस्पोषꣳ सुवीर्यꣳ संवत्सरीणाꣳ स्वस्तिम्। परमेष्ठय-धिपति मृत्यु गन्धर्वः स्तस्य विश्व मप्सरसो भुव सुक्षिति स्सुभूति-र्भद्रकृ-त्सुवर्वान् पर्जन्यो गन्धर्व स्तस्य विद्युतोऽप्सरसो रुचो दूरे हेतिर मृडयो मृत्यु र्गन्धर्व स्तस्य प्रजा अप्सरसो भीरुव श्चारुः कृपण काशी कामो गन्धर्वः स्तस्या धयोऽप्सरस श्शोचयंती र्नाम स इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु ता इदं ब्रह्म क्षत्रं पान्तु तस्मै स्वाहा ताभ्यः स्वाहा सनो भुवनस्य पते यस्य त उपरि गृहा इह च। उरुब्रह्मणे स्मै क्षत्राय महि शर्म यच्छ॥

नमो अस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥
येऽदो रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु।
येषामप्सु सदः कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥
या इषवो यातु धानानां ये वा वनस्पतीꣳ रनु।
ये वाऽ वटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

॥ पंचचोडाः ॥

अयंपुरो हरिकेशः सूर्यरश्मिस्तस्य रथगृत्सश्च रथौजाश्च सेनानिग्रामण्यौ पुञ्जिकस्थला च कृतस्थला चाप्सरसरसौ यातुधाना हेति रक्षꣳसि प्रहेतिस्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधामि।

अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य रथस्वनश्च रथे चित्रश्च सेनानिग्रामण्यौ मेनका च सहजन्या चाप्सरसरसौ दङ्क्ष्णवः पशवो हेति पौरुषेयोवधः प्रहेतिस्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधामि।

अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य रथप्रोतश्चासमरथश्च सेनानिग्रामण्यौ प्रम्लोचन्ती चानुम्लोचन्ती चाप्सरसरसौ सर्पा हेतिर्व्याघ्राः प्रहेतिस्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधामि।

अयमुत्तरात्संयद्वसुस्तस्य सेनजिच्च सुषेणश्च सेनानिग्रामण्यौ विश्वाची च घृताची चाप्सरसावापो हेतिर्वातः प्रहेतिस्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधामि।

अयमुपर्यर्वाग्वसुस्तस्य तार्क्ष्यश्चारिष्टनेमिश्च सेनानिग्रामण्यावुर्वशी पूर्वचित्तिश्चाप्सरसरसौ विद्युद्धेतिरवस्फूर्जन्प्रहेतिस्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो रश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधामि।

अयं पुरो हरिकेशः सूर्य रश्मि स्तस्य रथ गृत्सश्च रथौ जाश्च सेना निग्रामण्यौ पुञ्जिकस्थला च कृतस्थला चा प्सरसौ यातुधाना हेति रक्षाꣳसि प्रहेति रयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य रथ स्वनश्च रथे चित्रश्च सेना निग्रामण्यौ मेनका च सहजन्या चाप्सरसौ दङ्क्ष्णवः पशवो हेतिः पौरुषेयो वधः प्रहेति रयं पश्चा द्विश्व-व्यचा स्तस्य रथ प्रोतश्चा सम रथश्च सेनानिग्रामण्यौ प्रम्लोचन्ती चा नुम्लोचन्ती चा प्सरसौ सर्पा हेति व्याघ्राः प्रहेति रयं मुत्तरा त्सं-यद्व सुस्तस्य सेनजिच्च

सुषेणश्च सेनानिग्रामण्यौ विश्वाची च घृताची चाप्सरसा वापो हेतिर्वातः प्रहेति रय मुपर्य वाग्व सुस्तस्य तार्क्ष्य श्चारिष्ट नेमिश्च सेनानिग्रामण्या वुर्वशीच पूर्वचित्तिश्चा प्सरसौ विद्युद्धे तिरव स्पूर्जन् प्रहेति स्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधामि।

॥ अप्रतिरथं ॥

आशुः शिशानो वृषभो न युध्मो घनाघनः , क्षोभण श्चर्षणीनाम्।
संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतꣳ सेना अजय त्साकामिन्द्रः ॥
संक्रन्दनेना निमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्य वनेन धृष्णुना।
तदिन्द्रेण जयत तत् सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ॥
स इषुहस्तैः स निषङ्गिभि-र्वशी सꣳस्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन।
सꣳसृष्ट जित् सोमपा बाहुशर्ध्यू-र्ध्वधन्वा प्रतिहिता भिरस्ता ॥
बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहाऽमित्राꣳ अपबाधमानः।
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माक मेध्यविता रथानाम् ॥
गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्त-मज्म प्रमृणन्त मोजसा।
इमꣳ सजाता अनु वीरयध्व-मिन्द्रꣳ सखायोऽनु सꣳ रभध्वम् ॥
बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः।
अभिवीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्र -मिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित् ॥
अभिगोत्राणि सहसा गाहमानोऽदायो वीर-श्शत-मन्यु-रिन्द्रः।
दुश्च्यवनः पृतनाषाड-युद्ध्योऽस्माकꣳ सेना अवतु प्र युत्सु ॥
इन्द्र आसां नेता बृहस्पति-र्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
देवसेना नामभि-भञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रे ॥

इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुताꣳ शर्ध उग्रम् ।
महा-मनसां भुवनच्य-वानां घोषो देवानां जयता-मुदस्थात् ॥
अस्माक-मिन्द्रः समृतेषु ध्वजे-ष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु ।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मानु देवा अवता हवेषु ॥
उद्धर्षय मघव-न्नायुधा-न्युत् -सत्वनां मामकानां महाꣳसि ।
उद् वृत्रहन् वाजिनां वाजिना-न्युद्रथानां जयता-मेतु घोषः ॥
उप प्रेत जयता नरः स्थिरा व-स्सन्तु बाहवः ।
इन्द्रो व श्शर्म यच्छ-त्वना धृष्या यथाऽसथ ॥
अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्म -सꣳशिता ।
गछामित्रान् प्रविश मैषां कंचनो-च्छिषः ॥
मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृते-नाभिऽवस्ताम् ।
उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जयन्तं त्वा मनु मदन्तु देवाः ॥
यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव ।
इन्द्रो नस्तत्र वृत्रहा विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भद्रं च मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च म ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुगं च मे शयनं च मे सूषा च मे सुदिनं च मे ॥

॥ विहव्यं ॥

ममाग्ने वर्चो विहवे-ष्वस्तु वयं त्वेन्धाना स्तनुवं पुषेम ।

मह्यं नमन्तां प्रदिशश्च तस्र स्त्वयाऽध्यक्षेण पृतना जयेम ॥

मम देवा विहवे सन्तु सर्व इन्द्रा-वन्तो मरुतो विष्णु रग्निः ।

ममान्तरिक्ष मुरु गोप-मस्तु मह्यं वातः पवतां कामे अस्मिन् ॥

मयि देवा द्रविण माय-जन्तां मय्या शीरस्तु मयि देव हूतिः ।

दैव्या होतारा वनिषन्त पूर्वेऽ रिष्टा-स्स्याम तनुवा सुवीराः ॥

मह्यं यजन्तु मम-यानि हव्याऽऽकूतिः सत्या मनसो-मे अस्तु ।

एनो मानिगां कतमच्च नाहं विश्वे देवासो अधि वोचता मे ॥

देवी ष्षडुर्वी रुरुणः कृणोत विश्वे देवास इह वीरयध्वम् ।

माहा-स्महि प्रजयामा तनूभि र्मारधाम द्विषते सोम राजन्न् ॥

अग्नि र्मन्युं प्रति-नुदन् पुरस्ता ददब्धो गोपाः परिपाहि नस्त्वम् ।

प्रत्यञ्चो यन्तु निगुतः पुनस्तेऽमैषां चित्तं प्रबुधा विनेशत् ॥

धाता धातृणां भुवनस्य यस्पति र्देवꣳ सवितार मभिमा तिषाहम् ।

इमं यज्ञ मश्विनोभा बृहस्पति र्देवाः पान्तु यजमानन् न्यर्थात् ॥

उरुव्यचा-नो महिष श्शर्मयꣳ सदस्मिन् हवे पुरुहूतः पुरुक्षु ।

स नः प्रजायै हर्यश्व मृडयेन्द्र मानो रीरिषो मा परा दाः ॥

येन स्स-पत्ना अप ते भव-न्त्विन्द्रा-ग्निभ्या मव बाधा महे तान् ।

वसवो रुद्रा आदित्या उपरि-स्पृशं मोग्रं-चेत्तार मधिराज मक्रन् ॥

अर्वाञ्च मिन्द्र ममुतो हवामहे यो गो जिद्धन जिदश्व जिद्यः ।

इमं नो यज्ञं विहवे जुष-स्वास्य कुर्मो हरिवो मेदिनं त्वा ॥

॥ मृगारं ॥

अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसो यं पाञ्चजन्यं बहव स्स-मिन्धते ।
विश्वस्यां विशि प्रविवि शिवाꣳ समी-महे सनो मुञ्चत्वꣳ हसः ॥
यस्येदं प्राण न्निमिष-द्यदे जति यस्य जातं जनमानं च केवलम् ।
स्तौ-म्यग्निं नाथि तो जो हवीमि सनो मुञ्चत्वꣳ हसः ॥
इन्द्रस्य मन्ये प्रथमस्य प्रचेतसो वृत्रघ्नः स्तोमा उप-मामु पागुः ।
यो दाशुषः सुकृतो हव-मुप गन्ता स नो मुञ्चत्वꣳ हसः ॥
यः संग्राम न्नयति संवशी युधे यः पुष्टानि सꣳसृजति त्रयाणि ।
स्तौ-मीन्द्र न्नाथि तो जो हवीमि स नो मुञ्चत्वꣳ हसः ॥
मन्वे वां मित्रा वरुणा तस्य वित्तꣳ सत्यौ जसा दृꣳ-हणा यन्नु देथे ।
या राजानꣳ सरथं याथ उग्रा ता नो मुञ्चतमागसः ॥
यो वाꣳ रथ ऋजु रश्मिः सत्य धर्मा मिथु श्चरन्त मुपयाति दूषयन्न् ।
स्तौमि मित्रा वरुणा नाथि तो जो हवीमि तौ नो मुंचतमागसः ।
वायो स्सवितु र्विदथानि मन्महे यावात्मन् वद्धि भृतो यौ च रक्षतः ।
यौ विश्वस्य परिभू-बभूवतु स्तौ नो मुञ्चतमागसः ॥
उपश्रेष्टा न आशिषो देवयो र्धर्मे अस्थिरन् ।
स्तौमि वायुꣳ सवितार न्नाथि तो जो हवीमि तौ नो मुंचतमागसः ॥
रथीतमौ रथीना मह्व ऊतये शुभं गमिष्ठौ सुयमे भिरश्वैः ।
ययो वां देवौ देवेष्व निशित मोज स्तौ नो मुञ्चतमागसः ॥
यदयातं वहतुꣳ सूर्याया स्त्रि-चक्रेण सꣳ सदमिच्छमानौ ।

स्तौमि देवा वश्विनौ नाथि तो जो हवीमि तौ नो मुञ्चतमागसः ॥

मरुतां मन्वे अधि नो ब्रुवन्तु प्रेमां वाचं विश्वा मवन्तु विश्वे ।

आशून् हुवे सुयमा नूतये ते नो मुञ्चत्वेनसः ॥

तिग्म मायुधं वीडितꣳ सहस्व द्दिव्यꣳ शर्दः पृतनासु जिष्णु ।

स्तौमि देवान्मरुतो नाथि तो जो हवीमि ते नो मुञ्चत्वेनसः ॥

देवानां मन्वे अधि नो ब्रुवन्तु प्रेमां वाचं विश्वा मवन्तु विश्वे ।

आशून् हुवे सुयमा नूतये ते नो मुञ्चत्वेनसः ॥

यदिदं माऽभिशोचति पौरुषेयेण दैव्येन ।

स्तौमि विश्वान्देवा-न्नाथि तो जो हवीमि ते नो मुञ्चत्वेनसः ॥

अनुनोऽद्यानुमतिर्यज्ञं देवेषु म् अन्यताम् ।

अग्निश्च हव्यवाहनो भवतांदाशुषे मयः ॥

अन्विदनुमते त्वं मन्यासै शं च नः कृधि ।

क्रत्वे दक्षाय नो हि नु प्रण आयूꣳषि तारिषः ॥

वैश्वानरो न ऊत्याऽऽप्र यातु परावतः । अग्निरुक्थेन वाहसा ॥

पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां पृष्टो विश्वा ओषदीराविवेश ।

वैश्वानरसहसा पृष्टो अग्निस्सनो दिवा सारिषः पातु नम् ॥

ये अप्रथेताममितेभिरोजोभिर्ये प्रतिष्ठे अभवतां वसूनाम् ।

अनुनोऽद्यानु मति-रन्वि दनुमते त्वं वैश्वानरो न ऊत्याऽऽपृष्टो दिवि ।

ये अप्रथेता ममिते भिरोजो भिर्ये प्रतिष्ठे अभवतां वसूनाम् ।

स्तौमि द्यावापृथिवी नाथि तो जो हवीमि ते नो मुञ्चतमꣳहसः ॥

उर्वी रोदसी वरिवः कृणोतं क्षेत्रस्य पत्नी अधि नो ब्रूयातम् ।

स्तौमि द्यावापृथिवी नाथि तो जो हवीमि ते नो मुञ्चतमꣳहसः ॥
यत्ते वयं पुरु-षत्राय विष्ठा विद्वाꣳ सश्चकृमा कच्चनाऽऽगः ।
कृधी स्वस्माꣳ अदि-तेरना गाव्येनाꣳ सि शिश्रथो विष्व-गग्ने ॥
यथा हत द्वसवो गौर्यं चित् पदिषिताम मुञ्चता य जत्राः ।
एवात्व मस्मत् प्रमुञ्चा व्यꣳहः प्राता-र्यग्ने प्रतरान्न आयुः ॥

॥ सर्पाहुतीः ॥

समीची नामासि प्राचीदिस्यास्तेऽग्निरधिपतिरसितो रक्षिता यश्चादिपतिर्यश्च गोप्ता ताभ्यां नमस्तौ नो मृडयतां ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वां जंभे दधामि ।
ओजस्विनी नामासि दक्षिणा दिस्यास्त इन्द्रोऽधिपतिः पृदाकू रक्षिता यश्चादिपतिर्यश्च गोप्ता ताभ्यां नमस्तौ नो मृडयतां ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वां जंभे दधामि ।
प्राची नामासि प्रतीची दिस्यास्ते सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिता यश्चादिपतिर्यश्च गोप्ता ताभ्यां नमस्तौ नो मृडयतां ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वां जंभे दधामि ।
अवस्थावा नामास्युदीची दिस्यास्ते वरुणोऽधिपतिस्तरश्च राजी रक्षिता यश्चादिपतिर्यश्च गोप्ता ताभ्यां नमस्तौ नो मृडयतां ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वां जंभे दधामि ।
अधिपत्नी नामासि बृहती दिस्यास्ते बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता यश्चादिपतिर्यश्च गोप्ता ताभ्यां नमस्तौ नो मृडयतां ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वां जंभे दधामि ।
वशिनी नामासीयं दिस्यास्ते यमोऽधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता यश्चादिपतिर्यश्च गोप्ता ताभ्यां नमस्तौ नो मृडयतां ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वां जंभे दधामि ॥

समीची नामासि प्राची दिक्तस्यास्तेऽग्नि रधिपति रसितो रक्षिता यश्चाधि पति र्यश्च गोप्ता ताभ्यां नमस्तौ नो मृडयतां ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वां जंभे दधाम्यो जस्विनी नामासि दक्षिणा दिक्तस्यास्त इन्द्रोऽधिपतिः पृदाकुः प्राची नामासि

प्रतीची दिक्तस्यास्ते सोमोऽधिपतिः स्वजो वस्थावा नामा स्युदीची दिक्तस्यास्ते वरुणोऽधिपति स्तिरश्च राजि रधि-पत्नी नामासि बृहती दिक्तस्यास्ते बृहस्पति रधिपतिः श्वित्रो वशिनी नामासीयं दिक्तस्यास्ते यमोऽधिपतिः कल्माष ग्रीवो रक्षिता यश्चा धिपति-र्यश्च गोप्ता ताभ्यां नमस्तौ नो मृडयतां ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वां जंभे दधामि ॥

॥ गन्धर्वाहुतीः ॥

हेतयो नामस्थ तेषां वः पुरो गृहा अग्निर्व इषवः सलिलो वातनामं तेभ्यो वो नमस्तेनो मृडयत ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधमि ।
निलिम्पा नामस्थ तेषां वो दक्षिणा गृहा पितरो वइषवः सगरो वातनामं तेभ्यो वो नमस्तेनो मृडयत ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधमि ।
वज्रिणो नामस्थ तेषां वः पश्चाद्गृहा स्वप्नोव इषवो गह्वरो वातनामं तेभ्यो वो नमस्तेनो मृडयत ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधमि ।
अवस्थावानो नामस्थ तेषां व उत्तरद्गृहा आपोव इषवः समुद्रो वातनामं तेभ्यो वो नमस्तेनो मृडयत ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधमि ।
अधिपतयो नामस्थ तेषां व उपरि गृहा वर्षं व इषवोऽवस्वान् वातनामं तेभ्यो वो नमस्तेनो मृडयत ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधमि ।
क्रव्या नामस्थ तेषां व इह गृहा अन्नं व इषवोऽनिमिषो वातनामं तेभ्यो वो नमस्तेनो मृडयत ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधमि ।

हेतयो नामस्थ तेषां वः पुरो गृहा अग्निर्व इषवः सलिलो निलिम्पा नामस्थ तेषां वो दक्षिणा गृहाः पितरो व इषवः सगरो वज्रिणो नामस्थ तेषां वः पश्चा द्गृहा स्वप्नो व

इषवो गह्वरोऽ वस्था-वानो नाम स्थ तेषां व उत्तरा दृहा आपोव इषवः समुद्रो
ऽधिपतयो नामस्थ तेषां व उपरि गृहा वर्षं व इषवोऽ वस्वान् क्रव्या नामस्थ
पात्थिवा स्तेषां व इह गृहा अन्नं व इषवोऽनिमिषो वात नामं तेभ्यो वो नमस्तेनो
मृडयत ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जंभे दधमि ।

॥ अज्यानि ॥

शता-युधाय शत-वीर्याय शतोतयेऽभिमा तिषाहे ।
शतं यो नः शरदो अजीता निन्द्रो नेष दति दुरितानि विश्वा ॥
ये चत्वारः पथयो देवयाना अंतरा द्यावा पृथिवी वियन्ति ।
तेषां यो अज्यानि मजीति माहवा त्तस्मै नो देवाः परिदत्तेह सर्वे ॥
ग्रीष्मो हेमन्त उतनो वसन्तः शरद् वर्षाः सुवि तन्नो अस्तु ।
तेषामृतूनाꣳ शतशारदानां निवात एषा मभये स्याम ॥
इदु-वत्सराय परि-वत्सराय सं-वत्सराय कृणुता बृहन्नमः ।
तेषां वयꣳ सुमतौ यज्ञियानां ज्योग जीता अहताः स्याम ॥
भद्रान्नः श्रेयः समनैष्ट देवा स्त्वयाऽवसेन समशी महित्वा ।
स नो मयो-भूः पितो आविशस्व शन्तोकाय तनुवे स्योनः ॥
भूतं भव्यं भविष्य द्वषट्स्वाहा नम ऋक्साम यजु-र्वषट्स्वाहा
नमो गायत्री त्रिष्टुब्जगती वषट्स्वाहा नमः पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौ र्वषट्स्वाहा
नमोऽग्निर्वायुः सूर्यो वषट्स्वाहा नमः प्राणो व्यानोऽपानो वषट्स्वाहा
नमोऽन्नं कृषि र्वृष्टि र्वषट्स्वाहा नमः पिता पुत्रः पौत्रो वषट्स्वाहा
नमो भू र्भुवः सुव र्वषट्स्वाहा नमः ।

॥ अथर्वशिरसं ॥ ( CHANT IN A LOW VOICE)

इन्द्रो-दधीचो अस्थभि । वृत्राण्य प्रति-ष्कुतः । जघान नवती-र्नव ।
इच्छन्न श्वस्य यच्छिरः । पर्वतेष्व पश्रितम् । तद्विद च्छर्यणा वति ।
अद्राह गोर मन्वत । नाम त्वष्टुर पीच्यम् । इत्था चन्द्र मसो गृहे ।
इन्द्रमिद् गाथिनो बृहत् । इन्द्र मर्के भिरर्किणः । इन्द्रं वाणी रनूषत ।
इन्द्र इद्धर्योः सचा । संमिश्ल आवचो युजा । इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ।
इन्द्रो दीर्घाय चक्षसे । आसूर्यꣳ रोहय द्दिवि । विगोभिरद्रि मैरयत् ।
इन्द्र वाजेषु नो अव । सहस्र प्रधनेषु च । उग्र उग्राभि रूतिभिः ।
तमिन्द्रं वाजया मसि । महे वृत्राय हन्तवे । स वृषा वृषभोऽभुवत् ।
इन्द्रः स दामने कृतः । ओजिष्ठः सबले हितः ।
द्युम्नी श्लोकी स सौम्यः । गिरा वज्रो न संभृतः ।
सबलो अन पच्युतः । व वक्षु रुग्रो अस्तृतः ।

॥ प्रत्यंगिरसं ॥

चक्षुषो हेते मनसो हेते । वाचो हेते ब्रह्मणो हेते ।
योमाऽघायु रभिदा सति । तमग्ने मेन्याऽमेनिं कृणु ।
यो मा चक्षुषा यो मनसा । यो वाचा ब्रह्मणा घायु रभिदा सति ।
तयाऽग्ने त्वं मेन्या । अमुम मेनिङ कृणु ।
यत्किञ्चा सौ मनसा यच्च वाचा । यज्ञै र्जुहोति यजुषा हविर्भिः ।
तन्मृत्यु र्निरृत्या संविदानः । पुरा-दिष्टा दाहुती-रस्य हन्तु ।
यातु धाना निरृति रादु रक्षः । ते अस्य घ्नंत्व नृतेन सत्यम् ।

इन्द्रेषिता आज्य मस्य मथ्नन्तु । मा तत्स मृद्धि यदसौ करोति ।

हन्मि तेऽहङ कृतꣳ हविः । यो मे घोरमची कृतः ।

अपाञ्चौ त उभौ बाहु । अपन ह्याम्या स्यम् ।

अपन ह्यामिते बाहू । अपन ह्याम्या स्यम् ।

अग्ने देवस्य ब्रह्मणा । सर्वं तेऽवधिषङ कृतम् ।

पुराऽमुष्य वषट्कारात् । यज्ञं देवेषु नस्कृधि ।

स्विष्ट मस्माकं भूयात् । माऽस्मान् प्रापन्नरा तयः ।

अन्ति दूरे सतो अग्ने । भ्रातृव्यस्या भिदासतः ।

वषट्कारेण वज्रेण । कृत्याꣳहन्मि कृता महम् ।

यो मा नक्तं दिवा सायम् । प्रात श्चाह्नो निपीयति ।

अद्यात मिन्द्र वज्रेण । भ्रातृव्यं पादयामसि ।

प्राणो रक्षति विश्वमेजत् । इर्यो भूत्वा बहुधा बहूनि ।

स इत्सर्वं व्यानशे । यो देवो देवेषु विभूरन्तः ।

आवृदूदात् क्षेत्रिय ध्वगद् वृषा । तमित्प्राणं मनसोप शिक्षत ।

अग्रं देवाना मिद मत्तु नो हविः । मनस श्चित्तेदम् ।

भूतं भव्यं च गुप्यते । तद्धि देवेष्व ग्रियम् ।

आ न एतु पुरश्चरम् । सह देवै रिमꣳ हवम् ।

मनः श्रेयसि श्रेयसि । कर्मन् यज्ञ पतिं दधत् ।

जुषतां देवा गिदꣳ हविः । विराड् देवी पुरोहिता ।

हव्य वाडन पायिनी । यया रूपाणि बहुदा वदन्ति ।

पेशाꣳसि देवाः परमे जनित्रे । सा नो विराड-नप स्पुरन्ती ।

वाग्देवी जुषता मिदꣳ हविः। चक्षु र्देवानां ज्योतिर-मृते न्यक्तम्।
अस्य विज्ञानाय बहुधानि धीयते। तस्य सुम्न मशीमहि।
मा नो हासी द्विचक्षणम्। आयुरिन्नः प्रतीर्यताम्।
अनन्धा श्चक्षुषा वयम्। जीवा ज्योति रशीमहि।
सुवर्ज्योति रुता मृतम्। श्रोत्रेण भद्र मुत शृण्वन्ति सत्यम्।
श्रोत्रेण वाचं बहुधो द्यमानाम्। श्रोत्रेण मोदश्च महश्च श्रूयते।
श्रोत्रेण सर्वा दिश आशृणोमि। येन प्राच्या उत दक्षिणा।
प्रतीच्यै दिशः शृण्वन्त्युत्तरात्। तदिच्छ्रोत्रं बहुधो-द्यमानम्।
अरान्न-नेमिः परिसर्वं बभूव।
सिꣳहे व्याघ्र उत या पृदाकौ। त्विषि-रग्नौ ब्राह्मणे सूर्येया।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान। सा न आगन्वर्चसा संविदाना।
या राजन्ये दुन्दुभा वायतायाम्। अश्वस्य क्रन्द्ये पुरुषस्य मायौ।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान। सा न आगन्वर्चसा संविदाना।
या हस्तिनि द्वीपिनि या हिरण्ये। त्विषि रश्वेषु पुरुषेषु गोषु।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान। सा न आगन्वर्चसा संविदाना।
रथे अक्षेषु वृषभस्य वाजे। वाते पर्जन्ये वरुणस्य शुष्मे।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान। सा न आगन्वर्चसा संविदाना।
राडसि विराडसि। सम्राडसि स्वराडसि।
इन्द्राय त्वा तेजस्वते तेजस्वन्तꣳ श्रीणामि।
इन्द्राय त्वौ-जस्वत ओजस्वन्तꣳ श्रीणामि।

इन्द्राय त्वा पयस्वते पयस्वन्तꣳ श्रीणामि ।

इन्द्राय त्वाऽऽयुष्मत आयुष्मन्तꣳ श्रीणामि ।

तेजोऽसि । तत्ते प्रयच्छामि । तेजस्व-दस्तु मे मुखम् । तेजस्व-च्छिरो अस्तु मे ।

तेजस्वान् विश्वतः प्रत्यङ् । तेजसा संपि -पृग्धि मा ।

ओजोऽसि । तत्ते प्रयच्छामि । ओजस्व-दस्तु मे मुखम् । ओजस्व-च्छिरो अस्तु मे ।

ओजस्वान् विश्वतः प्रत्यङ् । ओजसा संपि -पृग्धि मा ।

पयोऽसि । तत्ते प्रयच्छामि । पयस्व-दस्तु मे मुखम् । पयस्व-च्छिरो अस्तु मे ।

पयस्वान् विश्वतः प्रत्यङ् । पयसा संपि -पृग्धि मा ।

आयुरसि । तत्ते प्रयच्छामि । आयुष्म-दस्तु मे मुखम् । आयुष्म-च्छिरो अस्तु मे ।

आयुष्मान् विश्वतः प्रत्यङ् । आयुषा संपि-पृग्धि मा ।

इममग्न आयुषे वर्चसे कृधि । प्रियꣳ रेतो वरुण सोम राजन्न् ।

मातेवास्मा अदिते शर्म यच्छ । विश्वेदेवा जर दष्टि-र्यथाऽसत् ।

आयुरसि विश्वायुरसि । सर्वायुरसि सर्वमायुरसि ।

यतो वातो मनोजवाः । यतः, क्षरन्ति सिन्धवः ।

तासान्त्वा सर्वासाꣳ रुचा । अभिषिंचामि वर्चसा ।

समुद्र इवासि गह्मना । सोम इवास्यदाभ्यः ।

अग्नि-रिव विश्वतः प्रत्यङ् । सूर्य इव ज्योतिषा विभूः ।

अपां यो द्रवणे रसः । तमह-मस्मा आमुष्या-यणाय । तेजसे ब्रह्मवर्चसाय गृह्णामि ।

( तमहम् .................... शर्मणे .................... गोत्राय सहकुटुंबाय [बालकाय] तेजसे ब्रह्मवर्चसाय गृह्णामि । )

अपां य ऊर्मौ रसः । तमह-मस्मा आमुष्या-यणाय । ओजसे वीर्याय गृह्णामि ।

( तमहम् .................... शर्मणे .................... गोत्राय सहकुटुंबाय [बालकाय] ओजसे वीर्याय गृह्णामि । )

अपां यो मध्यतो रसः। तमह-मस्मा आमुष्या-यणाय। पुष्टै प्रजननाय गृह्णामि।

( तमहम् ................................ शर्मणे ................................ गोत्राय सहकुटुंबाय [बालकाय] पुष्टै प्रजननाय गृह्णामि। )

अपां यो यज्ञियो रसः। तमह-मस्मा आमुष्या-यणाय। आयुषे दीर्घायुत्वाय गृह्णामि।

( तमहम् ................................ शर्मणे ................................ गोत्राय सहकुटुंबाय [बालकाय] आयुषे दीर्घायुत्वाय गृह्णामि। )

अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य। पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाभिः।

यो मा ददाति स इ देव मा वाः। अहमन्न मन्न मदन्त मद्मि।

पूर्व-मग्ने-रपि दह-त्यन्नं। यत्तौ हासाते अह-मुत्तरेषु।

व्यात्त-मस्य पशव स्सुजम्भम्। पश्यन्ति धीराः प्रचरन्ति पाकाः।

जहा म्यन्यं नजहा म्यन्यम्। अहमन्नं वश मिच्चरामि।

समान-मर्थं पर्येमि भुंजत्। को मा मन्नं मनुष्यो दयेत।

पराके अन्नं निहितं ल्लोक एतत्। विश्वैर्देवैः पितृभि र्गुप्त मन्नम्।

यदद्यते लुप्यते यत्परोप्यते। शत तमी सा तनूर्मे बभूव।

महान्तौ चरू सकृ द्दुग्धेन पप्रौ। दिवंच पृश्नि पृथिवीं च साकम्।

तत्सं पिबन्तो न मिनन्ति वेधसः। नैत-द्भूयो भवति नो कनीयः।

अन्नं प्राण मन्न मपान माहुः। अन्नं मृत्युं तमु जीवातु माहुः।

अन्नं ब्रह्माणो जरसं वदन्ति। अन्नमाहुः प्रजननं प्रजानाम्।

मोघ-मन्नं विन्दते अप्रचेताः। सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।

नार्यमणं पुष्यति नो सखायम्। केवलाघो भवति केवलादि।

अहं मेघ स्तन-यन्वर्ष न्नस्मि। माम-दन्त्य हमद् म्यान्यान्।

अहꣳ सदमृतो भवामि। मदादित्या अधि सर्वे तपन्ति।

देवी वाचमजनयन्त देवाः। तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना। धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु। यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि। राष्ट्री देवानान्निषसादमन्द्रा। चतस्र ऊर्जंदुदुहे पयाꣳसि।क्वस्विदस्याः परमं जगाम।

देवीं वाचम-जनयन्त यद्वा-ग्वदन्ति।
अनन्ता-मन्ता-दधि निर्मितां महीम्। यस्यां देवा अद धुर्भोजनानि।
एकाक्षरां द्विपदाꣳ षट् पदाञ्च। वाचं देवा उपजीवन्ति विश्वे।
वाचं देवा उपजीवन्ति विश्वे। वाचङ गन्धर्वाः पशवो मनुष्याः।
वाचीमा विश्वा भुवना न्यर्पिता। सा नो हवं जुषता मिन्द्र-पत्नी।
वागक्षरं प्रथमजा ऋतस्य। वेदानां माताऽऽमृतस्य नाभिः।
सानो जुषाणोप यज्ञमागात्। अवन्ती देवी सुहवामे अस्तु।
यामृषयो मन्त्र-कृतो मनीषिणः। अन्वैच्छं देवा स्तपसा श्रमेण।
तां देवीं वाचꣳ हविषा यजामहे। सा नो दधातु सुकृतस्य लोके।
चत्वारि वाक्परि-मिता पदानि। तानि विदु ब्राह्मणा ये मनीषिणः।
गुहा त्रीणि निहिता नेङ गयन्ति। तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति।
श्रद्धयाग्निः समिध्यते। श्रद्धया विन्दते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि। वचसा वेदयामसि।
प्रियꣲ श्रद्धे ददतः। प्रियꣲ श्रद्धे दिदासतः।
प्रियं भोजेषु यज्वसु। इदं म उदितं कृधि।
यथा देवा असु रेषु। श्रद्धा मुग्रेषु चक्रिरे।
एवं भोजेषु यज्वसु। अस्माक-मुदितं कृधि।
श्रद्धां देवा यजमानाः। वायु-गोपा उपासते।

श्रद्धा॑ᳫ हृद॒य्य॑या॒ऽऽकू॑त्या । श्र॒द्धया॑ हूयते ह॒विः ।
श्र॒द्धां प्रा॒त-र्ह॑वामहे । श्र॒द्धां म॒ध्यं॑दि॒नं॑ परि॑ ।
श्र॒द्धा᳚ᳫ सूर्य॑स्य नि॒म्रुचि॑ । श्र॒द्धे श्रद्धा॑ पये ह मा॑ ।
श्र॒द्धा दे॒वा नधि॑वस्ते । श्र॒द्धा वि॒श्वमि॒दं जग॑त् ।
श्र॒द्धां कामस्य मा॒तरम्᳚ । ह॒विषा वर्धयामसि ।
ब्रह्म॑जज्ञा॒नं प्र॑थ॒मं पु॒रस्ता᳚त् । वि॒सीम॑त स्सु॒रुचो॑ वे॒न आ॑वः ।
स बु॒ध्निया॑ उप॒मा अ॑स्य वि॒ष्ठाः । स॒तश्च॒ योनि॒-मस॑तश्च॒ विवः॑ ।
पि॒ता वि॑राजा॒-मृष॒भो र॑यी॒णाम् । अ॒न्तरि॑क्षं वि॒श्वरू॑प॒ आवि॑वेश ।
तमर्कै॒रभ्य॑र्चन्ति व॒त्सम् । ब्रह्म॒ सन्तं॒ ब्रह्म॑णा व॒र्धय॑न्तः ।
ब्रह्म॑ दे॒वा-न॑जन यत् । ब्रह्म॒ वि॒श्वमि॒दं जग॑त् ।
ब्रह्म॑णः , क्ष॒त्रन्निर्मि॑तम् । ब्रह्म॑ ब्राह्म॒ण आ॒त्मना᳚ ।
अ॒न्तर॑स्मि॒न्निमे लो॒काः । अ॒न्तर्वि॑श्व॒मिदं जग॑त् ।
ब्र॒ह्मैव भू॒ताना॒ं ज्येष्ठम्᳚ । तेन॒ कोऽर्ह॒ति स्पर्धि॑तुम् ।
ब्रह्म॑न्दे॒वा-स्त्रय॑स्त्रि॒ᳫ शत् । ब्रह्म॒न्निन्द्र प्र॒जाप॒ती ।
ब्रह्म॑न् ह वि॒श्वा भू॒तानि॑ । ना॒वी॒वा॒न्तः स॒मा॒हि॑ता ।
च॒त॒स्र आशाः॒ प्र॒च॒रन्त्व॒ग्नयः । इ॒म न्नो॑ य॒ज्ञं न्न॑यतु प्र॒जान॑न् ।
घृ॒तं पि॒न्वन्न॒जर॑ᳫ सु॒वीर᳚म् । ब्रह्म॑ स॒मिद्भव॑ त्याहु॒तीना᳚म् ।
आ॒गावो॑ -अग्मन्नु॒त भ॒द्रम॑क्रन्न् । सीद॑न्तु गो॒ष्ठे र॒णय॑न्त्व॒स्मे ।
प्र॒जाव॑तीः पुरु॒रूपा॑ इ॒ह स्युः । इन्द्रा॑य पू॒र्वी रु॒षसो॒ दुहा॑नाः ।
इन्द्रो॒ यज्व॑ने पृण॒ते च॑ शिक्षति । उपे॒ द्द॑दाति॒ न स्वं मु॑षायति ।
भूयो॑ भूयो र॒यि-मि॒दस्य॑ व॒र्धय॑न्न् । अभि॑न्ने खि॒ल्ले नि॒दधा॑ति देव॒युम् ।

न ता नशन्ति न दभाति तस्करः। नैना अमित्रो व्यथिरदधर्षति।
देवाꣳश्च याभिर्यजते ददाति च। ज्योगित्ताभिस्सचते गोपतिः सह।
न ता अर्वा रेणुक कातो अश्नुते। न सꣳस्कृतत्रपुपयन्ति ता अभि।
उरुगायमभयन्तस्य ता अनु। गावो मर्त्यस्य विचिरन्ति यज्वनः।

न ता नशन्ति न ता अर्वा ।

गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छात्। गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।

इमा या-गाव स्सजना स इन्द्रः। इच्छामी द्धृदा मनसा चिदिन्द्रम्।

यूयं गावो मेदयथा कृशञ्चित्। अश्लीलं चित्कृणुथा सुप्रतीकम्।

भद्रं गृहं कृणुथ भद्र-वाचः। बृहद्वो वय उच्यते सभासु।

प्रजावतीः सूयवसꣳ रिशन्तीः। शुद्धा अप-स्सुप्र-पाणे पिबन्तीः।

माव-स्तेन ईशत माघशꣳ सः। परिवो हेती रुद्रस्य वृंज्यात्।

उपेद मुप पर्चनम्। आसु गोषूप पृच्यताम्। उपर्-ष भस्य रेतसि।

उपेन्द्र तव वीर्ये। ता सूर्या चन्द्रमसा विश्व भृत्तमा महत्।

तेजो वसु मद्रा-जतो दिवि। सामात्माना चरत स्साम चारिणा।

ययो व्रंतन्न-ममे जातु देवयोः। उभावन्तौ परियात अर्म्या।

दिवो न रश्मीꣳ स्तनुतो व्यर्णवे। उभा भुवन्ती भुवना कवि-क्रतु।

सूर्या न चन्द्रा चरतो हता-मती। पती द्युम द्विश्व विदा उभा दिवः।

सूर्या उभा चन्द्रमसा विचक्षणा। विश्व-वारा वरिवो भा-वरेण्या।

ता नोऽवतं मति-मन्ता महि-व्रता। विश्व वपरि प्रतरणा तरन्ता।

सुवर्विदा दृशये भूरि रश्मी। सूर्या हि चन्द्रा वसु-त्वेष दर्शता।

मनस्विनो भाऽनु चरतोनु संदिवम्। अस्य श्रवो नद्यः सप्त बिभ्रति।

द्यावा-क्षामा पृथिवी दर्-शतं वपुः। अस्मे सूर्या चन्द्रमसाऽभिचक्षे।

श्रद्धेक-मिन्द्र चरतो विचर्तुरम्। पुर्वा परं चरतो माय-यैतौ।

शिशू क्रीडन्तौ परियातो अध्वरम्। विश्वा-न्यन्यो भुवनाऽभिचष्टे।

ऋतू-नन्यो विदध ज्जायते पुनः।

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यास्विन्द्रः।
अग्निं या गर्भम् दधिरे विरूपास्तान आपश्शꣳ स्योना भवन्तु॥
यासाꣳ राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यम् जनानाम्।
मधुश्चुतश्शुचयो याः पावकास्ता न आपश्शꣳ स्योना भवन्तु॥
यासाम् देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति।
याः पृथिवीम् पयसोन्दन्ति शुक्रास्ता न आपश्शꣳ स्योना भवन्तु॥
शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापश्शिवया तनुवोप स्पृशत त्वचम् मे।
सर्वाꣳ अग्नीꣳ रप्सुषदो हुवो वो मयि वर्चो बलमोजो निधत्त॥
आपोभद्रा गृतमिदाप आसुरग्नीषोमौ बिभ्रात्याप इत्ताः।
तीव्रो रसो मधुपृचामरंगम आ मा प्राणेन सह वर्च सागन्॥
आदित्पश्याम्युत वा शृणोम्यामा घोषो गच्छति वाङ् न आसाम्।
मन्येभेजानो अमृतस्य तर्हि हिरण्यवर्णा अतृपं यदावः॥

हिरण्यवर्णाः श्शुचयः पावका यासाꣳ राजा।

यासां देवा श्शिवेन मा चक्षुषा पश्यत। आपो -भद्रा आदि-त्पश्यामि।

नास दासी-न्नो-स दासी त्तदानीम्। ना सीद्रजो नो व्योमा परो यत्।

किमा-वरीवः कुह कस्य शर्मन्न्। अम्भः किमासीद् गहनं गभीरम्।

न मृत्यु र-मृत न्तर्-हि न। रात्रिया अह्न आसीत् प्रकेतः।

आनीद्-वातꣳ स्वधया तदेकम्। तस्मा-द्धान्य न्न परः किंचनास।

तम आसी-त्तमसा गूढ मग्रे प्रकेतम्। सलिलꣳ सर्व मा इदम्।

तुच्छेना-भ्वपि हितं यदासीत्। तम-सस्त-न्महिना जाय-तैकम्।

कामस्त-दग्रे समवर्त-ताधि। मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्।

स तो बन्धुम-सति निरविन्दन्न्। हृदि-प्रतीष्या कवयो मनीषा।

तिर-श्चीनो विततो रश्मि-रेषाम्। अध-स्विदासी ३ दुपरि -स्विदासी ३ त्।

रेतोधा आस-न्महिमा न आसन्न्। स्वधा अवस्तात् प्रयतिः परस्तात्।

को अद्धा वेदक इह प्रवोचत्। कुत आ जाता कुत इयं विसृष्टिः।

अर्वा-ग्देवा अस्य विसर्जनाय। अथा को वेद-यत आ बभूव।

इयं विसृष्टि-र्यत आबभूव। यदि वा दधे यदि वा न।

यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्न्। सो अंग वेद यदि वा न वेद।

किꣳ स्विद्वनं क उ स वृक्ष आसीत्। यतो द्यावापृथिवी निष्ट-तक्षुः।

मनीषिणो मनसा पृच्छते दुतत्। यदध्य-तिष्ठ द्भुवनानि धारयन्न्।

ब्रह्म वनं ब्रह्म स-वृक्ष आसीत्। यतो द्यावापृथिवी निष्ट-तक्षुः।

मनीषिणो मनसा विब्रवीमि वः। ब्रह्मा ध्यतिष्ठ द्भुवनानि धारयन्न्।

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रꣳ हवामहे। प्रातर्मित्रा वरुणा प्रातरश्विना।

प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिम्। प्रातः सोममुत रुद्रꣳ हुवेम।

प्रातर्जितं भगमुग्रꣳ हुवेम। वयं पुत्र-मदितेर्यो विधर्ता।

आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुर श्चित्। राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह।

भग प्रणेत-र्भग सत्यराधः। भगेमां धियमुद वददन्नः।

भग प्रणो जनय गोभिरश्वैः। भग प्रनृभि र्नृवन्तः स्याम।

उतेदानीं भगवन्तः स्याम । उत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम् ।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य । वयं देवानाꣳ सुमतौ स्याम ।
भग एव भगवाꣳ अस्तु देवाः । तेन वयं भगवन्तः स्याम ।
तन्त्वा भग सर्व इज्जो-हवीमि । सनो भग पुर एता भवेह ।
समध्वरायो षसोनमन्त । दधिक्रावेव शुचये पदाय ।
अर्वाचीनं वसुविदं भगन्नः । रथमिवाश्वा वाजिन आवहन्तु ।
अश्वावती र्गोमतीर्न उषासः । वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीनाः । यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।

## कृत्तिका (Karthi)

अग्निर्नः पातु कृत्तिकाः । नक्षत्रं देवमिन्द्रियम् ।
इदमासां विचक्षणम् । हविरासं जुहोतन ।
यस्य भान्ति रश्मयो यस्य केतवः । यस्येमा विश्वा भुवनानि सर्वा ।
स कृत्तिकाभि रभि संवसानः । अग्निर्नो देव स्सुविते दधातु ॥

## रोहिणी (Rohini)

प्रजापते रोहिणी वेतु पत्नी । विश्वरूपा बृहती चित्र भानुः ।
सा नो यज्ञस्य सुविते दधातु । यथा जीवेम शरद स्सवीराः ।
रोहिणी देव्युदगा त्पुरस्तात् । विश्वा रूपाणि प्रति मोदमाना ।
प्रजापतिꣳ हविषा वर्धयन्ती । प्रिया देवाना मुपयातु यज्ञम् ॥

## मृगशीर्षम् च्म्रुगहासहेरसहामफ

सोमो राजा मृगशीर्षेण आगन्न्। शिवं नक्षत्रं प्रियमस्य धाम।
आप्यायमानो बहुधा जनेषु। रेतः प्रजां यजमाने दधातु।
यत्ते नक्षत्रं मृगशीर्ष मस्ति। प्रियꣳ राजन् प्रियतमं प्रियाणाम्।
तस्मै ते सोम हविषा विधेम। शन्न एधि द्विपदे शं चतुष्पदे॥

## आर्द्रा (Tiruvadarai)

आर्द्रया रुद्रः प्रथमा न एति। श्रेष्ठो देवानां पति रघ्नि यानाम्।
नक्षत्र मस्य हविषा विधेम। मा नः प्रजाꣳ रीरिषन्मोत वीरान्।
हेति रुद्रस्य परिणो वृणक्तु। आर्द्रा नक्षत्रं जुषताꣳ हविर्नः।
प्रमुञ्चमानौ दुरितानि विश्वा। अपाघशꣳसन्नुदता मरातिम्।॥

## पुनर्वसु (Punarpoosham)

पुनर्नो देव्य दिति स्पृणोतु। पुनर्वसूनः पुनरेतां यज्ञम्।
पुनर्नो देवा अभियन्तु सर्वे। पुनः पुनर्वो हविषा यजामः।
एवा न देव्य दितिर नर्वा। विश्वस्य भर्त्री जगतः प्रतिष्ठा।
पुनर्वसू हविषा वर्धयन्ती। प्रियम् देवाना मप्येतु पाथः॥

## पुष्यम् (Poosham)

बृहस्पतिः प्रथमं जायमानः। तिष्यम् नक्षत्र मभि संबभूव।
श्रेष्ठो देवानां पृतनासु जिष्णुः। दिशोऽनु सर्वा अभयन्नो अस्तु।
तिष्यः पुरस्ता दुत मध्यतो नः। बृहस्पतिर्नः परिपातु पश्चात्।
बाधेता न्द्वेषो अभयं कृणुताम्। सुवीर्यस्य पतय स्याम॥

## आश्रेषा (Aailyam)

इदꣳ सर्पेभ्यो हविरस्तु जुष्टम्। आ श्रेषा येषा मनुयन्ति चेतः।
ये अन्तरिक्षं पृथिवीं क्षियन्ति। ते न स्सर्पासो हव मागमिष्ठाः।
ये रोचने सूर्य स्यापि सर्पाः। ये दिवं देवी मनु सञ्चरन्ति।
येषामा श्रेषा अनुयन्ति कामम्। तेभ्य स्सर्पेभ्यो मधुम ज्जुहोमि॥

## मगम् (Maham)

उपहूताः पितरो ये मघासु। मनोजवस-स्सुकृत-स्सुकृत्याः।
ते नो नक्षत्रे हवमागमिष्ठाः। स्वधाभिर्यज्ञं प्रयतं जुषन्ताम्।
ये अग्निदग्धा येऽनग्निदग्धाः। येऽमुल्लोकं पितरः, क्षियन्ति।
याꣳश्च विद्मयाꣳ उचन प्रविद्म। मघासु यज्ञꣳ सुकृतम् जुषन्ताम्॥

## पूर्व फल्गुनी (Pooram)

गवां पतिः फल्गुनी नामसित्वम्। तदर्यमन् वरुण मित्र चारु।
तं त्वा वयꣳ सनितारꣳ सनीनाम्। जीवा जीवन्त मुप संविशेम।
येनेमा विश्वा भुवनानि सञ्जिता। यस्य देवा अनुसंयन्ति चेतः।
अर्यमा राजाऽजरस्तु विष्मान्। फल्गुनीना मृषभो रोर वीति॥

## उत्तर फल्गुनी (Uttaram)

श्रेष्ठो देवानाम् भगवो भगासि। तत्वा विदुः फल्गुनीस्तस्य वित्तात्।
अस्मभ्यं क्षत्र मजरꣳ सुवीर्यम्। गोम दश्व वदु पसन्नु देह।
भगोह दाता भग इत्प्रदाता। भगो देवीः फल्गुनी रावि वेश।
भग स्येत्तं प्रसवं गमेम। यत्र देवैस्सधमादं मदेम॥

## हस्तम्  (Hastam)

आयातु देव स्सवितो पयातु । हिरण्य येन सुवृता रथेन ।
वहन् हस्तꣳ सुभꣳ विद्मना पसम् । प्रयच्छन्तं पपुरिं पुण्य मच्छ ।
हस्तः प्रयच्छ त्वमृतं वसीयः । दक्षिणेन प्रति गृभ्णीम एनत् ।
दातार मद्य सविता विदेय । यो नो हस्ताय प्रसुवाति यज्ञम् ॥

## चित्रा  (Chittarai)

त्वष्टा नक्षत्र मभ्येति चित्राम् । सुभꣳ ससं युवतिꣳ रोचमानाम् ।
निवेश यन्न मृता न्मर्त्याꣳश्च । रूपाणि पिꣳशन् भुवनानि विश्वा ।
तन्न स्त्वष्टा तदु चित्रा विचष्टाम् । तन्नक्षत्रं भूरिदा अस्तु मह्यम् ।
तन्नः प्रजां वीरवतीꣳ सनोतु । गोभिर्नो अश्वै स्समनक्तु यज्ञम् ॥

## स्वाति  (Swathi)

वायुर्नक्षत्र मभ्येति निष्ट्याम् । तिग्म शृंगो वृषभो रोरुवाणः ।
समीरयन् भुवना मातरिश्वा । अप द्वेषाꣳसि नुदता मरातीः ।
तन्नो वायु स्तदु निष्ट्या शृणोतु । तन्नक्षत्रं भूरिदा अस्तु मह्यम् ।
तन्नो देवासो अनुजानन्तु कामम् । यथा तरेम दुरितानि विश्वा ॥

## विशाखम्  (Vishakham)

दूर मस्म च्छत्रवो यन्तु भीताः । तदिन्द्राग्नी कृणुताम् तद्वि शाखे ।
तन्नो देवा अनुमदन्तु यज्ञम् । पश्चात् पुरस्ता दभयन्नो अस्तु ।
नक्षत्राणा मधिपत्नी विशाखे । श्रेष्ठा विन्द्राग्नी भुवनस्य गोपौ ।
विषूच श्शत्रू नप बाधमानौ । अपक्षुध न्नुदता मरातिम् । ॥

## पौर्णमासी (Full Moon)

पूर्णा पश्चादुत पूर्णा पुरस्तात्। उन्मध्यतः पौर्णमासी जिगाय।
तस्यां देवा अधि संवसन्तः। उत्तमे नाक इह मादयन्ताम्।
पृथ्वी सुवर्चा युवतिः सजोषाः।पौर्णमा स्युदगा च्छोभमाना।
आप्याययन्ती दुरितानि विश्वा। उरुं दुहां यजमानाय यज्ञम्॥

## अनुराधा (Anusham)

ऋद्ध्यास्म हव्यै र्नमसो पसद्य। मित्रं देवं मित्र धेयं नो अस्तु।
अनूराधान् हविषा वर्धयन्तः। शतं जीवेम शरदः सवीराः।
चित्रम् नक्षत्र मुदगा त्पुरस्तात्। अनूराधा स इति यद्वदन्ति।
तन्मित्र एति पथिभि र्देवयानैः। हिरण्ययै र्विततै रन्तरिक्षे॥

## ज्येष्ठा (Ketai)

इन्द्रो ज्येष्ठा मनु नक्षत्र मेति। यस्मिन् वृत्रं वृत्र तूर्ये ततार।
तस्मि न्वय ममृतं दुहानाः। क्षुध न्तरेम दुरितिं दुरिष्टिम्।
पुरन्दराय वृषभाय धृष्णवे। अषाढाय सहमानाय मीढुषे।
इन्द्राय ज्येष्ठा मधु मद्दुहाना।उरुं कृणोतु यजमानाय लोकम्। ॥

## मूलम् (Moolam)

मूलं प्रजां वीरवतीं विदेय। पराच्येतु निर्ऋतिः पराचा।
गोभि र्नक्षत्रं पशुभि स्समक्तम्। अहर्भूया द्यजमानाय मह्यम्।
अहर्नो अद्य सुविते दधातु। मूलं नक्षत्र मिति यद्वदन्ति।
पराची वाचा निर्ऋतिं नुदामि। शिवं प्रजयै शिवमस्तु मह्यम्॥

## पूर्वाषाड (Pooradam)

या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुः। या अन्तरिक्ष उत पार्थि वीर्याः।
यासा मषाढा अनुयन्ति कामम्। ता न आपःशः स्योना भवन्तु।
याश्च कूप्या याश्च नाद्या स्समुद्रियाः। याश्च वैशन्ती रुत प्रासचीर्याः।
यासा मषाढा मधु भक्ष यन्ति। ता न आपःशः स्योना भवन्तु॥

## उत्तराषाड (Uttaradam)

तन्नो विश्वे उप शृण्वन्तु देवाः। तद षाढा अभि संयन्तु यज्ञम्।
तन्नक्षत्रं प्रथतां पशुभ्यः। कृषि वृष्टि यजमानाय कल्पताम्।
शुभ्राः कन्या युव तय स्सुपेशसः। कर्म कृत स्सुकृतो वीर्यावतीः।
विश्वान् देवान् हविषा वर्धयन्तीः। अषाढाः काम मुपायान्तु यज्ञम्॥

## अभिजित् (Abijit)

यस्मिन् ब्रह्मा भ्यजय त्सर्व मेतत्। अमुञ्च लोक मिद मूच सर्वम्।
तन्नो नक्षत्र मभि जिद्वि जित्य। श्रियं दधात्व हृणीय मानम्।
उभौ लोकौ ब्रह्मणा सञ्जि तेमौ। तन्नो नक्षत्र मभि जिद्वि चष्टाम्।
तस्मिन्वयं पृतना स्सञ्जयेम। तन्नो देवासो अनु जानन्तु कामम्॥

## श्रवण (Tiruvonam)

शृण्वन्ति श्रोणा ममृतस्य गोपाम्। पुण्यामस्या उप शृणोमि वाचम्।
मही न्देवी विष्णु पत्नी मजूर्याम्। प्रतीची मेनाः हविषा यजामः।
त्रेधा विष्णु रुरुगायो विचक्रमे। मही दिवं पृथिवी मन्तरिक्षम्।
तच्छ्रोणैति श्रव इच्छ माना। पुण्यँ श्लोकं यजमानाय कृण्वती॥

## श्रविष्ठा (Avittam)

अष्टौ देवा वसव स्सोम्यासः। चतस्रो देवी रजराः श्रविष्ठाः।
ते यज्ञं पान्तु रजसः परस्तात्। संवत्सरीण ममृतꣳ स्वस्ति।
यज्ञं नः पान्तु वसवः पुरस्तात्। दक्षिणतोऽभियन्तु श्रविष्ठाः।
पुण्य न्नक्षत्र मभि संविशाम। मा नो अराति रघशꣳ साऽगन्न्॥

## शतभिषग् (Chadayam)

क्षत्रस्य राजा वरुणोऽधिराजः। नक्षत्राणाꣳ शतभिषग्वसिष्ठः।
तौ देवेभ्यः कृणुतो दीर्घमायुः। शतꣳ सहस्रा भेषजानि धत्तः।
यज्ञन्नो राजा वरुण उपयातु। तन्नो विश्वे अभि संयन्तु देवाः।
तन्नो नक्षत्रꣳ शतभिषग्जुषाणम्। दीर्घमायुः प्रतिर द्भेषजानि॥

## पूर्वप्रोष्टपद् (Poorattadi)

अज एकपा दुदगा त्पुरस्तात्। विश्वा भूतानि प्रति मोदमानः।
तस्य देवाः प्रसवं यन्ति सर्वे। प्रोष्ठपदासो अमृतस्य गोपाः।
विभ्राजमान स्समिधा न उग्रः। आऽन्तरिक्ष मरुहद् गन्द्याम्।
तꣳ सूर्यं देव मज मेकपादम्। प्रोष्ठपदासो अनुयन्ति सर्वे॥

## उत्तरप्रोष्टपद् (Uttarattadi)

अहिर्बुध्नियः प्रथमा न एति। श्रेष्ठो देवाना मुत मानुषाणाम्।
तं ब्राह्मणा स्सोमपा स्सोम्यासः। प्रोष्ठपदासो अभि रक्षन्ति सर्वे।
चत्वार एक मभि कर्म देवाः। प्रोष्ठपदा स इति यान् ,वदन्ति।
ते बुध्नियं परिषद्यꣳ स्तुवन्तः। अहिꣳ रक्षन्ति नमसोप सद्य॥

## रेवती (Revathi)

पूषा रेवत्य न्वेति पन्थाम्। पुष्टिपती पशुपा वाज बस्त्यौ।
इमानि हव्या प्रयता जुषाणा। सुगैर्नो यानै रुपयातां यज्ञम्।
क्षुद्रान् पशून् रक्षतु रेवती नः। गावो नो अश्वाꣳ अन्वेतु पूषा।
अन्नꣳ रक्षन्तौ बहुदा विरूपम्। वाजꣳ सनुतां यजमानाय यज्ञम्॥

## अश्विनी (Ashwati)

तदश्विना वश्व युजोप याताम्। शुभङ्ग मिष्ठौ सुयमे भिरश्वैः।
स्वं नक्षत्रꣳ हविषा यजन्तौ। मध्वा सम्पृक्तौ यजुषा समक्तौ।
यौ देवानां भिषजौ हव्य वाहौ। विश्वस्य दूता वमृतस्य गोपौ।
तौ नक्षत्रं जुजुषाणो पयाताम्। नमोऽश्विभ्यां कृणुमोऽश्व युग्भ्याम्॥

## अपभरणी (Bharani)

अप पाप्मानं भरणी र्भरन्तु। तद्यमो राजा भगवान् विचष्टाम्।
लोकस्य राजा महतो महान्, हि। सुगं नः पन्था मभयं कृणोतु।
यस्मिन्नक्षत्रे यम एति राजा। यस्मि न्नेन मभ्यषिंचन्त देवाः।
तदस्य चित्रꣳ हविषा यजाम। अप पाप्मानं भरणी र्भरन्तु॥

निवेशनी सङ्गमनी वसूनां विश्वा रूपाणि वसून्यावेशयन्ती।
सहस्रपोषꣳ सुभगा रराणा सा न आगन्वर्चसा संविदाना॥
यत्ते देवा अदधुर्भागधेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा।
सा नो यज्ञं पिपृहि विश्ववारे रयिन्नो धेहि सुभगे सुवीरम्॥

नवो नवो भवति जायमानोऽह्नां केतुरुषसामेत्यग्रे ।
भागं देवेभ्यो विदधात्यायन् प्रचन्द्रमास्तिरिति दीर्घमायुः ॥
यमादित्या अꣳशुमाप्याययन्ति यमक्षितमक्षितयः पिबन्ति ।
तेन नो राजा वरुणो बृहस्पतिराप्याययन्तु भुवनस्य गोपाः ॥
ये विरूपे समनसा संव्ययन्ती । समानं तन्तुं परितातनाते ।

निवेशनी यत्ते देवा अदधुः ।
नवो नवो भवति जायमानोऽयमादित्या अꣳशु माप्याय यन्ति ।
ये विरूपे समनसा संव्य-यन्ती । समानं तन्तुं परिता तनाते ।

विभू प्रभू अनुभू विश्वतो हुवे । ते नो नक्षत्रे हवमग मेतम् ।
वयं देवी ब्रह्मणा संविदानाः । सुरत्नासो देव-वीतिं दधानाः ।
अहोरात्रे हविषा वर्धयन्तः । अति पाप्मान मति मुक्त्या गमेम ।
प्रत्युव दृश्या-यती । व्युच्छन्ती दुहिता दिवः ।
अपो मही वृणुते चक्षुषा । तमो ज्योति -ष्कृणोति सूनरी ।
उदुस्त्रिया स्सचते सूर्यः । स चा उद्य न्नक्षत्र मर्चिमत् ।
तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च । संभक्तेन गमे महि ।
तन्नो नक्षत्र मर्चिमत् । भानुम-त्तेज उच्चरत् । उप-यज्ञ मिहा गमत् ।
प्रन क्षत्राय देवाय । इन्द्राये न्दुꣳ हवामहे ।
स नः सविता सुव त्सनिम् । पुष्टिदां वीर वत्तमम् ।

उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ।
चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।

आऽप्राद्यावा पृथिवी अन्तरिक्ष॑ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।
आदितिर्न उरुष्यत्वदितिः शर्म यच्छतु । अदितिः पात्व॑हसः ।
महीमूषु मातर॑सुव्रतानामृतस्य पत्नीमवसे हुवेम ।
तुविक्षत्रामजरन्तीमुरूचीं॑ सुशर्माणमदितिं॑ सुप्रणीतम् ।
इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पा॑सुरे ।
प्रतद्विष्णुस्स्तवते वीर्याय । मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु । अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ।
अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपा॑ रेता॑सि जिन्वति ।
भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रानियुद्भिः सचसे शिवाभिः ।
दिवि मूर्धानं दधिषे सुवर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम् ।
अनुनोऽद्यानुमतिर्यज्ञं देवेषु मन्यताम् । अग्निश्च हव्यवाहनो भवतां दाशुषे मयः ।
अन्विदनुमते त्वं मन्यासै शंच कृधि । क्रत्वे दक्षाय नोहि नु प्रण आयू॑षि तारिषः ।
हव्यवाहमभिमातिषाहम् । रक्षोहणं पृतनासु जिष्णुम् । ज्योतिष्मन्तं दीद्यतं पुरन्धिम् ।
अग्नि॑ स्विष्टकृत माहुवेम । स्विष्टमग्ने अभितत्पृणाहि । विश्वा देव पृतना अभिष्य ।
उरुन्नः पन्थां प्रदिशन्विभाहि । ज्योतिष्मद्धेह्यजरन्न आयुः ॥

उदुत्यं चित्रं । अदिति र्न उरुष्यतु मही-मूषु मातरम् ।
इदं विष्णु प्रत द्विष्णुः । अग्नि र्मूर्धा भुवः ।
अनुनोऽद्यानु मतिरन्वि दनुमते त्वं । हव्य-वाह॑ स्विष्टम् ।

### कृत्तिका (Karthi)

अग्नये स्वाहा कृत्तिकाभ्यः स्वाहा । अम्बायै स्वाहा दुलायै स्वाहा ।
नितन्त्यै स्वाहाऽभ्र-यन्त्यै स्वाहा । मेघ-यन्त्यै स्वाहा वर्ष-यन्त्यै स्वाहा ।
चुपुणिकायै स्वाहा ।

### रोहिणी (Rohini)

प्रजापतये स्वाहा रोहिण्यै स्वाहा। रोचमानायै स्वाहा प्रजाभ्यः स्वाहा।

### मृगशीर्षम् (Mrughasheersham)

सोमाय स्वाहा मृगशीर्षाय स्वाहा। इन्वकाभ्यः स्वा-हौषधीभ्यः स्वाहा।
राज्याय स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहा।

### आर्द्रा (Tiruvadarai)

रुद्राय स्वाहाऽऽर्द्रायै स्वहा। पिन्वमानायै स्वाहा पशुभ्यः स्वाहा।

### पुनर्वसु (Punarpoosham)

अदित्यै स्वाहा पुनर्वसुभ्याम्। स्वाहा भूत्यै स्वाहा प्रजात्यै स्वाहा।

### पुष्यम् (Poosham)

बृहस्पतये स्वाहा तिष्याय स्वाहा। ब्रह्मवर्चसाय स्वाहा।

### आश्रेषा (Aailyam)

सर्पेभ्यः स्वाहाऽऽश्रेषाभ्यः स्वाहा। दन्द-शूकेभ्यः स्वाहा।

### मगम् (Maham)

पितृभ्यः स्वाहा मघाभ्यः। स्वाहाऽनघाभ्यः स्वाहाऽगदाभ्यः।
स्वाहाऽरुन्धतीभ्यः स्वाहा।

### पूर्वं फल्गुनी (Pooram)

अर्यम्णे स्वाहा फल्गुनीभ्याꣳ स्वाहा। पशुभ्यः स्वाहा।

### उत्तर फल्गुनी (Uttaram)

भगाय स्वाहा फल्गुनीभ्याꣳ स्वाहा। श्रेष्ठ्याय स्वाहा।

### हस्तम् (Hastam)

सवित्रे स्वाहा हस्ताय। स्वाहा ददते स्वाहा पृणते।
स्वाहा प्रयच्छते स्वाहा प्रति गृभ्णते स्वाहा।

**चित्रा (Chittarai)**

त्वष्ट्रे स्वाहा चित्रायै स्वाहा। चैत्राय स्वाहा प्रजायै स्वाहा।

**स्वाति (Swathi)**

वायवे स्वाहा निष्ट्यायै स्वाहा। कामचाराय स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहा।

**विशाखम् (Vishakham)**

इन्द्राग्निभ्याꣳ स्वाहा विशाखाभ्याꣳ स्वाहा। श्रेष्ठ्याय स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहा।

**पौर्णमासी (Full Moon)**

पौर्णमास्यै स्वाहा कामाय स्वाहा गत्यै स्वाहा।

**अनुराधा (Anusham)**

मित्राय स्वाहाऽनूराधेभ्यः स्वाहा। मित्र-धेयाय स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहा।

**ज्येष्ठा (Ketai)**

इन्द्राय स्वाहा ज्येष्ठायै स्वाहा। ज्यैष्ठयाय स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहा।

**मूलम् (Moolam)**

प्रजापतये स्वाहा मूलाय स्वाहा। प्रजायै स्वाहा।

**पूर्वांषाड (Pooradam)**

अद्भ्यः स्वाहाऽषाढाभ्यः स्वाहा। समुद्राय स्वाहा कामाय स्वाहा।
अभिजित्यै स्वाहा।

**उत्तराषाड (Uttaradam)**

विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहाऽषाढाभ्यः स्वाहा। अनपज-य्याय स्वाहा जित्यै स्वाहा।

**अभिजित् (Abijit)**

ब्रह्मणे स्वाहाऽभिजिते स्वाहा। ब्रह्म-लोकाय स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहा।

**श्रवण (Tiruvonam)**

विष्णवे स्वाहा श्रोणायै स्वाहा। श्लोकाय स्वाहा श्रुताय स्स्वाहा।

**श्रविष्ठा (Avittam)**

वसुभ्यः स्वाहा श्रविष्ठाभ्यः स्वाहा। अग्राय स्वाहा परीत्यै स्वाहा।

**शतभिषग् (Chadayam)**

वरुणाय स्वाहा शत-भिषजे स्वाहा। भेषजेभ्यः स्वाहा।

**पूर्वप्रोष्टपद् (Poorattadi)**

अजा-यैकपदे स्वाहा प्रोष्ठपदेभ्यः स्वाहा। तेजसे स्वाहा ब्रह्मवर्चसाय स्वाहा।

**उत्तरप्रोष्टपद् (Uttarattadi)**

अहये बुध्नियाय स्वाहा प्रोष्ठपदेभ्यः स्वाहा। प्रतिष्ठायै स्वाहा।

**रेवती (Revathi)**

पूष्णे स्वाहा रेवत्यै स्वाहा। पशुभ्यः स्वाहा।

**अश्विनी (Ashwati)**

अश्विभ्याꣳ स्वाहाऽश्वयुग्भ्याꣳ स्वाहा। श्रोत्राय स्वाहा श्रुत्यै स्वाहा।

**अपभरणी (Bharani)**

यमाय स्वाहाऽपभरणीभ्यः स्वाहा। राज्याय स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहा।

अमावास्यायै स्वाहा कामाय स्वाहा गत्यै स्वाहा।

चन्द्रमसे स्वाहा प्रती-दृश्यायै स्वाहा।

अहो-रात्रेभ्यः स्वाहाऽर्धमासे-भ्यः स्वाहा।

मासेभ्यः स्वाह र्तुभ्यः स्वाहा। संवत्सराय स्वाहा।

अह्ने स्वाहा रात्रियै स्वाहा। अति -मुक्त्यै स्वाहा।

उषसे स्वाहा व्युष्ट्यै स्वाहा। व्यूषु-ष्यै स्वाहा व्युच्छन्त्यै स्वाहा।

व्युष्टायै स्वाहा। नक्षत्राय स्वाहो-देष्यते स्वाहा।

उद्यते स्वाहो-दिताय स्वाहा। हरसे स्वाहा भरसे स्वाहा।

भ्राजसे स्वाहा तेजसे स्वाहा । तपसे स्वाहा ब्रह्मवर्चसाय स्वाहा ।
सूर्याय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहा । प्रतिष्ठायै स्वाहा ।
अदित्यै स्वाहा प्रतिष्ठायै स्वाहा । विष्णवे स्वाहा यज्ञाय स्वाहा । प्रतिष्ठायै स्वाहा ॥

दधिक्राविण्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखाकरत् प्रण आयूꣳषि तारिषत् ॥
आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥
योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिव मातरः ॥
तस्मा अरंगमाम वो यस्यक्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥

उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय ।
अथा वयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम ।
अस्तभ्नाद् द्यामृषभो अन्तरिक्षममिमीत वरिमाणं पृथिव्या
आसीदद्विश्वा भुवनानि सम्राड्विश्वेत्तानि वरुणस्य व्रतानि ।
यत्किञ्चेदम् वरुणदैव्यै जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि ।
अचित्तीयत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः ॥
कितवासो यद्रिरिपुर्न दीवि यद्वाघा सत्यमुतयन्न विद्म ।
सर्वा ता विष्य शिथिरेव देवा था ते स्याम वरुणप्रियासः ॥
अव ते हेडो वरुण नमोभिरवयज्ञेभिरीमहे हविर्भिः ।
क्षयन्नस्मभ्यमसुरप्रचेतो राजन्नेनाꣳसिशिश्रथः कृतानि ॥
तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न आयुः प्रमोषीः ॥

॥ पवमानम् ॥

हिरण्यवर्णाः श्शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यास्विन्द्रः ।
अग्निं या गर्भम् दधिरे विरूपास्तान आपश्शꣳ स्योना भवन्तु ॥
यासाꣳ राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यम् जनानाम् ।
मधुश्चुतश्शुचयो याः पावकास्ता न आपश्शꣳ स्योना भवन्तु ॥
यासाम् देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति ।
याः पृथिवीम् पयसोन्दन्ति शुक्रास्ता न आपश्शꣳ स्योना भवन्तु ॥
शिवेन मा चक्षुषा पश्यताप शिशवया तनुवोप स्पृशत त्वचम् मे ।
सर्वाꣳ अग्नीꣳ रप्सुषदो हुवो वो मयि वर्चो बलमोजो निधत्त ॥
पवमानस्सुवर्जनः । पवित्रेण विचर्षणिः । यः पोता स पुनातु मा ।
पुनन्तु मा देवजनाः । पुनन्तु मनवो धिया । पुनन्तु विश्व आयवः ।
जातवेदः पवित्रवत् । पवित्रेण पुनाहि मा ।शुक्रेण देवदीद्यत् ।
अग्ने क्रत्वा क्रतूꣳ रनु । यत्ते पवित्रमर्चिषि । अग्ने विततमन्तरा ।
ब्रह्म तेन पुनीमहे । उभाभ्यां देवसवितः । पवित्रेण सवेन च ।
इदं ब्रह्म पुनीमहे । वैश्वदेवी पुनती देव्यागात् । यस्यै बह्वीस्तनुवो वीतपृष्ठाः ।
तया मदन्तः सधमाद्येषु । वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम् ।
वैश्वानरो रश्मिभिर्मा पुनातु । वातः प्राणेनेषिरो मयो भूः ।
ध्यावापृथिवी पयसा पयोभिः । ऋतावरी यज्ञिये मा पुनीताम् ।
बृहद्भिः सवितस्तृभिः । वर्षिष्ठैर्देवमन्मभिः । अग्ने दक्षैः पुनाहि मा ।
येन देवा अपुनत । येनापो दिव्यंकशः । तेन दिव्येन ब्रह्मणा ।
इदं ब्रम्ह पुनीमहे । यः पावमानीरध्येति ।ऋषिभिस्सम्भृतꣳ रसम् ।

सर्व॒ स पूतमश्नाति । स्वदितम् मातरिश्विना । पावमानीर्यो अध्येति ।
ऋषिभिस्सम्भृत॒ रसम् । तस्मै सरस्वती दुहे । क्षीर॒ सर्पिर्मधूदकम् ।
पावमानीस्स्वस्तयनीः । सुदुघाहि पयस्वतीः । ऋषिभिस्सम्भृतो रसः ।
ब्राह्मणेष्वमृत॒ हितम् । पावमानीर्दिशन्तु नः । इमं लोकमथो अमुम् ।
कामान्थ्समर्धयन्तु नः । देवीर्देवैः समाभृताः । पावमानीस्स्वस्त्ययनीः ।
सुदुघाहि घृतश्चुतः । ऋषिभिस्संभृतो रसः । ब्राह्मणेष्वमृत॒ हितम् ।
येन देवाः पवित्रेण । आत्मानं पुनते सदा । तेन सहस्रधारेण ।
पावमान्यः पुनन्तु मा । प्राजापत्यम् पवित्रम् । शतोध्याम॒ हिरण्मयम् ।
तेन ब्रह्म विदो वयम् । पूतं ब्रह्म पुनीमहे । इन्द्रस्सुनीती सहमा पुनातु ।
सोमस्स्वस्त्या वरुण स्समीच्या । यमो रजा प्रमृणाभिः पुनातु मा ।
जातवेदा मोर्जयन्त्या पुनातु । भूर्भुवस्सुवः ।
तच्छं योरावृणीमहे । गातुं यज्ञाय । गातुं यज्ञपतये । दैवीस्स्वस्तिरस्तुनः ।
स्वस्तिर्मानुषेभ्यः । ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् । शन्नो अस्तु द्विपदे । शं चतुष्पदे ।
ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ।

नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः ।
नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते करोमि ॥
ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ।

**॥ वास्तोष्पत मंत्रं ॥**

वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः ।
यत्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्न एधि द्विपदे शं चतुष्पदे ।

वास्तोष्पते शग्मया सꣳसदाते सक्षीम-हिरण्वया गतुमत्या ।

आवः , क्षेम उत योगे वरन्नो यूयं पात स्वस्तिभि स्सदानः ।

वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गोभिरश्वे भिरिन्दो ।

अजरा-सस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रतिनो जुषस्व ।

अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्या विशन्न् । सखा सुशेव एधिनः ।

शिवꣳ शिवं भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवः ॥

**॥ प्रोक्षण मन्त्राः ॥**

आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥

योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिव मातरः ॥

तस्मा अरंगमाम वो यस्यक्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे । अश्विनो-र्बाहुभ्याम् । पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

अश्विनो-र्भैषज्येन । तेजसे ब्रह्मवर्चसाया-भिषिञ्चामि ॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे । अश्विनो-र्बाहुभ्याम् । पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

सरस्वत्यै भैषज्येन । वीर्याया-न्नाद्याया-भिषिञ्चामि ॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे । अश्विनो-र्बाहुभ्याम् । पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

इन्द्रस्ये-न्द्रियेण । श्रियै यशसे बलाया-भिषिञ्चामि ॥

सोमꣳ राजानं वरुण मग्नि मन्वार भामहे ।

आदित्यान् विष्णुꣳ सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याꣳ

सरस्वत्यै वाचो यन्तु र्यन्त्रेणा ग्नेस्त्वा साम्राज्येना भिषिञ्चामी

न्द्रस्यत्वा साम्राज्येना भिषिञ्चामि बृहस्पतेस्त्वा साम्राज्येना-भिषिञ्चामि ॥

आयुराशास्ते। सुप्रजास्त्व माशास्ते। सजात वनस्या माशास्ते।
उत्तरां देव यज्या माशास्ते। भूयो हविष्करण माशास्ते। दिव्यं धामाशास्ते।
विश्वं प्रिय माशास्ते। यदनेन हविषाऽऽशास्ते। तदश्या त्तद्ध ध्यात्।
तदस्मै देवारा सन्ताम्। तदग्नि र्देवो देवेभ्यो वनते। वय मग्ने र्मानुषाः।
इष्टं च वीतं च। उभे च नो द्यावा पृथिवी अꣳ हसः स्पाताम्।
इह गति र्वाम-स्येदं च। नमो देवेभ्यः॥
द्रुपदा दिवे न्मु-मुचानः। स्विन्नः स्नात्वी मलादिव।
पूतं पवित्रेणे वाज्यम्। आप श्शुन्धन्तु मैनसः।
भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवः॥

आपो वा इदꣳ सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाꣳस्यापो ज्योतीꣳष्यापो यजूꣳष्याप स्सत्य मापस्सर्वा देवता आपो भूर्भुवस्सुवराप ओं॥

**॥ प्राशन मंत्रं ॥**

आप इद्वा उपेषजीः। आपो अमी वचादनीः।
आप सर्वस्य भेषजीः। तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।
अकाल मृत्यु हरणम् सर्व व्याधि निवारणम्
सर्व पाप क्षयकरम् वरुण पातोतकम् शुभम्।
आम-यावी चिन्वीत। आपो वै भेषजम्।
भेषज-मे वास्मै करोति। सर्व मायुरेति।

**॥ उदकशान्ति – मन्त्रपाठः समाप्तः॥**

# ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

॥ हरिः ओम् ॥

# ॥ शान्ति जप मंत्राः ॥

। वेदादय ।

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ॥

इषेत्वो र्जेत्वा वायवस्थो-पायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे ॥

अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि ॥

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥

। रक्षोघ्नं ।

कृणुष्व पाजः प्रसितिन्न पृथ्वी याहि राजे वामवाँ इभेन।

तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानो ऽस्ताऽसि विध्य रक्ष सस्तपिष्ठैः ॥

तव भ्रमास आशुया पतं त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः।

तपूँष्यग्ने जुह्वा पत ङ्गान सन्दितो विसृज विष्व गुल्काः ॥

प्रति स्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः।

यो नो दूरे अघशँ सोयो अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिराद धर्षीत् ॥

उदग्ने तिष्ठ प्रत्याऽऽतनुष्व न्यमित्राँ ओषतात् तिग्महेते।

यो नो अरातिँ समिधान चक्रे नीचातं धक्ष्यत संन्न शुष्कम् ॥

ऊर्ध्वो भव प्रति विध्या ध्यस्मदा विष्कृणुष्व दैव्या न्यग्ने।

अव स्थिरा तनुहि यातु जूनां जामि मजामिं प्रमृणीहि शत्रून् ॥

स ते जानाति सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुमैरत्।

विश्वा न्यस्मै सुदिना निरायो द्युम्ना न्यर्यो विदुरो अभि द्यौत् ॥

सेदग्ने अस्तु सुभग स्सुदानु र्यस्त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः।

पिप्रीषति स्व आयुषि दुरोणे विश्वे दस्मै सुदिना सासदिष्टिः ॥
अर्चामि ते सुमतिं घोष्यर्वाक् सन्तेवा वाता जरतामियं गीः ।
स्वश्वास्त्वा सुरथा मर्जये मास्मे क्षत्राणि धारये रनु द्यून् ॥
इह त्वा भूर्या चरेदु पत्मन्तोषा वस्तर्दी दिवाꣳसमनु द्यून् ।
क्रीडन्तस्त्वा सुमनस स्सपेमाभि द्युम्ना तस्थिवाꣳ सो जनानाम् ॥
यस्त्वा स्वश्व स्सु हिरण्यो अग्न उपयाति वसुमता रथेन ।
तस्य त्राता भवसि तस्य सखा यस्त आतिथ्य मानुषग् जुजोषत् ॥
महो रुजामि बन्धुता वचोभि स्तन्मा पितु र्गोतमा दन्वियाय ।
त्वन्नो अस्य वचसश्चि किद्धि होतर्य विष्ठ सुक्रतो दमूनाः ॥
अस्वप्न जस्तरणय स्सुशेवा अतन्द्रासोऽवृका अश्रमिष्ठाः ।
ते पायव स्सध्रियञ्चो निषद्याऽग्ने तव नः पान्त्वमूर ॥
ये पायवो मामते यन्ते अग्ने पश्यन्तो अन्ध न्दुरिता दरक्षन्न् ।
ररक्ष तान् त्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः ॥
त्वया वयꣳ सधन्य स्त्वोता स्तव प्रणीत्य श्याम वाजान् ।
उभा शꣳसासूदय सत्यताते ऽनुष्ठुया कृणुह्य ह्रयाण ॥
अया ते अग्ने समिधा विधेम प्रति स्तोमꣳ शस्यमानं गृभाय ।
दहाशसो रक्षसः पाह्यस्मान् द्रुहो निदो मित्रमहो अवद्यात् ॥
रक्षोहणं वाजिनमाऽऽजिघर्मि मित्रं प्रथिष्ठ मुपयामि शर्म ।
शिशानो अग्निः क्रतुभि स्समिद्ध स्सनो दिवा सरिषः पातु नक्तम् ॥
विज्योतिषा बृहता भात्यग्नि रावि र्विश्वानि कृणुते महित्वा ।

प्रादेवी मांया स्सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे ॥
उत स्वानासो दिविष न्त्वग्ने स्तिग्मा युधा रक्षसे हन्त वा उ ।
मदे चिदस्य प्र रुजन्ति भामा न -वरन्ते परिबाधो अदेवीः ॥

। आप्या ।

अग्ने यशस्वि न्यशसे ममर्प येन्द्रावती मपचिती मिहावह ।
अयं मूर्धा परमेष्ठी सुवर्चा स्समा नाना मुत्तम श्लोको अस्तु ॥
भद्रं पश्यन्त उपसे दुरग्रे तपो दीक्षा मृषयः सुव र्विदः ।
ततः , क्षत्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा अभि सन्न मन्तु ॥
धाता विधात परमोत संधृक् प्रजापतिः परमेष्ठी विराजा ।
स्तोमा श्छंदाꣳसि निवि-दोम आहुरे तस्मै राष्ट्र मभि सन्न-माम ॥
अभ्या-वर्तध्व मुपमेत साक मयꣳ शास्ताऽधि पतिर्वो अस्तु ।
अस्य विज्ञान मनुसꣳ रभध्व मिमं पश्चा दनु जीवाथ सर्वे ॥

। पवमानं ।

हिरण्यवर्णाः श्शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यास्विन्द्रः ।
अग्निं या गर्भम् दधिरे विरूपास्तान आपश्शꣳ स्योना भवन्तु ॥
यासाꣳ राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यम् जनानाम् ।
मधुश्चुतश्शुचयो याः पावकास्ता न आपश्शꣳ स्योना भवन्तु ॥
यासाम् देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति ।
याः पृथिवीम् पयसोन्दन्ति शुक्रास्ता न आपश्शꣳ स्योना भवन्तु ॥
शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापश्शिवया तनुवोप स्पृशत त्वचम् मे ।
सर्वाꣳ अग्नीꣳ रप्सुषदो हुवो वो मयि वर्चो बलमोजो निधत्त ॥

यदद स्सं प्रयती रहा वनदता हते ।
तस्मा दानद्यो नाम स्थ-तावो नामानि सिन्धवः ।
यत् प्रेषिता वरुणेन ताश्शी भं सम-वल्गत ।
तदाप्नो दिन्द्रो वोयती स्तस्मा-दापो अनुस्थन ।
अपका-मँ स्यन्दमाना अवीवर-तवो हिकं ।
इन्द्रो व श्शक्तिभि र्देवी स्तस्मा द्वार्णा मवो हितं ।
एको देवो अप्य-तिष्ठ थ्स्यन्दमाना यथा वशं ।
उदानिषु-र्महीरिति तस्मा दुदक मुच्यते ।
आपो भद्रा घृत-मिदाप आस-रग्नी षोमौभि प्रत्याप इत्ताः ।
तीव्रो रसो मधु-पृचा मरंगम आमा प्राणेन सहवर्च सागन्न् ।
आदित्पश्या म्युतवा शृणो म्यामा घोषो गच्छति वाङ न आसां ।
मन्ये भेजानो अमृतस्य तरहि हिरण्यवर्णा अतृपं यदावः ।
आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥
योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिव मातरः ॥
तस्मा अरंगमाम वो यस्यक्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥
दिवि-श्रयस्वा न्तरिक्षे यतस्व पृथिव्या संभव ब्रह्मवर्चस-मसि ब्रह्मवर्चसा-यत्वा ।

**। पवमान सूक्तम् ।**

पवमानस्सुवर्जनः । पवित्रेण विचर्षणिः । यः पोता स पुनातु मा । पुनन्तु मा देवजनाः ।
पुनन्तु मनवो धिया । पुनन्तु विश्व आयवः । जातवेदः पवित्रवत् ।
पवित्रेण पुनाहि मा । शुक्रेण देवदीद्यत् । अग्ने क्रत्वा क्रतूँ रनु ।
यत्ते पवित्रमर्चिषि । अग्ने विततमन्तरा । ब्रह्म तेन पुनीमहे ।

उभाभ्यां देवसवितः ।पवित्रेण सवेन च । इदं ब्रह्म पुनीमहे । वैश्वदेवी पुनती देव्यागात् ।

यस्यै बह्वीस्तनुवो वीतपृष्ठाः । तया मदन्तः सधमाद्येषु ।

वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम् । वैश्वानरो रश्मिभिर्मा पुनातु ।

वातः प्राणेनेषिरो मयो भूः । ध्यावापृथिवी पयसा पयोभिः ।

ऋतावरी यज्ञिये मा पुनीताम् । बृहद्भिः सवितस्तृभिः । वर्षिष्ठैर्देवमन्मभिः ।

अग्ने दक्षैः पुनाहि मा । येन देवा अपुनत । येनापो दिव्यंकशः ।

तेन दिव्येन ब्रह्मणा । इदं ब्रम्ह पुनीमहे । यः पावमानीरध्येति ।

ऋषिभिस्सम्भृतꣳ रसम् । सर्वꣳ स पूतमश्नाति । स्वदितम् मातरश्विना ।

पावमानीर्यो अध्येति । ऋषिभिस्सम्भृतꣳ रसम् । तस्मै सरस्वती दुहे ।

क्षीरꣳ सर्पिर्मधूदकम् । पावमानीस्स्वस्तयनीः । सुदुघाहि पयस्वतीः ।

ऋषिभिस्सम्भृतो रसः । ब्राह्मणेष्वमृतꣳ हितम् । पावमानीर्दिशन्तु नः ।

इमं लोकमथो अमुम् । कामान्थ्समर्धयन्तु नः । देवीर्देवैः समाभृताः ।

पावमानीस्स्वस्त्ययनीः । सुदुघाहि घृतश्चुतः । ऋषिभिस्संभृतो रसः ।

ब्राह्मणेष्वमृतꣳ हितम् । येन देवाः पवित्रेण । आत्मानं पुनते सदा ।

तेन सहस्रधारेण । पावमान्यः पुनन्तु मा । प्राजापत्यम् पवित्रम् ।

शतोध्यामꣳ हिरण्मयम् । तेन ब्रह्म विदो वयम् । पूतं ब्रह्म पुनीमहे ।

इन्द्रस्सुनीती सहमा पुनातु । सोमस्स्वस्त्या वरुणस्समीच्या ।

यमो रजा प्रमृणाभिः पुनातु मा । जातवेदा मोर्जयन्त्या पुनातु । भूर्भुवस्सुवः ।

तच्छं योरावृणीमहे । गातुं यज्ञाय । गातुं यज्ञपतये । दैवीस्स्वस्तिरस्तु नः ।

स्वस्तिर्मानुषेभ्यः । ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् । शन्नो अस्तु द्विपदे । शं चतुष्पदे ।

ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ।

## । वास्तोष्पते मंत्रं ।

वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः ।
यत्वे महे प्रति तन्नो  जुषस्व शन्न एधि द्विपदे शं चतुष्पदे  ।
वास्तोष्पते शग्मया सꣳसदाते सक्षीमहिरण्वया गतुमत्या  ।
आवः , क्षेम उत योगे वरन्नो यूयं पात स्वस्तिभि स्सदानः  ।
वास्तोष्पते  प्रतरणो न एधि गोभिरश्वे भिरिन्दो  ।
अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव  पुत्रान्  प्रतिनो जुषस्व  ।
अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्या विशन्न्  । सखा सुशेव एधिनः ।
शिवꣳ शिवं भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवो भूर्भुवस्सुवः  ॥

## । वरुण सूक्तम् ।

उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय ।
अथा वयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम ।
अस्तभ्नाद्-द्या मृषभो अन्तरिक्ष मिमिमीत वरिमाणं पृथिव्या
आसीदद्विश्वा भुवनानि सम्राड् विश्वेत्तानि वरुणस्य व्रतानि ।
यत्किञ्चेदम् वरुणदैव्यै जनेऽभिद्रोहं मनुष्या श्चरामसि ।
अचित्ती यत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मा देनसो देव रीरिषः ॥
कितवासो यद्रि-रिपुर्न दीवि यद्वाघा सत्य मुतयन्न विद्म ।
सर्वा ता विष्य शिथिरेव देवा था-ते स्याम वरुणप्रियासः ॥
अव ते हेडो वरुण नमो भिरव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः ।
क्षयन्नस्मभ्य मसुर प्रचेतो राजन्नेनाꣳसि शिश्रथः कृतानि ॥

तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमान स्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न आयुः प्रमोषीः॥
ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः।

॥ ब्रह्मः सूक्तम्॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ता द्विसीमत स्सुरुचो वेन आवः।
स बुध्निया उपमा अस्य विष्ठा सतश्च योनि मसतश्च विवः।
पिता विराजा मृषभो रयीणा मन्तरिक्षं विश्वरूप आविवेश।
तमर्कैरभ्यर्चन्ति वत्सं ब्रह्म सन्तं ब्रह्मणा वर्धयन्तः।
ब्रह्म देवा नजन यद् ब्रह्म विश्वमिदं जगत्।
ब्रह्मणः , क्षत्र-न्निर्मितं ब्रह्म ब्राह्मण आत्मना।
अन्तरस्मि न्निमे लोका अन्तर्विश्व मिदं जगत्।
ब्रह्मैव भूतानां ज्येष्ठं तेन कोऽर्हति स्पर्धितुम्।
ब्रह्मन्देवा स्त्रयस्त्रिꣳ शद् ब्रह्म-न्निन्द्र प्रजापती।
ब्रह्मन् , ह विश्वा भूतानि नावीवान्तः समाहिता।
चतस्र आशाः प्रचरन्त्वग्नय इम न्नो यज्ञं-न्नयतु प्रजानन्।
घृतं पिन्वन्नजरꣳ सुवीरं ब्रह्म समिद्भव त्याहुतीनाम्।
ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः।

। विष्णुः सूक्तम्।

विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजाꣳ सि यो
अस्क भाय-दुत्तरꣳ सधस्थं विचक्रमाण स्त्रेधोरुगायः॥

तदस्य प्रियमभिपाथो अश्याम्। नरो यत्र देवयवो मदन्ति।
उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था। विष्णोः पदे परमे मध्व उत्थ्सः।
प्रतद्विष्णु स्स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्यो रुषु त्रिषु विक्रमणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।
परो मात्रया तनुवा वृधान। न ते महित्व मन्वश्नुवन्ति॥
उभे ते विश्व रजसि पृथिव्या विष्णो देवत्वम्। परमस्य विथ्से।
विचक्रमे पृथिवी मेष एताम्। क्षेत्राय विष्णु-र्मनुषे दशस्यन्।
ध्रुवासो अस्य कीरयो जनासः। उरुक्षितिँ सुजनिमाचकार।
विचक्रमे शतर्चसं महित्वा। प्रविष्णु-रस्तु तव-सस्तवीयान्।
त्वेषँ ह्यस्य स्थविरस्य नाम॥ ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः।

**। रुद्रः सूक्तम्।**

परिणो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः।
अव स्थिरा मघवद्भ्य स्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृडय॥
स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगन्न भीममुपहत्नुमुग्रम्।
मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यन्ते अस्म-न्निवपन्तु सेनाः॥
मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव।
परमे वृक्ष आयुधन्निधाय कृत्तिं वसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि॥
अर्हन्बिभर्षि सायकानि धन्व। अर्हन्निष्कं यजतं विश्वरूपम्।
अर्हन्निदं दयसे विश्वमभुवं। न वा ओजीयो रुद्र त्वदस्ति॥
त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्वँ शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे।
त्वं वातै रुरुणैर् यासि शंगयस्त्वं पूषा विधतः पासि नुत्मना॥

आ वो राजान मध्वरस्य रुद्रꣳ होतारꣳ सत्य यजꣳ रोदस्योः ।
अग्निं पुरातन यित्नोरचित्ता द्धिरण्य रूप मवसे कृणुध्वम् ॥
ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ।

## ॥ दुर्गा सूक्तम् ॥

जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः ॥
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।
दुर्गां देविꣳ शरणमहं प्रपद्ये सुतर सितरसे नमः ॥
अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्थ्स्वस्ति भिरति दुर्गाणि विश्वा ।
पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शंयोः ॥
विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुन्न नावा दुरिताऽतिपर्षि ।
अग्ने अत्रिवन्मनसा गृणानोऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम् ॥
पृतना जितꣳ सहमान-मुग्र-मग्निꣳ हुवेम परमाथ्स-धस्थात् ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवो अति दुरिता-त्यग्निः ॥
प्रत्नोषि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सथ्सि ।
स्वाञ्चाग्ने तनुवं पिप्रयस्वा स्मभ्यं च सौ-भगमायजस्व ॥
गोभिर्जुष्ट -मयुजो निषिक्तं तवेन्द्र विष्णो-रनुसंचरेम ।
नाकस्य पृष्ठमभि संवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम् ॥
ॐ कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारि धीमहि । तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥ ॥
ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ।

## ॥श्री सूक्तम्॥

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरज-तस्रजाम्।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मी-मनपगामिनीम्।

यस्या हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्।

श्रियं देवी मुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

कां-सोस्मितां हिरण्य प्राकारा मार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।

पद्मे स्थितां पद्म वर्णां तामिहो-पह्वये श्रियम्॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरण-महं प्रपद्येऽ(अ)लक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पति-स्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।

तस्य फलानि तपसानुदन्तु-मायान्त-रायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।

प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मि-न्कीर्ति-मृद्धिं ददातु मे॥

क्षुत्पिपासा-मलां ज्येष्ठा-मलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।

अभूति-मसमृद्धिं च सर्वां निर्णुदमे गृहात्॥

गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।

ईश्वरीँ सर्व भूता नां तामिहो-पह्वये श्रियम्॥

मनसः काम-माकूतिं वाचः सत्य-मशीमहि।

पशूनां रूप-मन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।

श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत-वसमे गृहे ।

निचदेवीं मातरꣳ श्रियं वासय मे कुले ॥

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।

सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मी-मनप-गामिनीम् ।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो-दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥

पद्मप्रिये पद्मिनि पद्महस्ते पद्मालये पद्मदलाय-ताक्षि ।

विश्वप्रिये विश्व-मनोनुकूले त्वत्पाद-पद्मं मयि संन्निधत्स्व ॥

महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि । तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥

श्री वर्चस्य मायुष्य मारोग्य माविधात् शोभमानं महीयते ।

धान्यं धनं पशुं बहुपुत्र लाभं शत-संवत्सरं दीर्घमायुः ॥

ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ।

## ॥ भूः सूक्तम् ॥

भूमिर्भूम्ना द्यौर्वरिणाऽन्तरिक्षं महित्वा ।

उपस्थे ते देव्यदि-तेऽग्नि मन्नाद मन्ना-द्यायादधे ॥

आऽयङ्गौः पृश्निरक्रमी दसनन्मातरं पुनः । पितरं च प्रयन्त्सुवः ॥

त्रिꣳ शद्धाम विराजति वाक्पतङ्गाय शिश्रिये । प्रत्यस्य वह द्युभिः ॥

अस्य प्राणादपान-त्यन्त-श्चरति रोचना। व्यख्यन् महिषः सुवः॥
यत्त्वा क्रुद्धः परोवप मन्युना यदवर्त्या। सुकल्पमग्ने तत्तव पुनस्त्वोद्दी पयामसि॥
यत्ते मन्युपरोप्तस्य पृथिवी मनुदध्वसे। आदित्या विश्वे त-द्देवा वसवश्च समाभरन्न्॥
मनो ज्योति-र्जुषता माज्यं विच्छिन्नं यज्ञꣳ समिमं दधातु।
बृहस्पति स्तनुता मिमं-नो विश्वे देवा इह मादयन्ताम्॥
सप्त ते अगने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि।
सप्त होत्राः सप्त धात्वा यजन्ति सप्त योनीरा पृणस्वा घृतेन॥
पुन-रूर्जा निवर्तस्व पुन-रग्न इहाऽऽयुषा। पुनर्नः पाहि विश्वतः॥
सहरंय्या निवर्त-स्वाऽग्ने पिन्वस्व धारया। विश्वप्स्निया विश्व-तस्परि॥
लेकः सलेकः सुलेकस्ते न आदित्या आज्यं जुषाणा वि यन्तु
केतः सकेतः सुकेतस्ते न आदित्या आज्यं जुषाणा वि यन्तु
विवस्वाꣳ अदिति देव जूतिस्ते न आदित्या आज्यं जुषाणा वि यन्तु॥
ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः।

## ॥ भाग्य सूक्तम्॥

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रꣳ हवामहे प्रातर्मित्रा वरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रात-सोम-मुत रुद्रꣳ हुवेम।
प्रातर्जितं भग-मुग्रꣳ हुवेम वयं पुत्र-मदितेर्यो विधर्ता।
आघ्र-श्चिद्यं मन्यमान-स्तुर श्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह।
भग प्रणेत-र्भग सत्यराधो भगेमां धियमुद वददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वै र्भग प्रनृभि र्नृवन्त स्याम।
उतेदानीं भगवन्त स्या-मोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।

उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवाना॰ सुमतौ स्याम ।
भग एव भगवा॰ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्त स्याम ।
तन्त्वा भग सर्व इज्जोहवीमि सनो भग पुर एता भवेह ।
समध्वरायो षसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय ।
अर्वाचीनं वसुविदं भगन्नो रथमिवा-श्वा वाजिन आवहन्तु ।
अश्वावती र्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।
यो माऽग्ने भागिन॰ सन्त मथा भा॰ चिकीऋषति ।
अभागमग्ने तं कुरु मामग्ने भागिनं कुरु ॥
ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ।

॥ मृत्यु सूक्तम् ॥

हरि॰ हरन्त मनुयन्ति देवाः । विश्व-स्येशानं वृषभं मतीनाम् ।
ब्रह्म सरूप मनु मेद-मागात् । अयनं मा विवधी र्विक्रमस्व ॥
मा छिदो मृत्यो मा वधीः ॥ मा मे बलं विवृहो मा प्रमोषीः ।
प्रजां मा मे रीरिष आयु-रुग्र । नृचक्षसं त्वा हविषा विधेम ॥
सद्यश्च कमा-नाय । प्रवे-पानाय मृत्यवे ।
प्रास्मा आशा अशृण्वन्न् । कामेना जनयन् पुनः ॥
कामेन मे काम आगात् । हृदयाद् धृदयं मृत्योः ।
यदमीषा मदः प्रियम् । तदै-तूप मा-मभि ॥
परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थाम् । यस्ते स्व इतरो देवयानात् ।

चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि । मा नः प्रजा॰ रीरिषो मोत वीरान् ॥
प्र पूर्व्यं मनसा वन्दमानः । नाधमानो वृषभं चर्षणीनाम् ।
यः प्रजानामेकराण-मानुषीणाम् ॥ मृत्युं यजे प्रथमजा-मृतस्य ॥
सर्वेषु वा एषु लोकेषु मृत्यवोऽन्वा-यत्ताः ।
तेभ्यो यदा-हुतीर्न जुहुयात् । लोके लोक एनं मृत्यु-र्विन्देत् ।
मृत्यवे स्वाहा मृत्यवे स्वाहे त्यभि पूर्व माहुती र्जुहोति ।
लोका ल्लोका देव मृत्यु मव यजते । नैनं लोके लोके मृत्यु र्विन्दति ॥
यद मुष्मै स्वाहाऽमुष्मै स्वाहेति जुह्वथ्सं चक्षीत ।
बहुं मृत्यु-म मित्रं कुर्वीत । मृत्यवे स्वाहेत्ये कस्मा एवैकां जुहुयात् ।
एको वा अमुष्मिन् ल्लोके मृत्युः । अश-नया मृत्यु रेव ।
तमेवा मुष्मिन् ल्लोकेऽव यजते ॥
भ्रूण हत्यायै स्वाहे त्यवभृथ आहुतिं जुहोति । भ्रूण हत्या मेवाव यजते ॥
तदाहुः । यद् भ्रूण हत्या ऽपात्र्याऽथ । कस्मा द्यज्ञेऽपि क्रियत इति ॥
अ मृत्युर्वा अन्यो भ्रूण हत्याया इत्याहुः । भ्रूण हत्या वाव मृत्यु-रिति ।
यद् भ्रूण हत्यायै स्वाहे त्यवभृथ आहुतिं जुहोति ।
मृत्युमे वाहुत्या तर्प-यित्वा परिपाणं कृत्वा । भ्रूण-ध्ने भेषजं करोति ॥
एता॰ ह वै मुण्डिभ औदन्यवः । भ्रूण हत्यायै प्रायश्चितिं विदाञ्चकार ।
यो हास्यापि प्रजायां ब्राह्मण॰ हन्ति । सर्वस्मै तस्मै भेषजं करोति ॥
जुम्बकाय स्वाहे त्यवभृथ उत्तमा माहुतिं जुहोति ।
वरुणो वै जुम्बकः । अन्तत एव वरुण मव यजते ॥
खलते र्विक्लि-धस्य शुक्लस्य पिङ्गा-क्षस्य मूर्ध ञ्जुहोति ।

एतद्वै वरुणस्य रूपम्। रूपेणैव वरुण मव यजते ॥
अपैतु मृत्यु रमृतं न आगन्वैव स्वतो नो अभयं कृणोतु।
पर्णं वनस्पते रिवाभि न-श्शीयताꣳ रयि स्सचतां न-श्शची पति ॥
परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाꣳ रीरिषो मोत वीरान्॥
वातं प्राणं मनसा ऽन्वार भामहे प्रजापतिं यो भुवनस्य गोपाः।
स नो मृत्यो स्त्रायतां पात्वꣳ हसो ज्योग्जीवा जरा मशीमहि ॥
अमुत्र भूया दध यद्य मस्य बृहस्पते अभि शस्तेर मुञ्चः।
प्रत्यौ हता मश्विना मृत्यु मस्मा द्देवाना मग्ने भिषजा शचीभिः ॥
शल्कै रग्नि मिन्धान उभौ लोकौ सने महम्।
उभयौ र्लोकयोर् ऋध्वाऽति मृत्युं तराम्यहम्॥
हरिꣳ हरन्त मनुयन्ति देवा विश्वस्येशानं वृषभं मतीनाम्।
ब्रह्म सरूप मनु मेद मागाद-यनं मा विवधी र्विक्रमस्व ॥
मा छिदो मृत्यो मा वधी र्मा-मे-बलं विवृहो मा प्रमोषीः।
प्रजां मा मे रीरिष आयु रुग्र नृचक्षसं त्वा हविषा विधेम ॥
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नोऽवधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवो रुद्र रीरिषः ॥
मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवधी र्हविष्मन्तो नमसा विधेम ते ॥
प्रजापते न त्वदेतन्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुम-स्तन्नो अस्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम्।

यत इन्द्र भयामहे ततोनो अभयं कृधि ।

मघवन् च्छग्धि तव तन्न ऊतये विद्विषो विमृधो जहि ।

स्वस्तिदा विशस्पति वृत्रहा विमृधो वशी ।

वृषेन्द्रः पुर एतु नस्स्व-स्तिदा अभयंकरः ॥

त्रयंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

अप मृत्यु-मपक्षुध-म-पेतः शपथं जहि ।

अधा नो अग्न आवह रायस्पोषꣳ सहस्रिणम् ॥

ये ते सहस्रमयुतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तवे ।

तान् यज्ञस्य मायया सर्वा नव यजामहे ॥ मृत्यवे स्वाहा मृत्यवे स्वाहा ॥

जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो निदहाति वेदः ।

स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः ॥

भू र्भुव स्स्वः । ओजो बलं । ब्रह्म क्षत्रं । यशो महत् । सत्यं तपो नाम ।

रूप ममृतम् । चक्षु श्श्रोत्रम् । मन आयुः । विश्वं यशो महः । समं तपो हरो भाः ।

जातवेदा यदि वा पावकोऽसि । वैश्वानरो यदि वा वैद्युतोसि ।

शं प्रजाभ्यो यजमानाय लोकम् । ऊर्जं पुष्टिं दद-दभ्याव वृथ्स्वा ॥

------- नक्षत्रे ------- राशौ जातस्य ------- शर्मणः मम (यजमानस्य )

मृत्यु र्नश्य त्वायु र्वर्धतां भूः ।

मृत्यु र्नश्य त्वायु र्वर्धतां भुवः ।

मृत्यु र्नश्य त्वायु र्वर्धताꣳ सुवः ।

मृत्यु र्नश्य त्वायु र्वर्धतां भू र्भुव स्सुवः ।

॥ आयुष्य सूक्तम् ॥

यो ब्रह्मा ब्रह्मण उज्जहार प्राणैः शिरः कृत्तिवासाः पिनाकी ।

ईशानो देवः स न आयुर्दधातु तस्मै जुहोमि हविषा घृतेन ॥

विभ्राजमानः सरिरस्य मध्या द्रोचमानो घर्म-रुचिर्य आगात् ।

स मृत्युपाशा नपनुद्य घोरा निहायुषेणो घृत-मत्तु देवः ॥

ब्रह्म ज्योति र्ब्रह्म पत्नीषु गर्भं यमा दधात् पुरु रूपं जयंतम् ।

सुवर्ण रंभ ग्रह मर्क-मर्च्यं तमायुषे वर्धयामो घृतेन ॥

श्रियं लक्ष्मी मौबला मंबिकां गां षष्ठीं च यामिंद्र सेनत्युदाहुः ।

तां विद्यां ब्रह्मयोनिँ सरूपा मिहायुषे तर्पयामो घृतेन ॥

दाक्षायण्यः सर्व योन्यः स योन्यः सहस्रशो विश्वरूपा विरूपाः ।

ससूनवः स-पतयः स-यूथ्या आयुषेणो घृत-मिदं जुषंताम् ॥

दिव्या गणा बहुरूपाः पुराणा आयुश्छिदो नः प्रमथ्नंतु वीरान् ।

तेभ्यो जुहोमि बहुधा घृतेन मानः प्रजाँ रीरिषो मोत वीरान् ॥

एकः पुरस्तात् य इदं बभूव यतो बभूव भुवनस्य गोपाः ।

यमप्येति भुवनँ सांपराये स नो हवि-घृत मिहायुषेत्तु देवः ॥

वसून् रुद्रा नादित्यान् मरुतोऽथ साध्यान् ऋभून् यक्षान् गंधर्वाँश्च पित्रूँश्च विश्वान् ।

भृगून् सर्पाँश्चां-गिरसोऽथ सर्वान् घृतँ हुत्वा स्वायुष्या महयाम शश्वत् ॥

विष्णो त्वं नो अंतमः शर्म -यच्छ सहंत्य । प्रतेधारा मधु-श्चुत उथ्सं दुह्रते अक्षितम् ॥

ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ।

। नवग्रह सूक्तम्।

ॐ आसत्येन रजसा वर्तमानो निवेशय -न्नमृतं मर्त्यं च।

हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवना विपश्यन्।

अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्व-वेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।

येषामीशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदा-मुत च द्विपदाम्।

निष्क्रीतोऽयं यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजमानस्य सन्तु॥

( ॐ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय भवते आदित्याय नमः॥ )

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा१ँ रेता१ँसि जिन्वति।

स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशनि। यच्छान-श्शर्म सप्रथाः।

क्षेत्रस्य पतिना वय१ँहिते नेव जयामसि। गामश्वं पोष -यिन्त्वा स नो मृडाती-दृशे॥

( ॐ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय भवते अङ्गारकाय नमः॥ )

ॐ प्रव-श्शुक्राय भानवे भरध्व१ँ हव्यं मतिं चाग्नये सुपूतम्।

यो दैव्यानि मानुषा जनू१ँ ष्यन्तर्विश्वानि विद्म ना जिगाति।

इन्द्राणीमासु नारिषु सुपत्नी महमश्रवम्। न ह्यस्या अपरंचन जरसा मरते पतिः।

इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माक-मस्तु केवलः॥

( ॐ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय भवते शुक्राय नमः॥ )

ॐ आप्याय-स्व-समेतु ते विश्वत -स्सोम वृष्णियम्। भवा वाजस्य संगथे।

अप्सुमे सोमो अब्रवी-दन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निंच विश्वशंभुव-मापश्च विश्व भेषजीः।

गौरी मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।

अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्॥

( ॐ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय भवते सोमाय नमः॥ )

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृह्येन-मिष्टापूर्ते स१ँसृजेथा-मयञ्च ।
पुनः कृण्व१ँस्त्वा पितरं युवान-मन्वाता१ँसीत्वयि तन्तुमेतम् ।
इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य-पा१ँ सुरे ।
विष्णो रराटमसि विष्णोः पृष्ठमसि विष्णो-श्श्नप्त्रेस्थो
विष्णो-स्स्यूरसि विष्णो-र्ध्रुवमसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥
( ॐ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय भवते बुधाय नमः ॥ )
ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद् -द्द्युमद्विभाति क्रतु -मज्जनेषु ।
यद्दिदय च्चवसर्त प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम् ।
इन्द्रमरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते अपिब-स्सुतस्य ।
तव प्रणीती तव शूरशर्म-न्नाविवासन्ति कवयसु-यज्ञाः ।
ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ता-द्विसीमत-स्सुरुचो वेन आवः ।
सबुध्निया उपमा अस्य विष्ठाः स्सतश्च योनि-मसतश्च विवः ॥
( ॐ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय भवते बृहस्पतये नमः ॥ )
ॐ शन्नो देवी-रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयो-रभिस्त्रवन्तु नः ।
प्रजापते न त्वदेत-न्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुम-स्तन्नो अस्तु वय१ँस्याम पतयो रयीणाम् ।
इमं यम-प्रस्तरमाहि सीदाऽङ्गि-रोभिः पितृभि स्संविदानः ।
आत्वा मत्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषा मादयस्व ॥
( ॐ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय भवते शनैश्चराय नमः ॥ )
ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदा-वृधस्सखा । कया शचिच्छया वृता ।
आऽयङ्गौः पृश्निरक्रमी-दसनन्मातरं पुनः । पितरञ्च प्रयन्त्सुवः ।

यत्ते देवी निर्ऋतिरा-बबन्ध दाम ग्रीवा-स्वविचर्त्यम् ।
इदन्ते तद्विष्या-म्यायुषो न मध्या-दथाजीवः पितुमद्धि प्रमुक्तः ॥
( ॐ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय भवते राहवे नमः ॥ )

ॐ केतुंकृण्वन्न -केतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भि-रजायथा ।
ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीना-मृषिर्वि-प्राणां महिषो मृगाणाम् ।
श्येनो-गृध्राणाꣳ स्वधितिर्वनानाꣳ सोमः पवित्र-मत्येति रेभन् ।
सचित्र चित्रं चितयन्त-मस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम् ।
चन्द्रं रयिं पुरुवीरम् बृहन्तं चन्द्रचन्द्राभि-र्गृणते युवस्व ॥
( ॐ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहितेभ्यो भवतद्भ्यः केतुभ्यो नमः ॥ )

ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ।

॥ दिक्पालकाः ॥

त्रातार-मिन्द्र मवितार-मिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ।
हुवेनु-शक्रं पुरुहूत-मिद्रꣳ स्वस्तिनो मघवाऽधात्विन्द्रः ॥

त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽव यासि सीष्ठाः ।
यजिष्ठो वह्नि तम श्शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳ सि प्रमु मुग्ध्यस्मत् ॥

सुगन्नः पन्था मभयं कृणोतु । यस्मिन् नक्षत्रे यम एति राजा ।
यस्मि -न्नेन मभ्य-षिञ्चन्त देवाः । तदस्य चित्रꣳ हविषा यजाम ॥
अप पाप्मानं भरणी र्भरन्तु ॥

असुन्वन्त मयज-मान मिच्छ स्तेन स्येत्यां तस्कर स्या-न्वेषि ।
अन्य मस्म-दिच्छ सात इत्या नमो देवि निरृते तुभ्यमस्तु ॥

तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमान-स्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न आयुः प्रमोषीः ॥
आनो नियुद्भिः शति नी भिरध्वरं । सहस्रिणी-भि रुप याहि यज्ञम् ।
वायो अस्मिन् हविषि मादयस्व । यूयं पातः स्वस्तिभिः सदानः ॥
वयꣳ सोम व्रते तव । मनस्त-नूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तो अशीमहि ॥
तमीशानं जगत स्त स्थुष स्पतिम् । धियं जिन्व मवसे हूमहे वयम् ।
पूषानो यथा वेदसा मस-द्वृधे रक्षिता पायु रदब्धः स्वस्तये ॥
अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्र हत्ये भरहूतो सजोषाः ।
य श्शंसते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा अस्मां अवन्तु देवाः ॥
स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशनि ।
यच्छान-श्शर्म सप्रथाः ।

**॥ नक्षत्र वाक्यं ॥**

अग्निर्नः पातु कृत्तिकाः । नक्षत्रं देवमिन्द्रियम् ।
इदमासां विचक्षणम् । हविरासं जुहोतन ।
यस्य भान्ति रश्मयो यस्य केतवः । यस्येमा विश्वा भुवनानि सर्वा ।
स कृत्तिकाभि रभि संवसानः । अग्निर्नो देव स्सुविते दधातु ॥
प्रजापते रोहिणी वेतु पत्नी । विश्वरूपा बृहती चित्र भानुः ।
सा नो यज्ञस्य सुविते दधातु । यथा जीवेम शरद स्सवीराः ।
रोहिणी देव्युदगा त्पुरस्तात् । विश्वा रूपाणि प्रति मोदमाना ।
प्रजापतिꣳ हविषा वर्धयन्ती । प्रिया देवाना मुपयातु यज्ञम् ॥

सोमो राजा मृगशीर्षेण आगन्न्। शिवं नक्षत्रं प्रियमस्य धाम।
आप्यायमानो बहुधा जनेषु। रेतः प्रजां यजमाने दधातु।
यत्ते नक्षत्रं मृगशीर्ष मस्ति। प्रियꣳ राजन् प्रियतमं प्रियाणाम्।
तस्मै ते सोम हविषा विधेम। शन्न एधि द्विपदे शं चतुष्पदे॥
आर्द्रया रुद्रः प्रथमा न एति। श्रेष्ठो देवानां पति रघ्नि यानाम्।
नक्षत्र मस्य हविषा विधेम। मा नः प्रजाꣳ रीरिषन्मोत वीरान्।
हेति रुद्रस्य परिणो वृणक्तु। आर्द्रा नक्षत्रं जुषताꣳ हविर्नः।
प्रमुञ्चमानौ दुरितानि विश्वा। अपाघशꣳसन्नुदता मरातिम्।॥

पुनर्नो देव्य दिति स्पृणोतु। पुनर्वसूनः पुनरेतां यज्ञम्।
पुनर्नो देवा अभियन्तु सर्वे। पुनः पुनर्वो हविषा यजामः।
एवा न देव्य दितिर नर्वा। विश्वस्य भर्त्री जगतः प्रतिष्ठा।
पुनर्वसू हविषा वर्धयन्ती। प्रियम् देवाना मप्येतु पाथः॥

बृहस्पतिः प्रथमं जायमानः। तिष्यम् नक्षत्र मभि संबभूव।
श्रेष्ठो देवानां पृतनासु जिष्णुः। दिशोऽनु सर्वा अभयन्नो अस्तु।
तिष्यः पुरस्ता दुत मध्यतो नः। बृहस्पतिर्नः परिपातु पश्चात्।
बाधेता न्द्वेषो अभयं कृणुताम्। सुवीर्यस्य पतय स्याम॥

इदꣳ सर्पेभ्यो हविरस्तु जुष्टम्। आ श्रेषा येषा मनुयन्ति चेतः।
ये अन्तरिक्षं पृथिवीं क्षियन्ति। ते न स्सर्पासो हव मागमिष्ठाः।
ये रोचने सूर्य स्यापि सर्पाः। ये दिवं देवी मनु सञ्चरन्ति।
येषामा श्रेषा अनुयन्ति कामम्। तेभ्य स्सर्पेभ्यो मधुम ज्जुहोमि॥

उपह्रूताः पितरो ये मघासु । मनोजवसस्सुकृतस्सुकृत्याः ।
ते नो नक्षत्रे हवमागमिष्ठाः । स्वधाभिर्यज्ञं प्रयतं जुषन्ताम् ।
ये अग्निदग्धा येऽनग्निदग्धाः । येऽमुल्लोकं पितरः, क्षियन्ति ।
याꣳश्च विद्मयाꣳ उच्चन प्रविद्म । मघासु यज्ञꣳ सुकृतम् जुषन्ताम् ॥
गवां पतिः फल्गुनी नामसि त्वम् । तदर्यमन् वरुण मित्र चारु ।
तं त्वा वयꣳ सनितारꣳ सनीनाम् । जीवा जीवन्त मुप संविशेम ।
येनेमा विश्वा भुवनानि सञ्जिता । यस्य देवा अनुसंयन्ति चेतः ।
अर्यमा राजाऽजरस्तु विष्मान् । फल्गुनीना मृषभो रोर वीति ॥
श्रेष्ठो देवानाम् भगवो भगासि । तत्वा विदुः फल्गुनीस्तस्य वित्तात् ।
अस्मभ्यं क्षत्र मजरꣳ सुवीर्यम् । गोम दश्व वदु पसन्नु देह ।
भगोह दाता भग इत्प्रदाता । भगो देवीः फल्गुनी रावि वेश ।
भग स्येत्तं प्रसवं गमेम । यत्र देवैस्सधमादं मदेम । ॥
आयातु देव स्सवितो पयातु । हिरण्य येन सुवृता रथेन ।
वहन् हस्तꣳ सुभꣳ विद्मना पसम् । प्रयच्छन्तं पपुरिं पुण्य मच्छ ।
हस्तः प्रयच्छ त्वमृतं वसीयः । दक्षिणेन प्रति गृभ्णीम एनत् ।
दातार मद्य सविता विदेय । यो नो हस्ताय प्रसुवाति यज्ञम् ॥
त्वष्टा नक्षत्र मभ्येति चित्राम् । सुभꣳ ससं युवतिꣳ रोचमानाम् ।
निवेश यन्न मृता न्मर्त्याꣳश्च । रूपाणि पिꣳशन् भुवनानि विश्वा ।
तन्न स्त्वष्टा तदु चित्रा विचष्टाम् । तन्नक्षत्रं भूरिदा अस्तु मह्यम् ।
तन्नः प्रजां वीरवतीꣳ सनोतु । गोभिर्नो अश्वै स्समनक्तु यज्ञम् ॥

वायुर्नक्षत्र मभ्येति निष्ट्याम्। तिग्म शृंगो वृषभो रोरुवाणः।
समीरयन् भुवना मातरिश्वा। अप द्वेषाꣳसि नुदता मरातीः।
तन्नो वायु स्तदु निष्ट्या शृणोतु। तन्नक्षत्रं भूरिदा अस्तु मह्यम्।
तन्नो देवासो अनुजानन्तु कामम्। यथा तरेम दुरितानि विश्वा॥
दूर मस्म च्छत्रवो यन्तु भीताः। तदिन्द्राग्नी कृणुताम् तद्वि शाखे।
तन्नो देवा अनुमदन्तु यज्ञम्। पश्चात् पुरस्ता दभयन्नो अस्तु।
नक्षत्राणा मधिपत्नी विशाखे। श्रेष्ठा विन्द्राग्नी भुवनस्य गोपौ।
विषूच श्शत्रू नप बाधमानौ। अप क्षुध न्नुदता मरातिम्।॥

पूर्णा पश्चादुत पूर्णा पुरस्तात्। उन्मध्यतः पौर्णमासी जिगाय।
तस्यां देवा अधि संवसन्तः। उत्तमे नाक इह मादयन्ताम्।
पृथ्वी सुवर्चा युवतिः सजोषाः।पौर्णमा स्युदगा च्छोभमाना।
आप्याययन्ती दुरितानि विश्वा। उरुं दुहां यजमानाय यज्ञम्॥

ऋद्ध्यास्म हव्यै र्नमसो पसद्य। मित्रं देवं मित्र धेयं नो अस्तु।
अनूराधान् हविषा वर्धयन्तः। शतं जीवेम शरदः सवीराः।
चित्रम् नक्षत्र मुदगा त्पुरस्तात्। अनूराधा स इति यद्व दन्ति।
तन्मित्र एति पथिभि र्देवयानैः। हिरण्ययै र्वितते रन्तरिक्षे॥

इन्द्रो ज्येष्ठा मनु नक्षत्र मेति। यस्मिन् वृत्रं वृत्र तूर्ये ततार।
तस्मि न्वय ममृतं दुहानाः। क्षुध न्तरेम दुरितिं दुरिष्टिम्।
पुरन्दराय वृषभाय धृष्णवे। अषाढाय सहमानाय मीढुषे।
इन्द्राय ज्येष्ठा मधु मद्दुहाना।उरुं कृणोतु यजमानाय लोकम्।॥

मूलं प्रजां वीरवतीं विदेय। पराच्येतु निर्ऋतिः पराचा।
गोभि र्नक्षत्रं पशुभि स्समक्तम्। अहर्भूया द्यजमानाय मह्यम्।
अहर्नो अद्य सुविते दधातु। मूलं नक्षत्र मिति यद्व दन्ति।
पराची वाचा निर्ऋतिं नुदामि। शिवं प्रजयै शिवमस्तु मह्यम्॥

या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुः। या अन्तरिक्ष उत पार्थि वीर्याः।
यासा मषाढा अनुयन्ति कामम्। ता न आपःशꣳ स्योना भवन्तु।
याश्च कूप्या याश्च नाद्या स्समुद्रियाः। याश्च वैशन्ती रुत प्रासचीर्याः।
यासा मषाढा मधु भक्ष यन्ति। ता न आपःशꣳ स्योना भवन्तु॥

तन्नो विश्वे उप शृण्वन्तु देवाः। तद षाढा अभि संयन्तु यज्ञम्।
तन्नक्षत्रं प्रथतां पशुभ्यः। कृषि र्वृष्टि र्यजमानाय कल्पताम्।
शुभ्राः कन्या युव तय स्सुपेशसः। कर्म कृत स्सुकृतो वीर्यावतीः।
विश्वान् देवान् हविषा वर्धयन्तीः। अषाढाः काम मुपायान्तु यज्ञम्॥

यस्मिन् ब्रह्मा भ्यजय त्सर्व मेतत्। अमुञ्च लोक मिद मूच सर्वम्।
तन्नो नक्षत्र मभि जिद्वि जित्य। श्रियं दधात्व हृणीय मानम्।
उभौ लोकौ ब्रह्मणा सञ्जि तेमौ। तन्नो नक्षत्र मभि जिद्वि चष्टाम्।
तस्मिन्वयं पृतना स्सञ्ज येम। तन्नो देवासो अनु जानन्तु कामम्॥

शृण्वन्ति श्रोणा ममृतस्य गोपाम्। पुण्यामस्या उप शृणोमि वाचम्।
मही न्देवी विष्णु पत्नी मजूर्याम्। प्रतीची मेनाꣳ हविषा यजामः।
त्रेधा विष्णु रुरुगायो विचक्रमे। महीं दिवं पृथिवी मन्तरिक्षम्।
तच्छ्रोणैति श्रव इच्छ मानाा। पुण्यꣳ श्लोकं यजमानाय कृण्वती॥

अष्टौ देवा वसव स्सोम्यासः। चतस्रो देवी रजराः श्रविष्ठाः।
ते यज्ञं पान्तु रजसः परस्तात्। संवत्सरीण ममृतꣳ स्वस्ति।
यज्ञं नः पान्तु वसवः पुरस्तात्। दक्षिणतोऽभियन्तु श्रविष्ठाः।
पुण्य न्नक्षत्र मभि संविशाम। मा नो अराति रघशꣳ साऽगन्न्॥
क्षत्रस्य राजा वरुणोऽधिराजः। नक्षत्राणाꣳ शतभिषग्वसिष्ठः।
तौ देवेभ्यः कृणुतो दीर्घमायुः। शतꣳ सहस्रा भेषजानि धत्तः।
यज्ञन्नो राजा वरुण उपयातु। तन्नो विश्वे अभि संयन्तु देवाः।
तन्नो नक्षत्रꣳ शतभिषग्जुषाणम्। दीर्घमायुः प्रतिर द्भेषजानि॥

अज एकपा दुदगा त्पुरस्तात्। विश्वा भूतानि प्रति मोदमानः।
तस्य देवाः प्रसवं यन्ति सर्वे। प्रोष्ठपदासो अमृतस्य गोपाः।
विभ्राजमान स्समिधा न उग्रः। आऽन्तरिक्ष मरुहद गन्द्याम्।
तꣳ सूर्यं देव मज मेकपादम्। प्रोष्ठपदासो अनुयन्ति सर्वे॥

अहिर्बुध्नियः प्रथमा न एति। श्रेष्ठो देवाना मुत मानुषाणाम्।
तं ब्राह्मणा स्सोमपा स्सोम्यासः। प्रोष्ठपदासो अभि रक्षन्ति सर्वे।
चत्वार एक मभि कर्म देवाः। प्रोष्ठपदा स इति यान् ,वदन्ति।
ते बुध्नियं परिषद्यꣳ स्तुवन्तः। अहिꣳ रक्षन्ति नमसोप सद्य॥

पूषा रेवत्य न्वेति पन्थाम्। पुष्टिपती पशुपा वाज बस्त्यौ।
इमानि हव्या प्रयता जुषाणा। सुगैर्नो यानै रुपयातां यज्ञम्।
क्षुद्रान् पशून् रक्षतु रेवती नः। गावो नो अश्वाꣳ अन्वेतु पूषा।
अन्नꣳ रक्षन्तौ बहुदा विरूपम्। वाजꣳ सनुतां यजमानाय यज्ञम्॥

तदश्विना वश्व युजोप याताम्। शुभङ्ग मिष्ठौ सुयमे भिरश्वैः।
स्वं नक्षत्रꣳ हविषा यजन्तौ। मध्वा सम्पृक्तौ यजुषा समक्तौ।
यौ देवानां भिषजौ हव्य वाहौ। विश्वस्य दूता व मृतस्य गोपौ।
तौ नक्षत्रं जुजुषाणो पयाताम्। नमोऽश्विभ्यां कृणुमोऽश्व युग्भ्याम्॥
अप पाप्मानं भरणी र्भरन्तु। तद्यमो राजा भगवान् विचष्टाम्।
लोकस्य राजा महतो महान्, हि। सुगं नः पन्था मभयं कृणोतु।
यस्मिन्नक्षत्रे यम एति राजा। यस्मि न्नेन मभ्यषिंचन्त देवाः।
तदस्य चित्रꣳ हविषा यजाम। अप पाप्मानं भरणी र्भरन्तु॥

॥ स्वाहा गारम्॥

अग्नये स्वाहा कृत्तिकाभ्यः स्वाहा। अम्बायै स्वाहा दुलायै स्वाहा।
नितन्त्यै स्वाहाऽभ्रयन्त्यै स्वाहा। मेघयन्त्यै स्वाहा वर्षयन्त्यै स्वाहा।
चुपुणिकायै स्वाहा।

प्रजापतये स्वाहा रोहिण्यै स्वाहा। रोचमानायै स्वाहा प्रजाभ्यः स्वाहा।

सोमाय स्वाहा मृगशीर्षाय स्वाहा। इन्वकाभ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा।
राज्याय स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहा।

रुद्राय स्वाहाऽऽद्रायै स्वहा। पिन्वमानायै स्वाहा पशुभ्यः स्वाहा।

अदित्यै स्वाहा पुनर्वसुभ्याम्। स्वाहा भूत्यै स्वाहा प्रजात्यै स्वाहा।

बृहस्पतये स्वाहा तिष्याय स्वाहा। ब्रह्मवर्चसाय स्वाहा।

सर्पेभ्यः स्वाहाऽऽश्रेषाभ्यः स्वाहा। दन्दशूकेभ्यः स्वाहा।

पितृभ्यः स्वाहा मघाभ्यः। स्वाहाऽनघाभ्यः स्वाहाऽगदाभ्यः।

स्वाहाऽरुन्धतीभ्यः स्वाहा।

अर्यम्णे स्वाहा फल्गुनीभ्याᳪं स्वाहा। पशुभ्यः स्वाहा।

भगाय स्वाहा फल्गुनीभ्याᳪं स्वाहा। श्रेष्ठ्याय स्वाहा।

सवित्रे स्वाहा हस्ताय। स्वाहा ददते स्वाहा पृणते।

स्वाहा प्रयच्छते स्वाहा प्रति गृभ्णते स्वाहा।

त्वष्ट्रे स्वाहा चित्रायै स्वाहा। चैत्राय स्वाहा प्रजायै स्वाहा।

वायवे स्वाहा निष्ट्यायै स्वाहा। कामचाराय स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहा।

इन्द्राग्निभ्याᳪं स्वाहा विशाखाभ्याᳪं स्वाहा। श्रेष्ठ्याय स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहा।

पौर्णमास्यै स्वाहा कामाय स्वाहा गत्यै स्वाहा।

मित्राय स्वाहाऽनूराधेभ्यः स्वाहा। मित्रधेयाय स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहा।

इन्द्रायस्वाहा ज्येष्ठायै स्वाहा। ज्यैष्ठयाय स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहा।

प्रजापतये स्वाहा मूलाय स्वाहा। प्रजायै स्वाहा।

अद्भ्यः स्वाहाऽषाढाभ्यः स्वाहा। समुद्राय स्वाहा कामाय स्वाहा।

अभिजित्यै स्वाहा।

विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहाऽषाढाभ्यः स्वाहा। अनपजय्याय स्वाहा जित्यै स्वाहा।

ब्रह्मणे स्वाहाऽभिजिते स्वाहा। ब्रह्मलोकाय स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहा।

विष्णवे स्वाहा श्रोणायै स्वाहा। श्लोकाय स्वाहा श्रुतायस्स्वाहा।

वसुभ्यः स्वाहा श्रविष्ठाभ्यः स्वाहा। अग्राय स्वाहा परीत्यै स्वाहा।

वरुणाय स्वाहा शतभिषजे स्वाहा। भेषजेभ्यः स्वाहा।

अजायैकपदे स्वाहा प्रोष्ठपदेभ्यः स्वाहा। तेजसे स्वाहा ब्रह्मवर्चसाय स्वाहा।

अहये बुध्नियाय स्वाहा प्रोष्ठपदेभ्यः स्वाहा। प्रतिष्ठायै स्वाहा।

पूष्णे स्वाहा रेवत्यै स्वाहा। पशुभ्यः स्वाहा।

अश्विभ्याꣳ स्वाहाऽश्वयुग्भ्याꣳ स्वाहा। श्रोत्राय स्वाहा श्रुत्यै स्वाहा।

यमाय स्वाहाऽपभरणीभ्यः स्वाहा। राज्याय स्वाहाऽभिजित्यै स्वाहा।

**॥ पंचशान्ति ॥**

शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः।

शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।

त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु।

तद्वक्तारमवतु। अवतु माम् । अवतु वक्तारम्॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः।

शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।

त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मा वादिषम्। ऋतम वादिषम्। सत्यम वादिषम्। तन्मामावीत्।

तद्वक्तारमावीत्। आवीन्माम् । आवीद्वक्तारम्॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।

तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

नमो वाचे या चोदिता या चानुदिता तस्यै वाचे नमो नमो वाचे नमो वाचस्पतये

नम ऋषिभ्यो मन्त्रकृद्भ्यो मन्त्रपतिभ्यो मा मामृषयो मन्त्रकृतो मन्त्रपतयः

परा दुर्माऽहमृषीन् मन्त्रकृतो मन्त्रपतीन् परादां वैश्वदेवीं वाचमुद्यासꣳ

शिवामदस्तां जुष्टां देवेभ्यः शर्म मे द्यौः शर्म पृथिवी शर्म विश्वमिदं जगत्।

शर्म चन्द्रश्च सूर्यश्च शर्म ब्रह्मप्रजापती।

भूतं वदिष्ये भुवनं वदिष्ये तेजो वदिष्ये यशो वदिष्ये तपो वदिष्ये ब्रह्म वदिष्ये

सत्यं वदिष्ये तस्मा अहमिद मुपस्तरण मुपस्तृण उपस्तरणं मे प्रजायै पशूनां

भूया दुपस्तरण महं प्रजायै पशूनां भूयासं प्राणापानौ मृत्योर्मा पातं प्राणापानौ

मा मा हासिष्टं मधु मनिष्ये मधु जनिष्ये मधु वक्ष्यामि मधु वदिष्यामि

मधुमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासꣳ शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मा देवा अवन्तु

शोभायै पितरोऽनुमदन्तु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

तच्छं योरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय। गातुं यज्ञपतये। दैवीस्स्वस्तिरस्तु नः।

स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्। शन्नो अस्तु द्विपदे।

शं चतुष्पदे ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

**॥ नमकम् ॥**

॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः॥

या त इषुः शिवतमा शिवम् बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया नो रुद्र मृडय॥

याते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥

यामिषुं गिरिशंत हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिꣳसीः पुरुषं जगत्॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि।यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमनाअसत्

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीꣳश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यः॥
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमाꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः
सहस्रशोऽवैषाꣳ हेड ईमहे॥
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः॥
उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः। नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे॥
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरन् नमः। प्रमुञ्च धन्वनस्त्व-मुभयोरार्त्नियोर्ज्याम्॥
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप। अवतत्य धनुस्तवꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे॥
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवोनः सुमना भव। विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाꣳउत॥
अनेशन्नस्येषव आभुरस्य निषङ्गथिः। या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः॥
तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिब्भुज। नमस्ते अस्त्वायुधायानातताय धृष्णवे॥
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्याम् तव धन्वने। परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः॥
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्। नमस्ते अस्तु भगवन्विश्वेश्वराय महादेवाय
त्रयम्बकाय त्रिपुरान्तकाय त्रिकाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युंजयाय
सर्वेश्वराय सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः ॥१॥
नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो
नमः सस्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो बभ्लुशाय विव्याधिनेऽन्नानां पतये नमो
नमो हरिकेशयोपवीतिने पुष्टाणं पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो
नमो रुद्रायाततताविने क्षेत्राणां पतये नमो नमस्सूतायाहन्त्याय वनानां पतये नमो
नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणं पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणं पतये नमो
नमो भुवंतये वारिवस्कृधायौषधीनां पतये नमो नम उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनाम् पतये नमो
नमः कृथ्त्नवीताय धावते सत्वनां पतये नमः ॥२॥
नमः सहमानाय निव्यादिन आव्याधिनीनां पतये नमो

नमः ककुभाय निषङ्गिणे स्तेनानां पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो
नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमो
नमः सृकाविभ्यो जिघाꣳसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो
नमोऽसिमद्भ्यो नक्तंचरद्भ्यः प्रकृन्तानां पतये नमो
नम उष्णीषिने गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नम इषुमद्भ्यो धन्वाविभ्यश्च वो नमो
नम आतन्वानेभ्य प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्यो विसृजद्भ्यश्च वो नमो
नमोऽस्यद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो नम आसीनेभ्यः शयानेभ्यश्च वो नमो
नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमो
नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमो अश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः ॥३॥

नम आव्यधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो
नम उगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो
नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो
नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यः, क्षुल्लकेभ्यश्च वो नमो
नमो रथिभ्योऽरथेभ्यश्च वो नमो नमो रथेभ्यो रथपतिभ्यश्च वो नमो
नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमः, क्षत्तृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो
नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो
नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यश्च वो नमो नम इषुकृद्भ्यो धन्वकृद्भ्यश्च वो नमो
नमो मृगयुभ्यः श्वनिभ्यश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः ॥४॥

नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च
नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च
नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशाय च शिपिविष्टाय च

नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च

नमो वृद्धाय च संवृद्धने च नमो अग्रियाय च प्रथमाय च

नम आशवे चाजिराय च नमः शीघ्रियाय च शीभ्याय च

नम ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमः स्त्रोतस्याय च द्वीप्याय च ॥५॥

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च

नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्नियाय च

नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च

नम उर्वर्याय च खल्याय च नमः श्लोक्याय चाऽवसान्याय च

नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च

नम आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभिन्दते च

नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमो बिल्मिने च कवचिने च

नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च ॥ ६ ॥

नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो दूताय च

प्रहिताय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च

नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च

नीप्याय च नमः सूद्याय च सरस्याय च नमो नाद्याय च वैशन्ताय च

नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च

नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नम ईध्रियाय चातप्याय च

नमो वात्याय च रेष्मियाय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च ॥ ७ ॥

नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः शङ्गाय च पशुपतये च

नम उग्राय च भीमाय च नमो अग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च

नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमश्शंभवे च मयोभवे च नमः शंकराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च
नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नम आतार्याय
चालाद्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च ॥ ८ ॥

नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च नमः किꣳशिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च
पुलस्तये च नमो गोष्ठ्याय च गृह्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च
नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च नमो ह्रदय्याय च निवेष्प्याय च
नमः पाꣳसव्याय च रजस्याय च नमः शुष्क्याय च हरित्याय च
नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्म्याय च नमः पर्ण्याय च
पर्णशद्याय च नमोऽपगुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आख्खिदते च
प्रख्खिदते च नमो वः किरिकेभ्यो देवानाꣳ हृदयेभ्यो नमो विक्षीणकेभ्यो
नमो विचिन्वत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यो नम आमीवत्केभ्यः ॥ ९ ॥

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्रन्नीललोहित ।
एषां पुरुषाणामेषां पशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किंचनाममत् ॥ १० ।१ ॥
या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाह भेषजी ।
शिवा रुद्रस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ॥ १० ।२ ॥
इमाꣳ रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतिम् । ।
यथा नः शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥ १० ।३ ॥
मृडा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते ।
यच्छं च योश्च मनुरायजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतौ ॥ १० ।४ ॥
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।

मा नोऽवधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा  नस्तनुवो रुद्र रीरिषः ॥ १० ।५ ॥

मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।

वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवधी र्हविष्मन्तो नमसा विधेम ते ॥ १० ।६ ॥

आरात्ते गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्नमस्मे ते अस्तु ।

रक्षा च नो अधि च देव ब्रूह्यधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः ॥ १० ।७ ॥

स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगन्न भीम-मुपहत्नुमुग्रम् ।

मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यन्ते अस्मन्निवपन्तु सेना ॥ १० ।८ ॥

परिणो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।

अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृडय ॥ १० ।९ ॥

मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव ।

परमे वृक्ष आयुधन्निधाय कृत्तिं वसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि ॥ १० ।१० ॥

विकिरिद विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः ।

यास्ते सहस्रꣳ हेतयोन्यमस्मन्निवपन्तु ताः ॥ १० ।११ ॥

सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तव हेतयः ।

तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ॥ १० ।१२ ॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम् ।

तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि ॥ ११ ।१ ॥

अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि ॥ ११ ।२ ॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः , क्षमाचराः ॥ ११ ।३ ॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः ॥ ११ ।४ ॥

ये वृक्षेषु सस्पिंजरा नीलग्रीवा विलोहिताः ॥ ११ ।५ ॥

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः ॥ ११ ।६ ॥

ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ॥ ११ ।७ ॥

ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा यव्युधः ॥ ११ ।८ ॥

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणः ॥ ११ ।९ ॥

य एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे

तेषाꣳ सहस्रभयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि ॥ ११ ।१० ॥

नमो रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येन्तरिक्षे ये दिवि येषामन्नं वातो वर्षमिष

वस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो

नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि ॥ ११ ।११ ॥

त्रयंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो-र्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ १ ॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु

यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु ॥ २ ॥

तमुष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयति भेषजस्य ।

यक्ष्वामहे सौमनसाय रुद्रं नभोभिर्देवमसुरं दुवस्य ॥ ३ ॥

अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः ।

अयं मे विश्वभेषजोऽयꣳ शिवाभिमर्शनः ॥ ४ ॥

ये ते सहस्रमयुतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तवे । तान् यज्ञस्य

मायया सर्वानव यजामहे । मृत्यवे स्वाहा मृत्यवे स्वाहा ॥ ५ ॥

ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि । प्राणानां ग्रन्थिरसि

रुद्रो मा विशान्तकः । तेनान्नेनाप्यायस्व ॥ ६ ॥

नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि ।

॥ ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ चमकम् ॥

अग्नाविष्णू सजोषसेमा वर्धन्तु वां गिरः। द्युम्नैर्वाजेभिरागतम्॥

वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रावश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवश्च मे प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च म आधीतं च मे वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च म ओजश्च मे सहश्च म आयुश्च मे जरा च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च मे ॥ १॥

ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्ष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे वशश्च मे त्विषिश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे सुपथं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे ॥ २॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भद्रं च मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च म ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुगं च मे शयनं च मे सूषा च मे सुदिनं च मे ॥ ३॥

ऊर्क्च मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतं च मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च म औद्भिद्यं च मे रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे

विभु च मे प्रभु च मे बहु च मे भूयश्च मे पूर्णं च मे पूर्णतरं च मेऽक्षितिश्च मे
कूयवाश्च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे व्रीहियश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे
मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे गोधूमाश्च मे मसुराश्च मे प्रियंगवश्च मेऽणवश्च मे
श्यामकाश्च मे नीवाराश्च मे ॥ ४ ॥

अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे
हिरण्यं च मेऽयश्च मे सीसं च मे त्रपुश्च मे श्यामं च मे लोहं च मेऽग्निश्च म आपश्च मे
वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्टपच्यं च मेऽकृष्टपच्यं च मे ग्राम्याश्च मे
पशव आरण्याश्च यज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे वसु च मे
वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म इतिश्च मे गतिश्च मे ॥ ५ ॥

अग्निश्च म इन्द्रश्च मे सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म इन्द्रश्च मे
सरस्वती च म इन्द्रश्च मे पूषा च म इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे
मित्रश्च म इन्द्रश्च मे वरुणश्च म इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे धाता च म इन्द्रश्च मे
विष्णुश्च म इन्द्रश्च मेऽश्विनौ च म इन्द्रश्च मे मरुतश्च म इन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा
इन्द्रश्च मे पृथिवी च म इन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे द्यौश्च म इन्द्रश्च मे
दिशश्च म इन्द्रश्च मे मूर्धा च म इन्द्रश्च मे प्रजापतिश्च म इन्द्रश्च मे ॥ ६ ॥

अꣳशुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपाꣳशुश्च मेऽन्तर्यामश्च म
ऐन्द्रवायश्च मे मैत्रावरुणश्च म आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च म
आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च म ऋतुग्रहाश्च मेऽतिग्राह्याश्च म
ऐन्द्राग्नश्च मे वैश्वदेवाश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे माहेन्द्रश्च म आदित्यश्च मे
सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पौष्णश्च मे पात्नीवतश्च मे हारियोजनश्च मे ॥ ७ ॥

इध्मश्च मे बर्हिश्च मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे स्रुचश्च मे चमसाश्च मे ग्रावाणश्च मे
स्वरवश्च म उपरवाश्च मेऽधिषवणे च मे द्रोणकलशश्च मे वायव्यानि च मे पूतभृच्च म
आधवनीयश्च म आग्नीध्रं च मे हविर्धानं च मे गृहाश्च मे सदश्च मे पुरोडाशाश्च मे
पचताश्च मेऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे ॥ ८ ॥

अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे
दितिश्च मे द्यौश्च मे शक्वरीरङ्गुलयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्तामृक्च मे साम च मे
स्तोमश्च मे यजुश्च मे दीक्षा च मे तपश्च म ऋतुश्च मे व्रतं च मेऽहोरात्रयो
र्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पेताम् ॥ ९ ॥

गर्भाश्च मे वत्साश्च मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे
पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे
पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च म उक्षा च मे वशा च म ऋषभश्च मे वेहच्च मेऽनड्वाञ्च मे
धेनुश्च म आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतामपानो यज्ञेन कल्पतां
व्यानो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पताꣳ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतां
वाग्यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् ॥ १० ॥

एका च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे सप्त च मे नव च म एकादश च मे त्रयोदश च मे
पञ्चदश च मे सप्तदश च मे नवदश च म एकविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे
पञ्चविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च म एकत्रिꣳशच्च मे
त्रयस्त्रिꣳशच्च मे चतस्रश्च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे षोडश च मे विꣳशतिश्च मे
चतुर्विꣳशतिश्च मेऽष्टाविꣳशतिश्च मे द्वात्रिꣳशच्च मे षट्त्रिꣳशच्च मे चत्वरिꣳशच्च मे
चतुश्चत्वारिꣳशच्च मेऽष्टाचत्वारिꣳशच्च मे वाजश्च प्रसवश्चापिजश्च क्रतुश्च सुवश्च
मूर्धा च व्यश्नियश्चान्त्यायनश्चान्त्यश्च भौवनश्च भुवनश्चाधिपतिश्च ॥ ११ ॥

ॐ इडा देवहूर्मनुर्यज्ञनी बृहस्पति रुक्था मदानि शꣳसिषद्विश्वे देवाः सूक्तवाचः पृथिवी मातर्मा मा हिꣳसीर्मधु मनिष्ये मधु जनिष्ये मधु वक्ष्यामि मधु वदिष्यामि मधुमती देवेभ्यो वाचमुद्यासꣳ शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मा देवा अवन्तु शोभायै पितरोऽनुमदन्तु ॥ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

**॥ पुरुष सूक्तं ॥**

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्। पुरुष एवेदꣳ सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति। एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायाꣳश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि। त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादोऽस्येहाऽऽभवात्पुनः। ततो विश्वङ्व्यक्रामत्। साशनानशने अभि। तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत। पश्चाद्भूमिमथो पुरः। यत्पुरुषेण हविषा। देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः। सप्तास्यासन्परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन्पुरुषं पशुम्। तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त। साध्या ऋषयश्च ये। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। संभृतं पृषदाज्यम्। पशूꣳस्ताꣳश्चक्रे वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत। तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चो भयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः। यत्पुरुषं व्यदधुः।

कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः।

पद्भ्याꣳ शूद्रो अजायत। चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत। नाभ्या आसीदन्तरिक्षम्।

शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकाꣳ अकल्पयन्।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे।

सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते।

धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार। शक्रः प्रविद्वान्प्रदिशश्चतस्रः।

तमेवं विद्वानमृत इह भवति। नान्यः पन्था अयनाय विद्यते।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।

॥ **उत्तर नारायणं** ॥

अद्भ्यः संभूतः पृथिव्यै रसाच्च। विश्वकर्मणः समवर्तताधि।

तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रे।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।

तमेवं विद्वानमृत इह भवति। नान्यः पन्था विद्यतेयऽनाय।

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तः। अजायमनो बहुधा विजायते।

तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेदसः।

यो देवेभ्य आतपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः।

नमो रुचाय ब्राह्मये। रुचं ब्राह्मम् जनयन्तः। देवा अग्रे तदब्रुवन्।

यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्य देवा असन् वशे। ह्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ।

अहोरात्रे पार्श्वे । नक्षत्राणि रूपम् । अश्विनौ व्यात्तम् । इष्टम् मनिषाण । अमुं मनिषाण । सर्वम् मनिषाण ।

॥ महा नारायणं ॥

ॐ ॥ सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशम्भुवं ।
विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम् ।
विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणꣳ हरिम् ।
विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्वमुपजीवति ।
पतिं विश्वस्यात्मेश्वरꣳ शाश्वतꣳ शिवमच्युतम् ।
नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम् ।
नारायणपरो ज्योतिरात्मा नारायणः परः ।
नारायण परं ब्रह्म तत्वं नारायणः परः ।
नारायणपरो ध्याता ध्यानम् नारायणः परः ।
यच्च किञ्चिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा ॥
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः ।
अनन्तमव्ययं कविꣳसमुद्रेऽन्तं विश्वशम्भुवम् ।
पद्मकोश प्रतीकाशꣳ हृदयं चाप्यधोमुखम् ।
अधो निष्ट्या वितस्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति ।
ज्वालमालाकुलं भाति विश्वस्यायतनं महत् ।
सन्ततꣳ शिलाभिस्तुलम्बत्याकोशसन्निभम् ।
तस्यान्ते सुषिरꣳ सूक्ष्मं तस्मिन् त्सर्वं प्रतिष्ठितम् ।
तस्य मध्ये महानग्नि र्विश्वार्चिर्विश्वतोमुखः ।

सोऽग्रभुग्वि भजन्तिष्ठन्नाहारमजरः कविः।
तिर्यगूर्ध्वमधश्शायी रश्मयस्तस्य सन्तता।
सन्तापयति स्वं देहमापादतलमस्तकः।
तस्य मद्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थितः।
नीलतोयदमध्यस्थाद्विद्युल्लेखेव भास्वरा।
नीवारशूकवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपमा।
तस्याः शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः।
स ब्रह्म स शिवः स हरिः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट्।
ऋतꣳ सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्।
ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः।
ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

# ॥ नचिकेतम् ॥

अयं वा वयः पवते। सौऽग्नि र्नाचिकेतः। स यत्प्राङ् पवते। तदस्य शिरः।
अथ य द्दक्षिणा। स दक्षिणः पक्षः।
अथ यत्प्रत्यक्। तत्पुच्छम्। यदु दङ्। स उत्तरः पक्षः।
अथ यथ्संवाति। तदस्य समञ्चनं च प्रसारणं च।
अथो सम्प-देवास्य सा॥ सꣳ ह वा अस्मै सकामः पद्यते।
यत्कामो यजते। यो ऽग्निं नाचिकेतं चिनुते। य उ चैन मेवं वेद।
यो ह वा अग्ने र्नाचिकेतस्याय-तनं प्रतिष्ठां वेद। आयतनवान् भवति।

गच्छति प्रतिष्ठाम्। हिरण्यं वा अग्ने नाचिकेतस्याय-तनं प्रतिष्ठा।

य एवं वेद। आयतनवान् भवति।

गच्छति प्रतिष्ठाम्। यो ह वा अग्ने नाचिकेतस्य शरीरं वेद।

स शरीर एव स्वर्गं लोकमेति।

हिरण्यं वा अग्ने नाचिकेतस्य शरीरम् । य एवं वेद।

स शरीर एव स्वर्गं लोकमेति।

अथो यथा रुक्म उत्तप्तो भाय्यात्। एवमेव स तेजसा यशसा।

अस्मिꣳश्च लोके ऽमुष्मिꣳश्च भाति॥

उरवो ह वै ना-मैते लोकाः। ये ऽवरेणादित्यम्।

अथ हैते वरी-याꣳ सो लोकाः। ये परेणादित्यम्।

अन्त वन्तꣳ ह वा एष क्षय्यं लोकं जयति। यो ऽवरेणादित्यम्।

अथ हैषोऽ नन्त-मपार-म-क्षय्यं लोकं जयति। यः परेणादित्यम्।

अनन्तꣳ ह वा अपार म-क्षय्यं लोकं जयति।

यो ऽग्निं नाचिकेतं चिनुते। य उ चैन मेवं वेद।

अथो यथा रथे तिष्ठन् पक्षसी पर्या वर्तमाने प्रत्य-पेक्षते।

एव महो रात्रे प्रत्य-पेक्षते। नास्या होरात्रे लोक माप्नुतः।

यो ऽग्निं नाचिकेतं चिनुते। य उ चैन मेवं वेद।

उशन् ह वै वाज श्रवसः सर्व वेदसं ददौ।

तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस।

तꣳ ह कुमारꣳ सन्तम्। दक्षिणासु नीयमानासु श्रद्धाऽऽविवेश ।

स होवाच। तत कस्मै मां दास्य-सीति। द्वितीयं तृतीयम्।

तꣳ ह परीत उवाच। मृत्यवे त्वा ददामीति॥

तꣳ ह-स्मो-त्थितं वाग भिव -दति। गौतम कुमार मिति।

स होवाच। परेहि मृत्यो गृहान्। मृत्यवे वै त्वाऽदा मिति।

तं वै प्रवसन्तं गन्ता-सीति होवाच।

तस्य स्म तिस्रो रात्रीर-नाश्वान् गृहे वसतात्।

स यदि त्वा पृच्छेत्। कुमार कति रात्री र-वात्सी-रिति।

तिस्र इति प्रति ब्रूतात। किं प्रथमाꣳ रात्रि माश्ना इति।

प्रजां त इति। किं द्वितीया मिति। पशूꣳस्त इति।

किं तृतीया मिति। साधुकृत्यान्त इति। तं वै प्रवसन्तं जगाम।

तस्य ह तिस्रो रात्री रनाश्वान् गृह उवास। तमागत्य पप्रच्छ।

कुमार कति रात्री र-वात्सी-रिति। तिस्र इति प्रत्युवाच।

किं प्रथमाꣳ रात्रि माश्ना इति। प्रजान्त इति। किं द्वितीया मिति।

पशूꣳस्त इति। किं तृतीया मिति। साधुकृत्यां त इति।

नमस्ते अस्तु भगव इति होवाच। वरं वृणीष्वेति।

पितरमेव जीवन्नया-नीति। द्वितीयं वृणीष्वेति।

इष्टापूर्तयो-र्मेऽक्षितिं ब्रूहीति होवाच। तस्मै हैत-मग्निं नाचिकेत-मुवाच।

ततो वै तस्यै-ष्टापूर्ते ना क्षीयेते। नास्ये-ष्टापूर्ते क्षीयेते।

यो ऽग्निं नाचिकेतं चिनुते। य उ चैन मेवं वेद।

तृतीयं वृणीष्वेति। पुनर्मृत्योर्मेऽपजितिं ब्रूहीति होवाच।

तस्मै हैतमग्निं नाचिकेतमुवाच।

ततो वै सोऽप पुनर्मृत्युम जयत्। अप पुनर्मृत्युं जयति।

यो ऽग्निं नाचिकेतं चिनुते। य उ चैन मेवं वेद ॥
प्रजापतिर्वै प्रजाकाम स्तपो ऽतप्यत। स हिरण्य मुदास्यत्।
तदग्नौ प्रास्यत्। तदस्मै नाच्छदयत्।
तद्द्वितीयं प्रास्यत्। तदस्मै नैवाच्छदयत्।
तत्तृतीयं प्रास्यत्। तदस्मै नैवाच्छदयत्।
तदात्मन्नेव हृदय्येऽग्नौ वैश्वानरे प्रास्यत्।
तदस्मा अच्छदयत्। तस्माद्धिरण्यं कनिष्ठं धनानाम्।
भुञ्ज-त्प्रियतमम्। हृदय-जꣳ हि। स वै तमेव नाविन्दत्।
यस्मै तां दक्षिणा-मनेष्यत्। ताꣳ स्वायैव हस्ताय दक्षिणा-यानयत्।
तां प्रत्य गृह्णात्। दक्षाय त्वा दक्षिणां प्रति गृह्णामीति।
सोऽदक्षत दक्षिणां प्रतिगृह्य।
दक्षते ह वै दक्षिणां प्रतिगृह्य। य एवं वेद ॥
एत-द्धस्म वै तद्वि-द्वाꣳ सो वाज-श्रवसा गोतमाः।
अप्यनू देश्यां दक्षिणां प्रति गृह्णन्ति।
उभयेन वयं दक्षिष्या-मह एव दक्षिणां प्रति गृह्येति।
तेऽदक्षन्त दक्षिणां प्रतिगृह्य। दक्षते ह वै दक्षिणां प्रतिगृह्य।
य एवं वेद। प्रहान्यं ग्लीनाति ॥
तꣳ हैतमेके पशुबन्ध एवोत्तर वेद्यां चिन्वते।
उत्तर-वेदि सम्मित एषोऽग्नि-रिति वदन्तः।
तन्न तथा कुर्यात्। एत मग्निं कामेन व्यर्धयेत्।
स एनं कामेन व्यर्द्धः। कामेन व्यर्धयेत्।

सौम्ये वावैन मध्वरे चिन्वीत।
यत्र वा भूयिष्ठा आहुतयो हूयेरन्न्।
एत मग्निं कामेन समर्धयति।
स एनं कामेन समृद्धः। कामेन समर्द्धयति।
अथ हैनं पुर-ऋषयः। उत्तर वेद्या मेव सत्रियम चिन्वत।
ततो वै तेऽविन्दन्त प्रजाम्। अभि स्वर्गं लोक-मजयन्न्।
विन्दत एव प्रजाम्। अभि स्वर्गं लोकं जयति।
यो ऽग्निं नाचिकेतं चिनुते। य उ चैन मेवं वेद॥
अथ हैनं वायुर् ऋद्धिकामः ।
यथा न्युप्त मेवोप दधे। ततो वै स एता मृद्धि माध्नोंत्।
यामिदं वायुर् ऋद्धः। एता मृद्धि मृध्नोति। यामिदं वायुर् ऋद्धः।
यो ऽग्निं नाचिकेतं चिनुते। य उ चैन मेवं वेद॥
अथ हैनं गोबलो वार्ष्णः पशुकामः।
पाङ्क-मेव चिक्ये। पञ्च पुरस्तात्।
पञ्च दक्षिणतः। पञ्च पश्चात्।
पञ्चो त्तरत। एकां मध्ये।
ततो वै स सहस्रं पशून् प्राप्नोत्। प्र सहस्रं पशूनाप्नोति।
यो ऽग्निं नाचिकेतं चिनुते। य उ चैन मेवं वेद॥
अथ हैनं प्रजापति ज्यैष्ठ्यकामो यशस्कामः प्रजननकामः।
त्रिवृत मेव चिक्ये। सप्त पुरस्तात्। तिस्रो दक्षिणतः।
सप्त पश्चात्। तिस्र उत्तरतः। एकां मध्ये।

ततो वै स प्र यशो ज्यैष्ठ्य माप्नोत्।
एतां प्रजातिं प्राजायत। यामिदं प्रजाः प्रजायन्ते।
त्रि-वृद्वै ज्यैष्ठ्यम्। माता पिता पुत्रः। त्रिवृ-त्प्रजननम्।
उपस्थो योनि र्मध्यमा। प्र यशो ज्यैष्ठ्य माप्नोति।
एतां प्रजातिं प्राजायन्ते। यामिदं प्रजाः प्रजायन्ते।
यो ऽग्निं नाचिकेतं चिनुते। य उ चैन मेवं वेद॥
अथ हैनं मिन्द्रो ज्यैष्ठ्यकामः। ऊर्ध्वा एवो पदधे।
ततो वै स ज्यैष्ठ्यम गच्छत्। ज्यैष्ठ्यं गच्छति।
यो ऽग्निं नाचिकेतं चिनुते। य उ चैन मेवं वेद॥
अथ हैन मसा वादित्यः स्वर्ग कामः। प्राची-रेवो पदधे।
ततो वै सोऽभि स्वर्गं लोकम जयत्।
अभि स्वर्गं लोकं जयति।
यो ऽग्निं नाचिकेतं चिनुते। य उ चैन मेवं वेद॥
स यदीच्छेत्। तेजस्वी यशस्वी ब्रह्मवर्चसी स्यामिति।
प्राङ्ग-होतु र्धिष्ण्या दु-थ्सर्पेत्। येयं प्रागा द्यशस्वती।
सा मा प्रोर्णोतु। तेजसा यशसा ब्रह्मवर्चसे नेति।
तेजस्व्येव यशस्वी ब्रह्मवर्चसी भवति॥
अथ यदीच्छेत्। भूयिष्ठं मे श्रद्द धीरन्न्।
भूयिष्ठा दक्षिणा नये-युरिति।
दक्षिणासु नीय मानासु प्राच्येहि प्राच्येहीति प्राची जुषाणा
वेत्वा ज्यस्य स्वा-हेति स्रुवेणोप हत्या हवनीये जुहुयात्।

भूयिष्ठ मेवास्मै श्रद्द धते। भूयिष्ठा दक्षिणा नयन्ति ॥

पुरीष मुपधाय। चिति क्लुप्ति भिरभि मृश्य।

अग्निं प्रणीयोप समाधाय। चतस्र एता आहुती र्जुहोति।

त्वमग्ने रुद्र इति शत रुद्री-यस्य रूपम्।

अग्ना विष्णू इति वसो र्धारायाः। अन्न पत इत्यन्न होमः।

सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वा इति विश्व-प्रीः ॥

यां प्रथमा मिष्टका मुप दधाति। इमं तया लोकमभि जयति।

अथो या अस्मिन् ल्लोके देवताः। तासाꣳ सायुज्यꣳ सलोकता माप्नोति।

यां द्वितीया मुप दधाति। अन्तरिक्ष लोकं तयाऽभि जयति।

अथो या अन्तरिक्ष लोके देवताः। तासाꣳ सायुज्यꣳ सलोकता माप्नोति।

यां तृतीया मुप दधाति। अमुं तया लोकमभि जयति।

अथो या अमुष्मिन् ल्लोके देवताः। तासाꣳ सायुज्यꣳ सलोकता माप्नोति।

अथो या अमूरि-तरा अष्टा-दश।

य एवामी उर-वश्च वरीयाꣳ सश्च लोकाः। तानेव ताभि रभि जयति।

कामचारो ह वा अस्यो रुषु च वरीयस्सु च लोकेषु भवति।

यो ऽग्निं नाचिकेतं चिनुते। य उ चैन मेवं वेद ॥

संवथ्सरो वा अग्नि र्नाचिकेतः। तस्य वसन्तः शिरः।

ग्रीष्मो दक्षिणः पक्षः। वर्षा उत्तरः। शर-त्पुच्छम्।

मासाः कर्मकाराः। अहोरात्रे शत रुद्रीयम्।

पर्जन्यो वसोर्धारा। यथा वै पर्जन्यः सुवृष्टं वृष्ट्वा।

प्रजाभ्यः सर्वान् कामा न्थ्संपूरयति।

एवमेव स तस्य सर्वान् कामा न्थ्संपूरयति ।
यो ऽग्निं नाचिकेतं चिनुते । य उ चैन मेवं वेद ॥
संवथ्सरो वा अग्नि र्नाचिकेतः । तस्य वसन्तः शिरः ।
ग्रीष्मो दक्षिणः पक्षः । वर्षाः पुच्छम् । । शर दुत्तरः पक्षः ।
हेमन्तो मध्यम् । पूर्व पक्षा श्चितयः ।
अपर पक्षाः पुरीषम् । अहोरात्राणी-ष्टकाः ॥
एष वाव सोऽग्नि रग्नि मयः पुनर्णवः ।
अग्नि-मयो ह वै पुनर्णवो भूत्वा ।
स्वर्गं लोकमेति । आदित्यस्य सायुज्यम् ।
यो ऽग्निं नाचिकेतं चिनुते । य उ चैन मेवं वेद ॥

## ॥ मृत संजीवनी सूक्तम् ॥

मुञ्चामित्वा हविषा जीवनाय कमज्ञात यक्ष्मादुत राज यक्ष्मात् ।
ग्राहिर्ज ग्राह यदि वै तदे नं तस्या इन्द्राग्नी प्रमुमुक्त मेनम् ॥
यदि क्षिता युर्य दि वा परेतो यदि मृत्योरन्ति कं नीत एव ।
तमा हरामि निरृऋते रुपस्था दस्पार्षमेनं शतशारदाय ॥
सहस्राक्षेण शतशारदेन शतायुषा हविषाहार्षमेनम् ।
शतं य थेमं शरदो नयातीन्द्रो विश्वस्य दुरितस्य पारम् ॥
शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान् ।
शतमिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः ॥
आहार्षं त्वाविषं त्वा पुनरागाः पुनर्नव ।

सर्वा ङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्व मायुश्च तेऽविदम् ॥
तदित्पदं नविचिकेत विद्वान् । यन्मृतः पुनरप्येति जीवान् ।
त्रिवृद्यद् भुवनस्य रथवृत् । जीवोगर्भो न मृतस्स जीवात् ॥

## ॥ ऋचां प्राची ॥

ऋचां प्राची महती दिगुच्यते । दक्षिणा माहुर्य जुषाम-पाराम् ।
अथर्वणा मङ्गिरसां प्रतीची । साम्ना मुदीची महती दिगुच्यते ॥
ऋग्भिः पूर्वाह्ने दिवि देव ईयते । यजुर्वेदे तिष्ठति मध्ये अह्नः ।
सामवेदे-नास्त मये महीयते । वेदैर शून्य स्त्रि-भिरेति सूर्यः ॥
ऋग्भ्यो जाता॑ सर्वशो मूर्ति माहुः । सर्वा गति -र्याजुषी हैव शश्वत् ।
सर्वं तेजः साम-रूप्य॑ ह शश्वत् । सर्व॑ हेदं ब्रह्मणा हैव सृष्टम् ॥
ऋग्भ्यो जातं वैश्यं वर्ण-माहुः । यजुर्वेदं क्षत्रियस्या हुर्यो-निम् ।
सामवेदो ब्राह्मणानां प्रसूतिः । पूर्वे पूर्वेभ्यो वच एत-दूचुः ॥
आदर्श मग्निं चिन्वानाः । पूर्वे विश्व सृजोऽमृताः ।
शतं वर्ष सहस्राणि । दीक्षिताः सत्त्रमा सत ॥
तप आसी द्गृह पतिः । ब्रह्म ब्रह्माऽभव थ्स्वयम् ।
सत्य॑ ह होतैषा मासीत् । यद्विश्व सृज आसत ॥
अमृतमेभ्य उदगायत् । सहस्रं परिवथ्सरान् ।
भूत॑ ह प्रस्तो तैषा मासीत् । भविष्य त्प्रति चाहरत् ॥
प्राणो अध्वर्युर भवत् । इद॑ सर्व॑ सिषा-सताम् ।
अपानो विद्वाना-वृतः । प्रति प्रातिष्ठ दध्वरे ॥

आर्तवा उपगातारः। सदस्या ऋतवोऽभवन्न्।
अर्ध-मासाश्च मासाश्च। चमसा ध्वर्यवोऽभवन्न्॥
अशꣳ सद् ब्रह्मण स्तेजः। अच्छा-वाकोऽभव द्यशः।
ऋतमेषां प्रशास्ताऽऽसीत्। यद्विश्व सृज आसत॥
ऊर्ग्रा-जान मुद वहत्। ध्रुव-गोपः सहोऽभवत्।
ओजोऽभ्य -ष्टौद् ग्रावृ्णः। यद्विश्व सृज आसत॥
अपचितिः पोत्रीयाम यजत्। नेष्ट्रीयाम यज-त्त्विषिः।
आग्नीद्ध्रा द्विदुषी सत्यम्। श्रद्धा हैवा यज-थ्स्वयम्॥
इरा पत्नी विश्व सृजाम्। आकूतिर पिनद् ढविः।
इध्मꣳ ह क्षुच्चैभ्य उग्रे। तृष्णा चाव-हता मुभे॥
वागेषाꣳ सुब्रह्मण्याऽऽसीत्। छन्दो योगान् विजानती।
कल्प तन्त्राणि तन्वानाऽहः। सꣳ स्थाश्च सर्वशः॥
अहोरात्रे पशुपाल्यौ। मुहूर्ताः प्रेष्या अभवन्न्।
मृत्यु स्तद भव द्धाता। शमि-तोग्रो विशां पतिः॥
विश्व सृजः प्रथमाः सत्त्र मासत। सहस्र समं प्रसु-तेन यन्तः।
ततो ह जज्ञे भुवनस्य गोपाः। हिरण्मयः शकुनि ब्रह्म नाम॥
येन सूर्य स्तपति तेज सेद्धः। पिता पुत्रेण पितृमान् योनि योनौ।
नावेदवि-न्मनुते तं बृहन्तम्। सर्वानु-भु मात्मा-नꣳ संपराये॥
एष नित्यो महिमा ब्राह्मणस्य। न कर्मणा वर्धते नो कनीयान्।
तस्यै-वात्मा पदवित्तं विदित्वा। न कर्मणा लिप्यते पापकेन॥
पञ्च पञ्चा शत स्त्रि-वृतः संवथ्सराः। पञ्च पञ्चा शतः पञ्चदशाः।

पञ्च पञ्चा शतः सप्त दशाः। पञ्च पञ्चा शत एकविꣳशाः।

विश्व सृजाꣳ सहस्र संवथ्सरम्। एतेन वै विश्व सृज इदं विश्वम सृजन्त।

यद्विश्वम सृजन्त । तस्मा द्विश्व सृजः॥

विश्वमेना ननु प्रजायते। ब्रह्मणः सायुज्यꣳ सलोकतां यन्ति।

एता सा मेव देवतानाꣳ सायुज्यम्। सार्ष्टिताꣳ समान लोकतां यन्ति।

य एत दुपयन्ति। ये चैन त्प्राहुः। येभ्य श्चैन त्प्राहुः। ओम्॥

## कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता

वेदादयः सप्तकाण्ठाः प्रथम पञ्चाति।

**॥ अथ प्रथम काण्डे प्रथमः प्रश्नः॥ प्रथमपञ्चाति।**

इषे त्वो र्जे त्वा वायवः स्थो पायवः स्थ देवो वः सविता प्राऽर्पयतु श्रेष्ठतमाय
कर्मण आप्यायध्व मघ्निया देवभाग मूर्जस्वतीः पयस्वतीः प्रजावती रनमीवा
अयक्ष्मा मा वः स्तेन ईशत माऽघशꣳ सो रुद्रस्य हेतिः परि वो वृणक्तु ध्रुवा
अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वी र्यजमानस्य पशून् पाहि॥

**॥ अथ द्वितीय काण्डे प्रथमः प्रश्नः॥ प्रथमपञ्चाति।**

वायव्यꣳ श्वेतमा लभेत भूतिकामो वायुर्वै क्षेपिष्ठा देवता वायुमेव स्वेन
भाग धेयेनोप धावति स एवैनं भूतिं गमयति भवत्येवाऽति क्षिप्रा देवते त्याहुः
सैन मीश्वरा प्रदह इत्ये तमेव सन्तं वायवे नियुत्वत आ लभेत नियुद्वा
अस्य धृति र्धृत एव भूति मुपैत्य प्रदाहाय भवत्येव॥

**॥ अथ तृतीय काण्डे प्रथमः प्रश्नः ॥ प्रथमपञ्चाति ।**

प्रजापतिर कामयत प्रजाः सृजेयेति स तपोऽतप्यत स सर्पान सृजत
सोऽकामयत प्रजाः सृजेयेति स द्वितीयम तप्यत स वयाꣳस्य सृजत
सोऽकामयत प्रजाः सृजेयेति स तृतीयम तप्यत स एतं दीक्षित वादम
पश्य त्तमव दत्ततो वै स प्रजा असृजत यत्तप स्तप्त्वा दीक्षित वादं वदति
प्रजा एवत द्यजमानः ॥

**॥ अथ चतुर्थ काण्डे प्रथमः प्रश्नः ॥ प्रथमपञ्चाति ।**

युञ्जानः प्रथमं मन स्तत्वाय सविता धियः ।
अग्निं ज्योति र्निचाय्य पृथिव्या अध्याऽभरत् ॥
युक्त्वाय मनसा देवान् थ्सुवर्यतो धिया दिवम् ।
बृहज्ज्योतिः करिष्यतः सविता प्र सुवाति तान् ॥
युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे । सुवर्ग्येयाय शक्त्यै ॥
युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः ।
वि होत्रा दधे वयुना विदेक इत् ॥

**॥ अथ पञ्चम काण्डे प्रथमः प्रश्नः ॥ प्रथमपञ्चाति ।**

सावित्राणि जुहोति प्रसूत्यै चतुर्गृहीतेन जुहोति चतुष्पादः पशवः पशूनेवाऽव
रुन्धे चतस्रो दिशो दिक्ष्वेव प्रति तिष्ठति छन्दाꣳसि देवेभ्योऽपाऽक्रामन्न
वोऽभागानि हव्यं वक्ष्याम इति तेभ्य एत च्चतुर्गृहीतम धारयन्पुरोऽनु वाक्यायै
याज्यायै देवतायै वषट्काराय य-च्चतुर्गृहीतं जुहोति छन्दाꣳस्येव तत्प्रीणाति
तान्यस्य प्रीतानि देवेभ्यो हव्यं वहन्ति यं कामयेत ॥

**॥ अथ षष्ठ काण्डे प्रथमः प्रश्नः ॥ प्रथमपञ्चाति ।**

प्राचीनवꣳ शङ्करोति देव मनुष्या दिशो व्यभ-जन्त प्राचीन्देवा दक्षिणा
पितरः प्रतीचीं मनुष्या उदीचीꣳ रुद्रा यत्प्राचीनवꣳ शङ्करोति देवलोकमेव
तद्यजमान उपावर्तते परिश्रय त्यन्तर् हितो हि देवलोको मनुष्य लोका
ऽन्नास्मा ल्लोकात् स्वेतव्य मिवेत्याहुः को हि तद्वेद यद्य मुष्मिन् ल्लोकेऽस्ति
वा न वेति दिक्ष्वती काशान् करोति ॥

**॥ अथ सप्तम काण्डे प्रथमः प्रश्नः ॥ प्रथमपञ्चाति ।**

प्रजननं ज्योति रग्नि र्देवतानां ज्योति र्विराट् छन्दसां ज्योति र्विराड् वाचौऽग्नौ
सं तिष्ठते विराजमभि सं पद्यते तस्मात्त ज्ज्योति रुच्यते द्वौ स्तोमौ प्रातः सवनं
वहतो यथा प्राणश्चाऽपानश्च द्वौ माध्यन्दिनꣳ सवनं यथा चक्षुश्च श्रोत्रं च द्वौ
तृतीय सवनं यथा वाक्च प्रतिष्ठा च पुरुष सम्मितो वा एष यज्ञोऽस्थूरिः ॥

**॥ अथ सप्तम काण्डे प्रथमः प्रश्नः ॥ अन्त्यपञ्चाति ।**

समुद्र उदर मन्तरिक्षं पायु र्द्यावा पृथिवी आण्डौ ग्रावा शेपः सोमो रेतो
यज्ज ञ्जभ्यते तद्वि द्योतते यद्वि धूनुते तथ्स्त नयति यन्मेहति तद्वर्षति
वागेवाऽस्य वागहर्वा अश्वस्य जायमानस्य महिमा पुरस्ता ज्जायते
रात्रिरेनं महिमा पश्चादनु जायत एतौ वै महिमाना वश्व मभितः सम्बभूव
तुरहयो देवान वहदर्वाऽसुरान् वाजी गन्धर्वानश्वो मनुष्यान् थ्समुद्रो वा
अश्वस्य योनिः समुद्रो बन्धुः ॥

# तैत्तिरीय यजुर्ब्राह्मणा

## शख अष्टकत्रयः प्रथम पञ्चाति ।

**॥ प्रथमाष्टके प्रथम प्रश्नः ॥ प्रथम पञ्चाति ।**

ब्रह्म संधत्तं तन्मे जिन्वतम् । क्षत्र॑ᳫ संधत्तं तन्मे जिन्वतम् ।
इष॑ᳫ संधत्तं तां मे जिन्वतम् । ऊर्ज॑ᳫ संधत्तं तां मे जिन्वतम् ।
रयि॑ᳫ संधत्तं तां मे जिन्वतम् । पुष्टि॑ᳫ संधत्तं तां मे जिन्वतम् ।
प्रजा॑ᳫ संधत्तं तां मे जिन्वतम् । पशून्त्संधत्तं तान्मे जिन्वतम् ।
स्तुतोसि जनधाः । देवास्त्वा शुक्रपाः प्रणयन्तु ॥ सुवीराः प्रजाः प्रजनय न्परीहि ।

**॥ द्वितीयाष्टके प्रथम प्रश्नः ॥ प्रथम पञ्चाति ।**

अङ्गिरसो वै सत्र मासत । तेषां पृश्नि र्घर्म धुगा-सीत् । सर्जी षेणा जीवत् ।
तेऽब्रुवन् । कस्मै नु सत्र मास्महे । येऽस्या ओषधीर्न जन-याम इति ।
ते दिवो वृष्टिम सृजन्त । यावन्तः स्तोका अवा-पद्यन्त । तावती-रोषधयोऽजायन्त ।
ता जाताः पितरो विषेणा लिम्पन् । तासां जग्ध्वा रुप्यन्त्यैत् ।

**॥ तृतीयाष्टके प्रथम प्रश्नः ॥ प्रथम पञ्चाति ।**

अग्निर्नः पातु कृत्तिकाः । नक्षत्रं देवमिन्द्रियम् । इदमासां विचक्षणम् ।
हविरासं जुहोतन । यस्य भान्ति रश्मयो यस्य केतवः ।
यस्येमा विश्वा भुवनानि सर्वा । स कृत्तिकाभि रभि संवसानः ।
अग्निर्नो देव स्सुविते दधातु ॥ प्रजापते रोहिणी वेतु पत्नी ।
विश्वरूपा बृहती चित्र भानुः । सा नो यज्ञस्य सुविते दधातु ।

॥ तृतीयाष्टके नवम प्रश्नः ॥ प्रथम पञ्चाति ।

प्रजापति रश्वमेधम सृजत । सोऽस्मा त्सृष्टोऽपाक्रामत् ।
तमष्टा दशिभि रनु प्रायुङ्क्त । तमाप्नोत् ।
तमाप्त्वाऽष्टा दशिभि-रवा रुन्ध । यदष्टा-दशिन आलभ्यन्ते ।
यज्ञ मेव तैराप्त्वा यजमानोऽवरुन्धे । संवत्सरस्य वा एषा प्रतिमा ।
यदष्टा दशिनः । द्वादश मासाः पञ्चर्तवः ॥ संवत्सरोऽष्टादशः ।

॥ तृतीयाष्टके नवम प्रश्नः ॥ अन्त्य पञ्चाति ।

य द्दर्श पूर्ण मासौ यजते । अश्वस्यैव मेध्यस्य पदे पदे जुहोति ।
एत दनुकृति ह स्म वै पुरा । अश्वस्य मेध्यस्य पदे पदे जुह्वति ।
यो वा अश्वस्य मेध्यस्य विवर्तनं वेद ।
अश्वस्यैव मेध्यस्य विवर्तने विवर्तने जुहोति ।
असौ वा आदित्योऽश्वः । स आहवनीय मा गच्छति । तद्धि वर्तते ।
यदग्नि होत्रं जुहोति । अश्वस्यैव मेध्यस्य विवर्तने विवर्तने जुहोति ।
एत दनुकृति ह स्म वै पुरा । अश्वस्य मेध्यस्य विवर्तने विवर्तने जुह्वति ।

॥ काटके प्रथम प्रश्नः ॥ प्रथम पञ्चाति ।

संज्ञानं विज्ञानं प्रज्ञानं जानदभि जानत् ।
संकल्पमानं प्रकल्पमान मुपकल्पमान मुप क्लुप्तं क्लुप्तम् ।
श्रेयो वसीय आय थ्संभूतं भूतम् ॥ चित्रः केतुः प्रभा नाभा न्थ्संभान् ।
ज्योतिष्माꣳ स्तेजस्वाना तपꣳ स्तपन्नभि तपन्न् ।
रोचनो रोचमानः शोभनः शोभमानः कल्याणः ॥

दर्शा दृष्टा दर्शतां विश्व-रूपा सुदर्शना ।
आप्यायमाना प्यायमाना प्याया सूनृतेरा ।
आपूर्यमाणा पूर्यमाणा पूरयन्ती पूर्णा पौर्णमासी ॥
दाता प्रदाताऽऽनन्दो मोदः प्रमोदः ।
आवेशय-न्निवेशयन् थ्संवेशनः सꣳशान्तः शान्तः ।

**॥ काटके तृतीय प्रश्नः ॥ अन्त्य पञ्चाति ।**

तस्यै वात्मा पदवित्तं विदित्वा । न कर्मणा लिप्यते पापकेन ॥
पञ्चपञ्चा शत स्त्रि-वृतः संवथ्सराः ॥ पञ्चपञ्चा शतः पञ्चदशाः ।
पञ्चपञ्चा शतः सप्तदशाः । पञ्चपञ्चा शत एकविꣳशाः ।
विश्व सृजाꣳ सहस्र संवथ्सरम् । एतेन वै विश्व सृज इदं विश्वम सृजन्त ।
यद्विश्वम सृजन्त । तस्मा द्विश्व सृजः ॥ विश्व मेना ननु प्रजायते ।
ब्रह्मणः सायुज्यꣳ स लोकतां यन्ति । एतासा मेव देवतानाꣳ सायुज्यम् ।
सार्ष्टिताꣳ समान लोकतां यन्ति । य एत दुपयन्ति । ये चैनत्प्राहुः ।
येभ्य श्चैनत्प्राहुः ।

**॥ आरण्यके प्रथम प्रश्नः ॥ प्रथम पञ्चाति ।**

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । भद्रं पश्येमा क्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिः । व्यशेम देवहितं यदायुः ।
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः । स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः । स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥
आप -मापा-मपः सर्वाः । अस्मा-दस्मा-दितोऽमुतः ॥ अग्नि-र्वायुश्च सूर्यश्च ।

॥ आरण्यके दशम प्रश्नः ॥ अन्त्य पञ्चाति ।

तस्यैवं विदुषो यज्ञ-स्यात्मा यजमानः श्रद्धा पत्नी शरीर मिध्म-मुरो वेदि र्लोमानि बर्हि र्वेदः शिखा हृदयं यूपः काम आज्यं मन्युः पशु-स्तपोऽग्नि-र्दमः शमयिता दक्षिणा वाग्घोता प्राण उद्गाता चक्षुर-ध्वर्यु र्मनो ब्रह्मा श्रोत्र मग्नी-द्याव-द्ध्रियते सा दीक्षा यद-श्नाति तद्धविर्य-त्पिबति तदस्य सोमपानं यद्रमते तदुपसदो यत्सञ्चर-त्युपविश-त्युत्तिष्ठते च स प्रवर्ग्यो यन्मुखं तदा-हवनीयो या व्याहृति राहुति र्यदस्य विज्ञानं तज्जुहोति यत्सायं प्रातरत्ति तत्समिधं यत्प्रात-र्मध्यन्दिनꣳ सायं च तानि सवनानि ये अहोरात्रे ते दर्शपूर्णमासौ येऽर्धमासाश्च मासाश्च ते चातुर्मास्यानि य ऋतवस्ते पशुबन्धा ये संवत्सराश्च परिवत्सराश्च तेऽहर्गणाः सर्ववेदसं वा एतत्सत्रं यन्मरणं तदवभृथ एतद्वै जरामर्य-मग्निहोत्रꣳ सत्रं य एवं विद्वा-नुदगयने प्रमीयते देवानामेव महिमानं गत्वाऽऽदित्यस्य सायुज्यं गच्छत्यथ यो दक्षिणे प्रमीयते पितृणा मेव महिमानं गत्वा चन्द्रमसः सायुज्यꣳ सलोकता माप्नोत्येतौ वै सूर्या चन्द्रमसो र्महिमानौ ब्राह्मणो विद्वा नभि-जयति तस्माद् ब्रह्मणो महिमान माप्नोति तस्माद् ब्रह्मणो महिमान मित्युपनिषत् ॥

# ॥ घोषशांति ॥

शं नो वातः पवतां मातरिश्वा शं न स्तपतु सूर्यः ।
अहानि शं भवन्तु नश्शꣳ रात्रिः प्रति धीयताम् ॥
शमुषा नो व्युच्छतु शमादित्य उदेतु नः ।
शिवा नश्शन्तमा भव सुमृडीका सरस्वति । मा ते व्योम संदृशि ॥
इडायै वास्त्वसि वास्तु मद्वा स्तुमन्तो भूयास्म मा वास्तो श्छित्-स्मह्य

वास्तुस्स भूया द्योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥

प्रतिष्ठाऽसि प्रतिष्ठावन्तो भूयास्म मा प्रतिष्ठाया श्श्रित्-स्मह्य

प्रतिष्ठस्स भूया द्योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः ।

त्वꣳ हि विश्व भेषजो देवानां दूत ईयसे ॥

द्वाविमौ वातौ वात आसिन्धो राप रावतः ।

दक्षं मे अन्य आवातु पराऽन्यो वातु यद्रपः ॥

यददो वात ते गृहेऽमृतस्य निधिर् हितः ।

ततो नो देहि जीवसे ततो नो धेहि भेषजम् ।

ततो नो मह आवह  वात आवातु  भेषजम् ।

शंभू र्मयो भूर्नो हृदे प्रण आयूꣳषि तारिषत् ॥

इन्द्रस्य गृहोऽसि तं त्वा प्रपद्ये सगु स्साश्वः ।

सह यन्मे अस्ति तेन ॥

भूः प्रपद्ये भुवः प्रपद्ये सुवः प्रपद्ये भूर्भुवस्सुवः प्रपद्ये

वायुं प्रपद्येऽनार्तां देवतां प्रपद्येऽश्मानमा खणं प्रपद्ये

प्रजापते ब्र्ह्मकोशं ब्रह्म प्रपद्य ओं प्रपद्ये ॥

अन्तरिक्षं म उर्वन्तरं बृहदग्नयः पर्वताश्च यया वात स्स्वस्त्या

स्वस्ति मां तया स्वस्त्या स्वस्ति मानसानि ॥

प्राणापानौ मृत्योर्मा पातं प्राणापानौ मा मा हासिष्टं

मयि मेधां मयि प्रजां मय्यग्निस्तेजो दधातु

मयि मेधां मयि प्रजां मयीन्द्र इन्द्रियं दधातु

मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो भ्राजो दधातु ॥

द्युभि रक्तुभिः परिपात मस्मा नरिष्टेभि रश्विना सौभगेभिः ।

तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता मदिति स्सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥

कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधस्सखा ।

कया शचिष्ठया वृता ॥

कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳहिष्ठो मत्स दन्धसः ।

दृढा चिदा रुजे वसु ॥

अभी-षुण स्सखीना मविता जरितृणाम् ।

शतं भवा स्यूतिभिः ॥

वय स्सुपर्णा उपसे दुरिन्द्रं प्रिय मेधा ऋषयो नाधमानाः ।

अप ध्वान्त मूर्णुहि पूर्धि चक्षु-र्मु मुग्ध्यस्मा न्निधयेव बद्धान् ॥

श न्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।

शं योरभिस्रवन्तु नः ॥

ईशाना वार्याणां क्षयन्ती श्चर्षणीनाम् ।

अपो याचामि भेषजम् ॥

सुमित्रा न आप ओषधय स्सन्तु दुर्मित्रा स्तस्मै

भूया सुर्योऽस्मान् द्वेटि यं च वयं द्विष्मः ॥

आपो हिष्ठा मयो भुव स्तान ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥

योवः शिवतमो रस स्तस्य भाजय तेहनः । उशतीरिव मातरः ॥

तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥

पृथिवी शान्ता साऽग्निना शान्ता सा मे शान्ता शुचꣳ शमयतु ॥

अन्तरिक्षꣳ शान्तं तद्वायुना शान्तं तन्मे शान्तꣳ शुचꣳ शमयतु ॥

द्यौश्शान्ता साऽऽदित्येन शान्ता सा मे शान्ता शुचꣳ शमयतु ॥

पृथिवी शान्ति रन्तरिक्षꣳ शान्ति द्यौः शान्ति र्दिशः शान्ति र-वान्तर दिशाः

शान्ति रग्निः शान्ति र्वायुः शान्ति रादित्यः शान्ति श्चन्द्रमाः शान्ति र्नक्षत्राणि

शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्ति र्वनस्पतयः शान्ति र्गौः शान्ति रजा

शान्ति रश्वः शान्तिः पुरुषः शान्ति र्ब्रह्म शान्ति र्ब्राह्मणः शान्तिः शान्ति रेव

शान्तिः शान्ति र्मे अस्तु शान्तिः ॥

तया हꣳ शान्तया सर्व शान्त्या मह्यं द्विपदे चतुष्पदे च

शान्तिं करोमि शान्ति र्मे अस्तु शान्तिः ॥

एह श्रीश्च ह्रीश्च धृतिश्च तपो मेधा प्रतिष्ठा श्रद्धा सत्यं

धर्म श्चैतानि मोत्तिष्ठन्त मनूत्तिष्ठन्तु मा माꣳ श्रीश्च ह्रीश्च धृतिश्च

तपो मेधा प्रतिष्ठा श्रद्धा सत्यं धर्म श्चैतानि मा मा हासिषुः ॥

उदायुषा स्वायुषो दोषधीनाꣳ रसेनो त्पर्जन्यस्य

शुष्मेणो दस्था ममृताꣳ अनु ॥

त च्चक्षु र्देवहितं पुरस्ता च्छुक्र मुच्चरत्।पश्येम शरद श्शतं जीवेम शरद श्शतं

नन्दाम शरद श्शतं मोदाम शरद श्शतं भवाम शरद श्शतꣳ शृणवाम शरद श्शतं

प्रब्रवाम शरद श्शत मजीतास्स्याम शरद श्शतं ज्योक्च सूर्यं दृशे ॥

य उदगान् महतोऽर्णवा द्विभ्राजमान स्सरिरस्य मध्या थ्स मा वृषभो

लोहिताक्ष स्सूर्यो विपश्चिन् मनसा पुनातु ॥

ब्रह्मण श्श्चोतन्यसि ब्रह्मण आणि स्थो ब्रह्मण आवपनमसि

धारितेयं पृथिवी ब्रह्मणा मही धारित-मेनेन मह दन्तरिक्षं
दिवं दा धार पृथिवीᳫं सदेवां यदहं वेद
तदहं धारयाणि मा मद्वेदोऽधि विस्रसत् ॥
मेधामनीषे माऽऽविशताᳫं समीची भूतस्य भव्यस्या वरुद्ध्यै
सर्वमायुरयाणि सर्वमायुरयाणि ॥
आभिर्गीर्भि र्यदतो न ऊनमाप्यायय हरिवो वर्धमानः ।
यदा स्तोतृभ्यो महि गोत्रा रुजासि भूयिष्ठ भाजो अध ते स्याम ॥
ब्रह्म प्रावादिष्म तन्नो माहासीत् ॥
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

## ॥ ओषधि सूक्तम् ॥

या जाता ओषधयो देवेभ्य स्त्रियुगं पुरा ।
मन्दामि बभ्रूणा मह॑ शतं धामानि सप्त च ॥
शतं वो अम्ब धामानि सहस्र मुत वो रुहः ।
अथा शतक्रत्वो यूयं मिमं मे अगदं कृत ॥
पुष्पावतीः प्रसूवतीः फलिनीर फलाउत ।
अश्वा इव सजित्वरी र्वीरुधः पार यिष्णवः ॥
ओषधीरिति मातर स्तद्वो देवी रुप ब्रुवे ।
रपा॑सि विघ्नतीरितर पश्चातयमानाः ॥
अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाज इत्किला सथ यत्स नवथ पूरुषम् ॥
यदहंवा जयन्निमा ओषधीर् हस्त आदधे ।
आत्मा यक्ष्मस्य नश्यति पुरा जीव गृभो यथा ॥
यदोषधय स्संगच्छन्ते राजानः समिता विव ।
विप्रः स उच्यते भिषग्रक्षो हामी वचातनः ॥
निष्कृतिर्नाम वो माताथा यूय॑ँ स्थ संकृतीः ।
सराः पतत्रिणीः स्थन यदा मयति निष्कृत ॥
अन्या वो अन्यामव त्वन्यान्यस्या उपावत ।
ताः स्सर्वा ओषधय संविदाना इदं मे प्रावता वचः ॥
उच्छुष्मा ओषधीनां गावो गोष्ठादिवेरते ।
धन॑ सनिष्यन्ति नामात्मानं तव पूरुष ॥

अति विश्वाः परिष्ठाः स्तेन इव व्रजमक्रमुः ।

ओषधय प्राचुच्य वुर्यत्किं च तनु वाꣳ रपः ॥

यास्त आतस्तु रात्मानं याँ आवि विशुः परुः परुः ।

तास्ते यक्ष्मं विबाधन्ता मुग्रो मध्यम शीरिव ॥

साकं यक्ष्म प्रपत श्येनेन किकिदीविना ।

साकं वातस्य ध्राज्या साकं न्नश्य निहाकया ॥

अश्वावतीꣳ सोमवती मूर्जयन्ती मुदोजसम् ।

आवित्सि सर्वा ओषधी रस्मा अरिष्टतातये ॥

याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।

बृहस्पति प्रसूता स्तानो मुञ्चन्त्वꣳ हसः ॥

या ओषधय सोमराज्ञीः प्रविष्टाः पृथिवी मनु ।

तासा त्वम स्युत्तमा प्रणो जीवातवेसुव ॥

अवपतन्तीरवदन् दिव ओषधयः परि ।

यं जीवमश्नवा महै न स रिष्याति पूरुषः ॥

याश्चेदमुप शृण्वन्ति याश्च दूरं परागताः ।

इहसंगत्यता स्सर्वा अस्मै सन्दत्त भेषजम् ॥

मा वो रिषत्खनिता यस्मै चाहं खनामिवः ।

द्विपश्चतुष्प दस्माकꣳ सर्वमस्त्वनातुरम् ॥

ओषधय स्संवदन्ते सोमेन सहराज्ञा ।

यस्मै करोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन् पारयामसि ॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

## ॥ मेधासूक्तम् ॥

मेधादेवी जुषमाणा न आगाद्विश्वाची भद्रा सुमनस्यमाना ।
त्वया जुष्टा जुषमाणा दुरुक्तान् बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ।
त्वया जुष्ट ऋषिर्भवति देवि त्वया ब्रह्माऽऽगतश्रीरुत त्वया ।
त्वया जुष्ट श्चित्रं विन्दते वसु सानो जुषस्व द्रविणो न मेधे ॥
मेधां म इन्द्रो ददातु मेधां देवी सरस्वती ।
मेधां मे अश्विनावुभावाधत्तां पुष्करस्रजा ।
अप्सरासु च या मेधा गन्धर्वेषु च यन्मनः ।
दैवीं मेधा मनुष्यजा सा मां मेधा सुरभि र्जुषताम् ॥
आमां मेधा सुरभिर्विश्वरूपा हिरण्यवर्णा जगती जगम्या ।
ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमाना सा मां मेधा सुप्रतीका जुषन्ताम् ।
मयि मेधां मयि प्रजां मय्यग्निस्तेजो दधातु
मयि मेधां मयि प्रजां मयीन्द्र इन्द्रियं दधातु
मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो भ्राजो दधातु ।
ॐ महादेव्यै च विद्महे ब्रह्मपत्नी च धीमहि । तन्नो वाणी प्रचोदयात् ।
ॐ हंस हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि । तन्नो हंसः प्रचोदयात् ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

# ॥ नीळा सूक्तम् ॥

ओम् ॥

नीळा देवी शरण महं प्रपद्ये ॥

गृणाहि । घृतवती सवित राधिपत्यैः पयस्वती रन्ति-राशानो अस्तु ॥

ध्रुवा दिशां विष्णु पत्न्य घोराऽस्येशाना सहसोया मनोता ॥

बृहस्पति र्मातरिश्वोत वायु स्संधुवाना-वाता अभि नो गृणन्तु ॥

विष्टंभो दिवो धरुणः पृथिव्या अस्येशाना जगतो विष्णु पत्नी ॥

विष्णु पत्न्यैच विद्महे श्री भूसख्यै च धीमहि ।

तन्नो नीळा प्रचोदयात् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

## ॥ ऐकमत्य सूक्तम् ॥

सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वा न्यर्य आ ।
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भार ॥
सं गच्छध्वं सं वादध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासाते ॥
समानो मन्त्रः समीतिः समानी सामानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रामभि मन्त्रये वः समानेना वो हविषा जुहोमि ॥
समानी व आकूतिः समाना हृदायानि वः ।
समान मस्तु वो मनो यथा वः सु-सहासाति ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

oooooooo

# ॥ सरस्वती सूक्तम् ॥

प्र णो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । धीनामवित्र्यवतु ॥

आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा सरस्वती यजतागन्तु यज्ञम् ।

हवं देवी जुजुषाणा घृताची शग्मां नो वाचमुशती शृणोतु ॥

पावीरवी कन्या चित्रायुः सरस्वती वीर पत्नी धियं धात् ।

ग्नाभिर च्छिद्रꣳ शरणꣳ सजोषा दुराधर्षं गृणते शर्म यꣳसत् ॥

इमा जुह्वाना युष्मदा नमोभिः । प्रति स्तोमꣳ सरस्वती जुषस्व ।

तव शर्मन् प्रियतमे दधानाः । उपस्थेयाम शरणं न वृक्षम् ॥

यस्ते स्तेनः शशयो यो मयोभूः । येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि ।

यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः । सरस्वती तमिह धातवेऽकः ॥

सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यः । मा पस्फरीः पयसा मा न आधक् ।

जुषस्व नः सख्या वेश्या च । मा त्वत् क्षेत्राण्यरणानि गन्म ॥

इयꣳ शुष्मेभि र्बिसखा इवारुजत् । सानु गिरीणां तविषे भिरूर्मिभिः ॥

पारावदध्नी मवसे सुवृक्तिभिः । सरस्वती माविवासेम धीतिभिः ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

## ॥ सर्प सूक्तम् ॥

नमो अस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।

ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

येऽदो रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु ।

येषामप्सु सदः कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

या इषवो यातु धानानां ये वा वनस्पतीꣳ रनु ।

ये वाऽ वटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

इदꣳ सर्पेभ्यो हविरस्तु जुष्टम् । आ श्रेषा येषा मनुयन्ति चेतः ।

ये अन्तरिक्षं पृथिवीं क्षियन्ति । ते न स्सर्पासो हव मागमिष्ठाः ।

ये रोचने सूर्य स्यापि सर्पाः । ये दिवं देवी मनु सञ्चरन्ति ।

येषामा श्रेषा अनुयन्ति कामम् । तेभ्य स्सर्पेभ्यो मधुम ज्जुहोमि ॥

निघृष्वै रसमायुतैः ।कालैर् हरित्वमापन्नैः । इन्द्रायाहि सहस्रयुक् ॥

अग्निर्विभ्राष्टि वसनः । वायुश्श्वेत सिकद्रुकः ।

संवथ्सरो विषूवर्णैः । नित्यास्तेऽनुचरास्तव ॥

सुब्रह्मण्योꣳ सुब्रह्मण्योꣳ सुब्रह्मण्योम् ॥

# ॥ स्वस्ति सूक्तं ॥

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावा पृथिवी सुचेतुना ॥
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ॥
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।
देवा अवन्तृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ॥
स्वस्ति मित्रावरुणो स्वस्ति पथ्ये रेवति ।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ॥
स्वस्ति पन्बामनुचरेम सूर्याचन्द्र मसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ॥
स्वस्त्ययनं तार्क्ष्यमरिष्टनेमिं महद्भूतं वायसं देवतानां ।
असुरघ्नमिन्द्रसखं समत्स्य बृहद्यशो नावमिवारुहेम ॥
अंहोमुचमाङगिरसं गयं च स्वस्त्यात्रेयं मनसा च तार्क्ष्यं ।
प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये स्वस्ति संबाधेष्वभयं नो असतु ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

# ॥ देवीसूक्तम् ॥

अहं रुद्रेभिरित्यादि मन्त्रस्य ब्रह्माद्या ऋषयो गायत्र्यादीनि छन्दांसि

आद्या देवी देवता देवीसूक्तजपे विनियोगः ।

अहं रुद्रेभि र्वसुभिश्चराम्यह मादितैरुत विश्व देवैः ।

अहं मित्रा वरुणोभा बिभर्म्यह मिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥ १ ॥

अहं सोममाहनसं विभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम् ।

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते ॥ २ ॥

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ।

तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिष्ठात्रां भूर्या वेशयन्तीम् ॥ ३ ॥

मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम् ।

अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ॥ ४ ॥

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः ।

यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥ ५ ॥

अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ ।

अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश ॥ ६ ॥

अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन् मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे ।

ततो वितिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि ॥ ७ ॥

अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा ।

परो दिवा पर एना पृथिव्यै तावती महिमा सं वभूव ॥ ८ ॥ ॥

oooooooo

## ॥ मन्त्रपुष्पम् ॥

योऽपां पुष्पं वेद । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम् । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।
य एवं वेद । योऽपा मायतनं वेद । आयतनवान् भवति ॥ १ ॥

अग्निर्वा अपा मायतनम् । आयतनवान् भवति ।
योऽग्ने रायतनं वेद । आयतनवान् भवति ।
आपो वा अग्ने रायतनम् । आयतनवान् भवति ।
य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति ॥ २ ॥

वायुर्वा अपा मायतनम् । आयतनवान् भवति ।
यो वायो रायतनं वेद । आयतनवान् भवति ।
आपो वै वायो रायतनम् । आयतनवान् भवति ।
य एवं वेद । योऽपा मायतनं वेद । आयतनवान् भवति ॥ ३ ॥

असौ वै तपन्नपा मायतनम् । आयतनवान् भवति ।
योऽमुष्य तपत आयतनं वेद । आयतनवान् भवति ।
आपो वा अमुष्य तपत आयतनम् । आयतनवान् भवति ।
य एवं वेद । योऽपा मायतनं वेद । आयतनवान् भवति ॥ ४ ॥

चन्द्रमा वा अपा मायतनम् । आयतनवान् भवति ।
यश्चन्द्र मस आयतनं वेद । आयतनवान् भवति ।

आपो वै चन्द्रमस आयतनम्। आयतनवान् भवति।
य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति॥ ५॥

नक्षत्राणि वा अपा मायतनम्। आयतनवान् भवति।
यो नक्षत्राणा मायतनं वेद। आयतनवान् भवति।
आपो वै नक्षत्राणा मायतनम्। आयतनवान् भवति।
य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति॥ ६॥

पर्जन्यो वा अपा मायतनम्। आयतनवान् भवति।
यः पर्जन्य स्यायतनं वेद। आयतनवान् भवति।
आपो वै पर्जन्यस्याऽऽयतनम्। आयतनवान् भवति।
य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति॥ ७॥

संवत्सरो वा अपा मायतनम्। आयतनवान् भवति।
यस्संवत्सर स्यायतनं वेद। आयतनवान् भवति।
आपो वै संवत्सर स्यायतनम्। आयतनवान् भवति।
य एवं वेद। योऽप्सु नावं प्रतिष्ठितां वेद। प्रत्येव तिष्ठति॥ ८॥

राजाधि राजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वै श्रवणाय कुर्महे।
स मे कामा न्काम कामाय मह्यम कामेश्वरो वै श्रवणो दधातु।
कुबेराय वै श्रवणाय महाराजाय नमः॥

# ॥ जयादि होमं ॥

जयादि होमः कर्म समृध्यर्थम् जयादि होमं करिष्ये ।

चित्तश्च स्वाहा - चित्तायेदंनमम । चित्तिश्च स्वाहा - चित्त्या इदंनमम ।

आकूतश्च स्वाहा - आकूतायेदंनमम । आकूतिश्च स्वाहा - आकूत्त्या इदंनमम ।

विज्ञातश्च स्वाहा - विज्ञातायेदंनमम । विज्ञानश्च स्वाहा - विज्ञानायेदंनमम ।

मनश्च स्वाहा – मनस इदंनमम । शक्वरीश्च स्वाहा – शक्वरीभ्य इदंनमम ।

दर्शश्च स्वाहा – दर्शायेदंनमम । पूर्णमासश्च स्वाहा – पूर्णमासायेदंनमम ।

बृहश्च स्वाहा – बृहतइदंनमम । रथन्तरश्च स्वाहा – रथन्तरायेदंनमम ।

प्रजापति र्जया निन्द्राय वृष्णे प्रायच्छ दुग्रः पृतनाज्येष्ठ तस्मै विश्व
स्समनमन्त सर्वास्स उग्र स्सहि हव्यो बभूव स्वाहा – प्रजापतय इदंनमम ।

अग्नि र्भूताना मधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां
पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याᳶ स्वाहा – अग्नय इदंनमम ।

इन्द्रो ज्येष्ठाना मधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां
पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याᳶ स्वाहा – इन्द्रायेदंनमम ।

यमः पृथिव्योऽधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां
पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याᳶ स्वाहा – यमायेदंनमम ।

वायु रन्तरिक्षस्याऽधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां
पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याᳶ स्वाहा – वायव इदंनमम ।

सूर्यो दिवोऽधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां
पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याᳶ स्वाहा – सूर्यायेदंनमम ।

चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा – चन्द्रमस इदंनमम ।

बृहस्पति र्ब्रह्मणोऽधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा – बृहस्पतय इदंनमम ।

मित्रस्सत्याना मधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा – मित्रायेदंनमम ।

वरुणोऽपा मधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा – वरुणायेदंनमम ।

समुद्रः स्रोत्यानामधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा – समुद्रायेदंनमम ।

अन्नꣳ साम्राज्याना मधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा – अन्नायेदंनमम ।

सोम ओषधीना मधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा – सोमायेदंनमम ।

सविता प्रसवाना मधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा – सवित्र इदंनमम ।

रुद्रः पशूना मधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा – रुद्रायेदंनमम ।

( अपउपस्पृश्य )

त्वष्टा रूपाणा मधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां

पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा – त्वष्ट्र इदंनमम ।

विष्णुः पर्वताना मधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां

पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा – विष्णव इदंनमम ।

मरुतो गणाना मधिपति स्समावत्वस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन् क्षत्रऽस्यामा शिष्यस्यां

पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा – मरुद्भ्य इदंनमम ।

पितरः पितामहाः परेऽवरे ततास्त तामहा इहमाऽव तस्मिन् ब्रह्मन्नस्मिन्

क्षत्रऽ स्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मन्नस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा – पितृभ्य

इदंनमम ।

( अपउपस्पृश्य ) ( मन्त्रोक्त देवताभ्य इदंनमम )

ऋताषा डृत धामा ग्नि र्गन्धव तस्यौ षधयोऽप्सरस ऊर्जो

नाम स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु ता इदं ब्रह्म क्षत्रं पान्तु तस्मै स्वाहा

अग्नये गन्धर्वायेदंनमम । ताभ्यः स्वाहा ओषधीभ्योऽफ्सरोभ्य इदंनमम ।

सꣳहितो विश्व सामा सूर्यो गन्धर्वः स्तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुव

नाम स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु ता इदं ब्रह्म क्षत्रं पान्तु तस्मै स्वाहा

सूर्याय गन्धर्वायेदंनमम । ताभ्यः स्वाहा मरीचिभ्योऽफ्सरोभ्य इदंनमम ।

सुषुम्नः सूर्य रश्मि श्चन्द्रमा गन्धर्वः स्तस्य नक्षत्राण्यऽप्सरसो बेकुरयो

नाम स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु ता इदं ब्रह्म क्षत्रं पान्तु तस्मै स्वाहा

चन्द्रमसे गन्धर्वायेदंनमम । ताभ्यः स्वाहा नक्षत्रेभ्योऽफ्सरोभ्य इदंनमम ।

भुज्यु स्सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स्तस्य दक्षिणा अप्सरस स्तवा

नाम स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु ता इदं ब्रह्म क्षत्रं पान्तु तस्मै स्वाहा

यज्ञाय गन्धर्वायेदंनमम ।ताभ्यः स्वाहा दक्षिणाभ्योऽफ्सरोभ्य इदंनमम ।

प्रजापति र्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स्तस्य क्सामानय प्सरसो वह्नय

नाम स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु ता इदं ब्रह्म क्षत्रं पान्तु तस्मै स्वाहा

मनसे  गन्धर्वायेदंनमम। ताभ्यः स्वाहा  ऋक्सामभ्योऽफ्सरोभ्य इदंनमम।

इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वः स्तस्या पोऽप्सरसो मुदा

नाम स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु ता इदं ब्रह्म क्षत्रं पान्तु तस्मै स्वाहा

वाताय  गन्धर्वायेदंनमम। ताभ्यः स्वाहा  अद्भ्योऽफ्सरोभ्य इदंनमम।

भुवनस्य पते यस्य त उपरि गृहा इह च।

सनोरास्वाज्यानिꣳ रायस्पोषꣳ सुवीर्यꣳ संवत्सरीणाꣳ स्वस्तिꣳ स्वाहा

भुवनस्यपत्ये इदंनमम।

परमेष्ठ्यधिपतिर्मृत्युर्गन्धर्वः स्तस्य विश्व मप्सरसो भुव

नाम स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु ता इदं ब्रह्म क्षत्रं पान्तु तस्मै स्वाहा

मृत्यवे गन्धर्वायेदंनमम। ताभ्यः स्वाहा  विश्वस्माऽफ्सरोभ्य इदंनमम।

सुक्षितिस्सभूति र्भद्रकृ त्सुवर्वा न्पर्जन्यो गन्धर्व स्तस्य विद्युतोऽप्सरसो रुचो

नाम स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु ता इदं ब्रह्म क्षत्रं पान्तु तस्मै स्वाहा

पर्जन्याय गन्धर्वायेदंनमम। ताभ्यः स्वाहा  विद्युद्भ्योऽफ्सरोभ्य इदंनमम।

दूरे हेतिरमृडयो मृत्युर्गन्धर्व स्तस्य  प्रजा अप्सरसो भीरुवो

नाम स इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु ता इदं ब्रह्म क्षत्रं पान्तु तस्मै स्वाहा

मृत्यवे गन्धर्वायेदंनमम। ताभ्यः स्वाहा  प्रजाभ्योऽफ्सरोभ्य इदंनमम।

चारुः कृपणकाशी कामो गन्धर्वः स्तस्या धयोऽप्सरस श्शोचयंती

नाम स इदं ब्रह्मक्षत्रं  पातु ता इदं ब्रह्म क्षत्रं पान्तु तस्मै स्वाहा

कामाय गन्धर्वायेदंनमम । ताभ्यः स्वाहा अधिभ्योऽफ्सरोभ्य इदंनमम ।

सनो भुवनस्य पते यस्य त उपरि गृहा इह च ।

उरुब्रह्मणेस्मै क्षत्राय महि शर्म यच्छ स्वाहा भुवनस्यपत्ये ब्रह्मण इदंनमम ।

In a low voice

प्रजापते न त्वदेत-न्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव ।

यत्कामास्ते जुहुम-स्तन्नो अस्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम् ।

प्रजापतय इदंनमम ।

Low voice ends

भू स्वाहा – अग्नय इदंनमम ।

भुव स्वाहा – वायव इदंनमम ।

सुव स्वाहा – सूर्यायेदंनमम ।

यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वान्न्यूनमिहाकरम् ।

अग्निष्टत् स्विष्ट कृतद्विद्वान् स्सर्वꣳ स्विष्टꣳ सुहुतं करोतु स्वाहा ।

अग्नये स्विष्टकृत इदंनमम ।

( परिध्य ञ्जनम् लेपकार्यम् परिधिप्रहरः इतरौ प्रहरन् –

आघार समिधौ प्रहृत्य सꣳ स्रावं जुहोति) स्वाहा ।

वसुभ्यो रुद्रेभ्यः आदित्येभ्यः सꣳ स्रावभागेभ्यः इदंनमम ।

अस्मिन् --------- होमकर्मणि मध्ये स्संभावित मन्त्रलोभादि

सकल दोषस्य प्रायश्चित्तार्थं सर्व प्रायश्चित्तं होष्यामि ।

ॐ भूर्भुवस्सुव स्स्वाहा – प्रजापतय इदंनमम ।

ज्ञाताज्ञात दोष निर्हरणार्थं अनाज्ञातत्रय होमं करिष्ये ।

अनाज्ञातं यदाज्ञातं । यज्ञस्य क्रियते मिथु ।अग्ने तदस्य कल्पय ।

त्वꣳ हिवेत्थ यथा तथꣳ स्वाहा ।अग्नय इदंनमम । पुरुषसम्मितो यज्ञः ।

यज्ञ पुरुषसम्मितः । अग्ने तदस्य कल्पय । त्वꣳ हिवेत्थ यथा तथꣳ स्वाहा ।

अग्नय इदंनमम । यत्पाकत्रा मनसा दीन दक्षान । यज्ञस्य मन्वते मर्तासः ।

अग्निष्टध्दोता क्रतु विद्विजानन्न् । यजिष्टो देवाꣳ ऋतुशो यजाति स्वाहा ।

अग्नय इदंनमम ।

भू स्वाहा – अग्नय इदंनमम ।

भुव स्वाहा – वायव इदंनमम ।

सुव स्वाहा – सूर्यायेदंनमम ।

अस्मिन् --------- होमकर्मणि मध्ये स्संभावित समस्त दोष प्रायश्चित्तार्थं

सर्व प्रायश्चित्तं होष्यामि ।

ॐ भूर्भुवस्सुव स्स्वाहा – प्रजापतय इदंनमम ।

श्री विष्णवे स्वाहा – श्री विष्णवे परमात्मन इदंनमम ।

नमो रुद्राय पशुपतये स्वाहा – रुद्राय पशुपतय इदंनमम ।

( अपउपस्पृश्य )

# ॥ पूर्णाहुति ॥

पूर्णाहुति मुत्तमां जुहोति । सर्वं वै पूर्णाहुतिः । सर्वमेवाप्नोति ।

अथो इयं वै पूर्णाहुतिः । अस्यामेव प्रति तिष्ठति ।

सप्तते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः

सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि ।

सप्त होत्राः सप्त धात्वा यजन्ति

सप्त योनीरा पृणस्वा घृतेन स्वाहा ।

अग्नये सप्तवत इदंनमम ।

अजयस्थालीं दर्वीं च उत्तरतो निधाय –

अपउपस्पृश्य –

प्राणान् आयम्य –

अग्निं परिषिच्य ।

॥ ॐ तत्सत् ॥

# ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

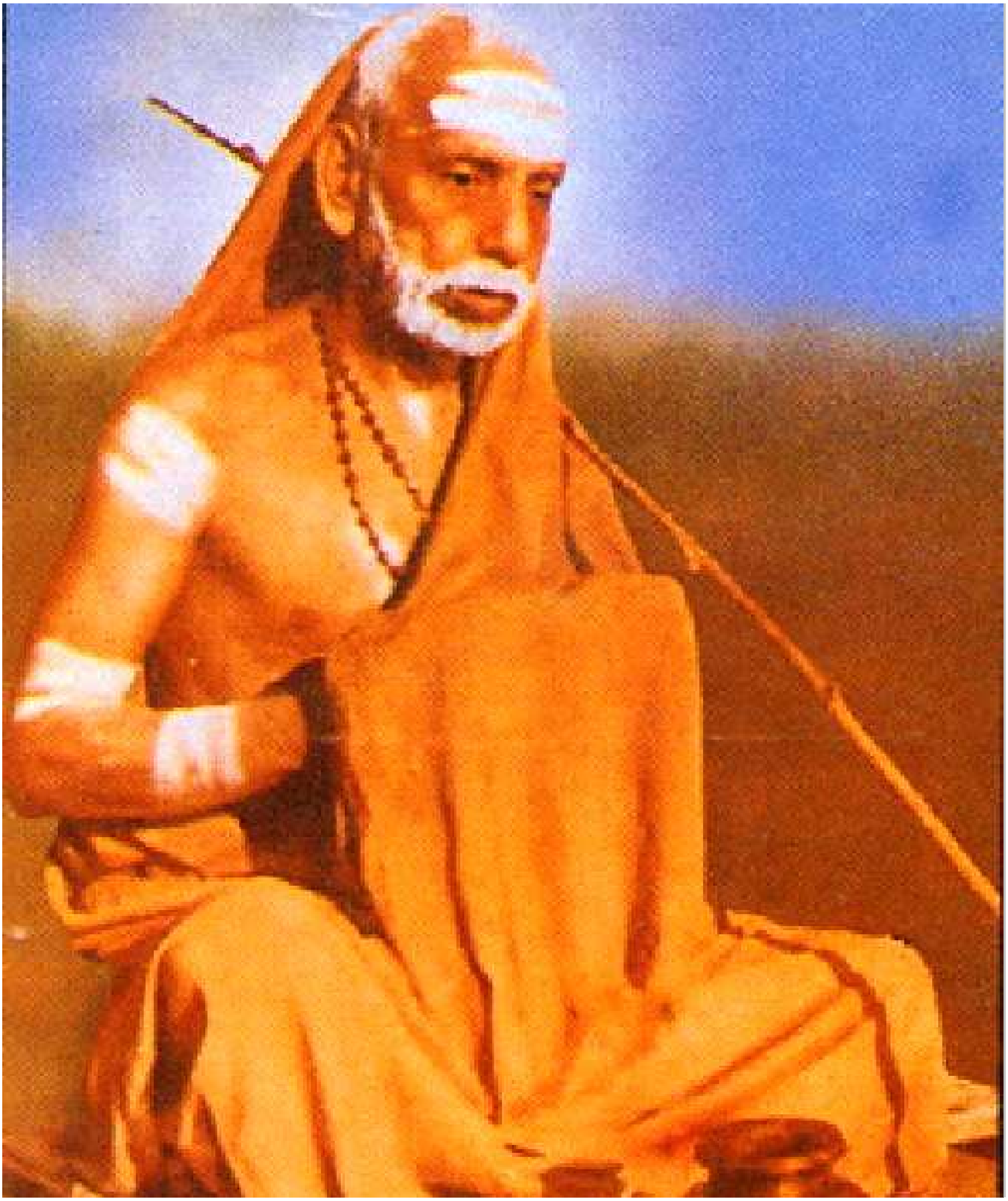

॥ हरिः ओम् ॥

तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु । यद्भद्रम् तन्म आसुव ॥